HEROES
OF
INDIAN HISTORY

BY

J. C. ALLEN

TRANSLATED INTO HINDI

BY

LALA SITA RAM, B. A.

भारतीय इतिहास के नायक

जे सी ऐलेन साहिब की अंगरेजी

पुस्तक का भाषानुवाद

लाला सीताराम, बी. ए. का रचा हुआ

LONGMANS, GREEN, AND CO.,
303, BOWBAZAR STREET, CALCUTTA.
BOMBAY, MADRAS, LONDON, & NEW YORK.
1914

Price 7 Annas.

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

भारतीय इतिहास के नायक।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सिकंदर और राजा पौरव की लड़ाई ।

HEROES

OF

INDIAN HISTORY

BY

J. C. ALLEN.

TRANSLATED INTO HINDI

BY

LALA SITA RAM, B. A.

भारतीय इतिहास के नायक।

जे सी ऐलेन साहिब की अंगरेजी
पुस्तक का भाषानुवाद

लाला सीताराम, बी. ए. का रचा हुआ

LONGMANS, GREEN, AND CO.,
303, *Bowbazar Street, Calcutta.*
BOMBAY, MADRAS, LONDON, & NEW YORK.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

PRINTED BY UPENDRA NATH BHATTACHARYYA
HARE PRESS
46, BECHU CHATTERJEE STREET, CALCUTTA

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय सूची।

	पृष्ठ
भूगोल की एक कहानी	१
भारतवासी	४
रामायण की कथा	८
महाभारत की कथा	१८
लाखा मंडप	२१
पांडवों का व्याह	२२
युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ करना	२५
पांडवों का राज्य हार जाना	२६
युद्ध	२८
युद्ध के पीछे की कथा	३३
बुद्धदेव	३४
महावीर तीर्थङ्कर	३८
भारत पर सिकन्दर की चढ़ाई	३९
भारत का पहिला सम्राट	४३
एक धर्म्मात्मा राजा की कथा	४५
फाहियन की यात्रा	४८
ह्युन चांग की भारत यात्रा	५१
राजा पुलिकेशिन	५४
महाराज राजराज	५५
पारसी लोग भारत में कैसे आये	५८
महमूद गजनवी	६२
राजा जयचन्द का राजसूय यज्ञ	६५
महाराज पृथ्वीराज	६९
महारानी पद्मिनी की कथा	७३
चित्तौर गढ़ का टूटना	७६
बादशाह बलबन	७८
बहमनी वंश का पहिला बादशाह	८२
प्रजापालक फीरोज तुगलक	८६
तैमूर लंग	८८
भारत के पुराने व्यापारी पुर्तगाल और अरब के सौदागर ...	९३

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पृष्ठ

व्यापारियों का सिरताज अलबुकर्क ९६
बीर बाबर १००
हुमायूं १०६
शेरशाह सूर १०९
अकबर ११४
एक बीर रानी १२०
तुलसीदास १२४
जहांगीर १३१
शाहजहां १३५
मरहटा बीर शिवाजी १३८
अबदुल हसन धीर गंभीर बादशाह १४४
दखिन के राज १४८
मुगलराज की अवनति १५१
दिल्ली नगर में मरहटे १५४
व्यापारी कम्पनियां कैसे लड़ने लगीं १५७
क्लाइव का आर्काट पर धावा १६०
बंगाल का शासन अधिकार अंगरेजों ने कैसे पाया ... १६५
वारन हेस्टिंगज़ १६८
मैसूर का सुलतान हैदर अली १७२
टीपू की अंतिम लड़ाई १७४
लार्ड वेलेज़ली, मरहटों की हार १७६
अहल्या बाई १७८
सर टामस मुनरो १८१
मौन्सटअर्ट इलफिन्सटन १८६
लार्ड विलियम वेंटिङ्क १८९
पंजाब का सिंह महाराजा रणजीतसिंह १९१
लार्ड डलहौज़ी १९४
दिल्ली का अंतिम घेरा १९८
लार्ड रिपन २०२
अंगरेज़ी गवरमेंण्ट २०५
कथा समाप्ति २६१

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

चित्र सूची ।

	पृष्ठ
सिकंदर और राजा पौरव की लड़ाई	टाइटिल के आगे
ताड़का वध	६
राम रावण की लड़ाई	१६
पुराना इन्द्रपत (इन्द्रप्रस्थ)	२५
कौरव पांडव की लड़ाई	३१
बुद्धदेव	३६
प्राचीन भारत	४१
बौद्ध भारत	४७
हर्ष देव का राज्य	५२
राजराज का राज्य	५६
ईरान	६१
राजपूतों का देश	६७
तैमूर लंग और आदमियों के शिरों का ढेर	९१
वास्को ड गामा	९५
अलबुकर्क	९८
बाबर की समरकन्द पर चढ़ाई	१०१
बाबर का बाग	१०५
अकबर	११०
पूर्वोत्तर भारत	११५
अकबर की चित्तौर पर चढ़ाई	११६
गोस्वामी तुलसीदास	१२५
शाहजहां आगरे के किले को जा रहा है	१३६

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

	पृष्ठ
आगरे के किले से रौजे का दृश्य	१३७
शिवाजी	१३९
औरंगज़ेब की गोलकुंडे पर चढ़ाई	१४५
बरार का नकशा	१४९
गुरु गोविन्द सिंह	१५२
अंगरेज़ी जहाज़	१५८
लार्ड क्लाइव	१६६
वारन हेस्टिंगज़	१६९
टीपू की अंतिम लड़ाई	१७५
सर टामस मुनरो	१८५
रणजीतसिंह	१९२
सर हेनरी लारेन्स	२००
महारानी विक्टोरिया	२११

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भूगोल की एक कहानी।

जिस देश मे हम लोग रहते हैं वह कहां है ? दुनिया के किस कोने मे बसा है ? आओ दुनिया का नक़शा तो देखें। धरती के कई बड़े बड़े टुकड़े हैं। एक टुकड़े का नाम अफ़्रीका महाद्वीप दूसरे का अमेरिका महाद्वीप तीसरे का आस्ट्रेलिया और चौथे में एशिया और यूरप दोनो मिले हैं। हमारा देश हिन्दुस्थान जिसे हिन्द, भरतखंड और भारतवर्ष या केवल भारत ही कहते हैं, एशिया के दक्षिण में है। एशिया बहुत से लोगों का घर है जो एशिया ही क्या यूरप तक फैले हैं। यह लोग आर्य जाति के हैं। एशिया के रहनेवालों का ब्यौरा जानने के पहिले, हमें अपने ही देश को ध्यान से देखना चाहिये।

एशिया के नक़शे के बीचो बीच में बहुत से पहाड़ देख पड़ते हैं। यह बड़ा ठंढा ऊबड़ खाबड़ देश है, और जो मैदान इसके दक्षिण और पश्चिम में हैं उस से नितान्त भिन्न है। इन मैदानों में भारत और ईरान के देश हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एशिया का मध्यभाग एक ऊंचा पठार है। इस पठार के दक्षिण ऊंचे पहाड़ों की श्रेणी है। इन में से कोई कोई पहाड़ दुनिया भर में सब से ऊंचे हैं। तुम लोगों ने हिमालय पर्वत का नाम तो सुनाही होगा जिसका नाम ही बरफ़ का घर है*। यह मध्य एशिया के पहाड़ों की श्रेणी का सब से दक्षिण का पहाड़ है और इसके दक्षिण हिन्दुस्थान के गरम और हरे भरे मैदान हैं। यह तो तुम जानते ही हो कि पहाड़ों से बादल टक्कर खाकर उन पर पानी बरसाते हैं। यह पानी नदियों में भरकर उनके तट और घाटियों में होकर बहता है और इस रीति से हिमालय पर से ढुलक आता है। छोटी छोटी पहाड़ी नदियों के मिलजाने से बड़ी बड़ी नदियां बन जाती हैं और पहाड़ के तट पर घूमती घामती मैदानों में पहुंचती हैं। इसी भांति सिंधु और गंगा अपनी सहायक नदियों के साथ दक्षिण में बहती हैं, जहां धरती नीची हैं और हिन्दुस्थान के बड़े मैदान पर चलती हुई समुद्र में गिरती हैं।

जहां पानी रहता है वहीं अनाज होता है, वहीं फल लगते है, वहीं पेड़ जमते और बनस्पति लहलहाती है। इसीसे हिन्दुस्थान की धरती में अन्न बहुतायत से होता है। भारत का सब से अधिक उपजाऊ प्रान्त बंगाला है। यहां वह कांप जो नदियां बहालाती हैं खेतों

* हिम = बरफ, आलय = घर।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर बिछ जाती है और मौसिमी हवाओं से हरसाल बहुत सा पानी बरसता है।

हिन्दुस्थान के दक्षिण में धरती फिर ऊंची हो गई है। मैदान मे विन्धयाचल पहाड़ खड़ा है और इस के दक्षिण धरती ऊंची है। इस ऊंची धरती को दक्षिण को पठार कहते हैं। तुम जानते हो हो कि इस पठार की दोनो ओर पश्चिमीय और पूर्वीय घाट हैं। इनमें पश्चिमीय घाट बहुत ऊंचा है। इससे जो नदियां इन घाटों से निकलती हैं वह दक्षिण देश में बहती हुई पूर्व के समुद्र मे गिरती हैं। इन नदियों ने पूर्वीय घाट के बीच बीच राहें बनाल ी हैं और इन्ही राहों से चलकर यह बंगाले की खाड़ी में पहुंच जाती हैं।

यह भी जानना चाहिये कि पूर्वीय घाट समुद्र तट के इतना पास नहीं है जितना पश्चिमीय घाट हैं। नक्शे में उत्तर से दक्षिण तक देखने से यह प्रगट होगा कि यह घाट धीरे धीरे भीतर की ओर सरकते गये हैं और समुद्र तट और इनके बीच मे एक बड़ा मैदान पड़ गया है। इस देश का नाम करनाटिक है और भरपूर पानी रहने के कारण बड़ा उपजाऊ है। दक्षिण पठार का सब से दक्षिण का भाग बहुत ऊंचा है और इसके छोर पर नीलगिरि का ऊंचा पहाड़ है।

पश्चिम में जो घाटों की श्रेणियां हैं उनके उत्तर और अरब समुद्र के बीच में भी एक उपजाऊ टुकड़ा है। इन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उपजाऊ टुकड़ों, हिन्दुस्थान के बड़े मैदान, कार्नाटिक और गुजरात के देशों मे हज़ारों बरस से बड़ी बड़ी जातियां बसी हैं। अब हम प्राचीन काल में इन देशों में जो लोग रहते थे उनका कुछ हाल बतायेंगे।

भारतवासी।

हम लोगों की तरह दुनियां की सब जातियां सभ्य नहीं हैं। तुम यह जानते ही होगे कि अफ्रीका के रहने वाले हब्शी सभ्य नहीं माने जाते। हम लोगों ने लिखने की रीति हज़ारों बरस पहिले निकाली थी। पर वह लोग अब तक लिखना नहीं जानते। भारतवासी भी किसी समय असभ्य थे। जैसे अफ्रीका के बहुतेरे रहनेवाले अब तक बनों मे रहते और बन में जो कुछ होता है उसको खाते हैं ऐसे ही भारत के बनों मे अब भी ऐसे लोग रहते हैं, जो कपड़े नहीं पहिनते और बन में जो कुछ मिलता है खालेते हैं। वह हम लोगों की तरह खेती बारी नही करते और न मेंह से बचने के लिये उनके घर होते हैं। जो मध्यदेश के बनों में रहते है, राजपूताने के भील और नीलगिरि के कुछ पहाड़ी ऐसे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ही लोग हैं। हम इन सब को कोल कहते हैं। यह ही भारत के असली रहनेवाले थे।

एक और भी जाति है जो हमारे इतिहास के आरंभ से पहिले भारत में रहती थी। यह द्रविड़ जाति है। तिलगू, टामिल, कनारी और भारत के दक्षिण के रहनेवाले सब द्रविड़ हैं। यह लोग भारत मे या तो बहुत दिन हुए आये थे या कोलों की तरह यहीं के पुराने बासी हों। हम इसका निर्णय नहीं कर सकते। कोलों की अपेक्षा द्रविड़ बहुत सभ्य थे। यह लोग खेती करते थे और कपड़े पहिनते थे।

हिमालय के उत्तर ऊबड़ खाबड़ देश में ऊंचे पहाड़ और ठण्डी हवाओं का चलना तुमने पढ़ा ही है। फिर भी इस ऊबड़ खाबड़ देश के बीच बीच में ऐसी घाटियां हैं, जिनमें धूप पड़ती है, चिड़ियां चहचहाती हैं और हरे पेड़ों में फूल आते और फल लगते हैं। ऐसे मैदान भी हैं जिनमे जब पानी बरसता है, तब हरी हरी घास उगती है। इस प्रांत में एक और जाति के लोग रहते थे। यह आर्य्यों की जन्मभूमि थी। यहां आर्य लोग घूमते फिरते थे। उनका देश ही ऐसा था जिसमें वह एक ठांव जम कर नहीं रह सकते थे। इनका धन भेड़ और ढोर था; इनके लिये चारे की खोज में वह घाटी घाटी फिरते थे। उनका परिवार दिन दिन बढ़ता जाता था। इनमें से कुछ पश्चिम की ओर चले गये और कुछ दक्षिण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पधारे। इनमें से कुछ पहाड़ पार करके हिन्दुस्थान चले आये। उन लोगों ने अपने पहाड़ो देश और हिन्दुस्थान में आकाश पाताल का अन्तर पाया होगा। फिर क्या अचरज है जो वह पांच नदियों के देश पंजाब में बस गये हों। क्या अचरज है जो वह इस नये देश पर अपना अधिकार जमाने को, यहां के पुराने रहने वालों के साथ लड़े हों।

आर्यलोग बड़े सुन्दर लंबे और गोरे रंग के थे। पहाड़ी देशों में रहने से उनके शरीर बहुत पुष्ट और बली थे। आर्य लोग कोलों और द्रविड़ों से लड़े और उन्हें दक्षिण की ओर भगा दिया। कुछ दिन पीछे और आर्य भारत में आये। इन लोगों को चारे की खोज में इधर उधर फिरने का काम न रहा और पंजाब में बसकर खेती करने लगे। आर्य लोग आटा पीसकर रोटी बनाते, भेड़ बकरी का मांस खाते और सोमलता और दूध मिलाकर एक मादक रस तयार कर के पीते थे। लड़ाई में यह लोग रथों में घोड़े जोतते थे।

आर्य स्त्रियों की घर में बड़ी प्रतिष्ठा थी। वह जहां चाहती थीं, जासकती थीं और घर के काम काज में और बच्चों, के पालने पोसने मे अपना समय बिताती थीं। बाप घर का स्वामी—गृहपति—था और उसके बेटे बहुएं उसके साथ रहती थीं। अपने घर के आस पास की धरती में सब मिलकर खेती करते और अनाज बांट लेते थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुछ दिन बीते आर्यों की संख्या बहुत बढ़ गई। द्रविड़ों ने उनसे हार मान ली और वह दक्षिण में चले गये जहां उन्होंने बड़े बड़े सभ्य राज्य स्थापित कर लिये। कुछ कोल और द्रविड़ इसी देश में रहगये और उनकी शूद्र जाति बन गई। जब आर्य लोग भारत मे पहिले पहिले आये थे, तब इनमें जाति पांति का भेद न था। यहां बस जाने पर जाति की रीति निकली। जब आर्यों की संख्या बढ़ी तब इनकी जातियां बन गईं। पहिले चारही वर्ण थे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

धीरे धीरे आर्य लोग पूर्व की ओर बढ़े और वहां एक बड़ा राज्य स्थापन किया। यहां से बंगाले को गये।

आर्यलोग लिखना पढ़ना जानते थे और कविता करते थे। आर्यों ने हम लोगों के लिये मंत्रों का एक बड़ा संग्रह छोड़ा है जिसका नाम ऋग्वेद है। इन्हीं मंत्रों से हम इतने दिन पहिले का यह सब ब्योरा जानते हैं। जब आर्यों ने भारत में राज्य स्थापन कर लिये तो आपस मे लड़ने लगे। दो राजाओं के बीच एक बड़ी लड़ाई की कथा एक संस्कृत ग्रन्थ में लिखी है, जिसका नाम महाभारत है और जिसे आर्यों ने सैकड़ों बरस हुए रचा था। एक और कथा—रामायण—भी हमको मिलती है।

जो आर्य पश्चिम की ओर चले गये वह यूरप में फैले। कुछ ईरान मे रहगये कुछ अरब देश में जा बसे। यूरप

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के वासी अधिकांश उन्हीं आर्यों के सन्तान हैं जो पश्चिम की ओर गये थे और घूमते फिरते यूरप मे ठाँवँ ठाँवँ बस गये थे।

रामायण की कथा।

सूबे अवध के फैज़ाबाद के ज़िले में आजकल अयोध्या एक छोटी सी नगरी सरयू नदी के दक्षिण तट पर बसी है। प्राचीन काल में यह कोशल देश का प्रसिद्ध नगर था। यहां के रहने वाले सब धर्मात्मा, धन संपति से भरे पुरे और प्रसन्न थे और यहां के ब्राह्मण बड़े विद्वान और क्षत्रिय बड़े वीर थे। इस देश में महाराज दशरथ राज करते थे। उनको ईश्वर ने संसार का सब सुख दिया था, पर उनके कोई सन्तान न थी। राजा ने अपने कुल के पूज्य बड़े बड़े ब्राह्मणों को बुलाकर पूछा कि कौन सा ऐसा काम किया जाय जिस से देवता प्रसन्न हों और मुझे सन्तान मिले। उन्होंने राजा से कहा कि पुत्रेष्टि यज्ञ करना चाहिये। इस यज्ञ के लिये ऋष्यशृङ्ग बुलाये गये और बहुत सी गायें और सोना चांदी ब्राह्मणों को दान में दियागया। कुछ दिन पीछे महाराज दशरथ के चार पुत्र हुए। इनमें बड़ी रानी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कौशल्या के गर्भ से श्रीरामचन्द्र जी का जन्म हुआ और छोटी रानी कैकेयी से जिन्हें महाराज दशरथ सब से अधिक प्यार करते थे, भरत हुए। तीसरी रानी सुमित्रा से भी दो लड़के लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे। उस समय भारत के भिन्न भिन्न भागों में बहुत से दुष्ट राक्षस रहते थे। यह वनों में फिरा करते थे, मनुष्य मार कर खा जाते थे और वनवासी तपस्वियों की तपस्या में बड़ा विघ्न डालते थे। जब श्रीरामचन्द्र जी सोलह बरस के हुए तो उन्हें ऋषि विश्वामित्र राक्षसों को मारने के लिये

महाराज दशरथ से मांग ले गये। लक्ष्मण जी भी उनके साथ गये। राम लक्ष्मण जब विश्वामित्र के आश्रम में पहुंचे, तो पहिले ताड़का नाम राक्षसी उन पर झपटी और बवंडल उठाकर दोनों पर पत्थर बरसाने लगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर श्रीरामचन्द्र जी ने अपने बाणों से पत्थरों को बीच ही में रोक दिया। पीछे राम और लक्ष्मण ने उसकी नाक कान और हाथ काट लिये। उस मायाविनी ने अपना रूप बदल डाला, पर श्रीरामचन्द्र जी ने उसे पहिचान लिया और अपने बाणों से उसके प्राण हर लिये। इस रीति से देश को उस राक्षसी से छुटकारा मिला। इसके पीछे दोनो भाइयों ने अनेक राक्षस मारे। फिर विश्वामित्र के साथ आगे बढ़े। उत्साह से तपस्वियों के यहां ठहरते और उनसे अतिथि सत्कार पाते कुछ दिन में मिथिला पहुंच गये। मिथिला के राजा जनक को एक परम सुन्दरी कन्या श्रीसीताजी थीं। राजा जनक ने यह पण किया था कि सीता का ब्याह उसीके साथ होगा. जो महादेव का धनुष तोड़ देगा। अनेक राजाओं ने उसके उठाने का यत्न किया पर वह धनुष किसी से उठा तक नहीं। जब श्रीरामचन्द्र मिथिला पहुंचे तो विश्वामित्र ने जनक से कहा कि यह कोशलराज महाराज दशरथ के जेष्ठ पुत्र हैं। यह इस धनुष को तोड़ेंगे। धनुष बहुत बड़ा था। आठ पहियों की गाड़ी में रखकर उसे मनुष्य खींच लाये। राक्षसविजयी श्रीरामचन्द्र जी ने धनुष को सहज ही उठा कर तोड़ डाला।

यह समाचार पाते ही महाराज दशरथ भरत और शत्रुघ्न को साथ लिये मिथिला पंहुच गये। यहा धूमधाम से चारों भाइयों का विवाह हुआ और महाराज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दशरथ अपने बेटों और बहुओं के साथ अयोध्या को लौट आये। उनके आने पर पुरवासियों ने बड़ा आनन्द मनाया।

बहुत दिन सुख से बीते। महाराज दशरथ बूढ़े हो चले। तब उन्होंने यह बिचार किया कि राजकाज में कुछ सहायता पाने के लिये श्रीरामचन्द्र जी को युवराज बनादें। यह सुनकर भरत की माता महारानी कैकेयी को बड़ा दुःख हुआ। उनकी यह इच्छा हुई कि राज्य मेरे बेटे को मिले।

एक समय महाराज दशरथ बड़े संकट में पड़ गये थे। महारानी कैकेयी ने उस संकट में सहायता करके उनके प्राण बचाये थे। इस पर महाराज दशरथ ने प्रसन्न होकर उन्हें दो बर दिये थे और कहा था कि दो बर जब जी चाहे और जो जो चाहे मांग लेना।

पहिले तो जब अयोध्या के लोगों ने सुना कि श्रीरामचन्द्र जी युवराज बनाये जायंगे तो बहुत प्रसन्न हुए। श्रीरामचन्द्र जी सब के प्रिय थे ; उनका नीलकमल सा शरीर, उनकी रक्तनील बड़ी बड़ी आंखे, उनकी लंबी भुजाये और उनकी मत्त गज की चाल, सब का मन हर लेती थीं। वह सत्यवादी थे, बड़े वीर धनुर्धारी थे, परम बिनीत और जितेन्द्रिय थे और ब्राह्मणो का बड़ा आदर सत्कार करते थे। जब लोगों ने सुना कि महाराज दशरथ ने कैकेयी के कहने से भरत को राज्य देदिया, तो उनको बड़ा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दु:ख हुआ। विशेष कर जब उन्होंने यह जाना कि उसी रानी के आग्रह से महाराज दशरथ ने वीर श्रीराम को चौदह बरस का वनवास देदिया तो सब शोकसमुद्र में डूब गये।

पर यह दोनों समाचार सच्चे थे। वृद्ध राजा वचन दे चुके थे और कैकेयी ने भी बड़ा फैल किया। श्रीरामचन्द्र जी ने अपने पिता की आज्ञा मानना अपना परम धर्म जाना और प्रसन्न चित्त से वह वन जाने को तय्यार हो गये। उनकी प्रिया और पतिव्रता स्त्री सीताजी ने भी अपने पति का साथ न छोड़ा और उनके भाई लक्ष्मण भी उनके साथ हो लिये। तीनों ने मुनियों की भांति वल्कल धारण कर लिया और प्रयागराज की ओर चले गये।

उनके चले जाने पर महाराज दशरथ ने बड़ा सोच किया और उसी सोच में मर गये। राजमन्त्रियों ने, तब भरत जी को, जो उस समय अपनी नानिहाल में थे बुलाया और उनसे राजसिंहासन पर बैठने को कहा। भरत ने जब यह सुना कि श्रीरामचन्द्र जी वन को चले गये, तब वह दुखी होकर कहने लगे कि राज्य के अधिकारी मेरे बड़े भाई थे; राज्य उन्हीं का है, मैं राजा नहीं हो सकता। जब तक वह वन से लौटकर न आयेंगे तब तक मैं थाती की तरह उनका राज सम्हालूंगा। इसके पीछे कुमार भरत जी अपने बड़े भाई की खोज में चले और अपने साथ राजमंत्री, घोड़े, हाथी, रथ और सैकड़ों अयोध्यावासी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और राजतिलक की सामग्री लेते गये। उनका अभिप्राय यह था कि श्रीरामचन्द्र जी जो स्वीकार करेंगे, तो बन ही में उनका राजतिलक कर दिया जायगा।

कई दिन चलकर भरत जी को श्रीरामचन्द्रजी चित्र-कूट पहाड़ पर तपस्वियों की तरह वल्कल पहिने जटा बांधे पर्णकुटी में मिले। उनके साथ उसी भेस में उनके भाई लक्ष्मण और उनकी स्त्री सीता जी थीं।

श्रीरामचन्द्र जी को पिता के देहान्त का दु:खदायी संवाद सुनकर मूर्च्छा आगई। फिर भरत ने उनसे कहा कि आप अयोध्या लौट कर सिंहासन पर बिराजिये। पर श्रीरामचन्द्र जी ने कहा कि मै पिता का वचन न टालूंगा। भरत लाचार होकर लौट आये और श्रीराम-चन्द्रजी चित्रकूट से दक्षिण की ओर दण्डक वन को चले गये।

कई बरस तक श्रीरामचन्द्रजी घने बनों में फिरते रहे। यहां उनको राक्षसों के साथ अनेक लड़ाइयां लड़नी पड़ीं और एक बार तो एक राक्षस सीताजी को पकड़ ही ले गया था। वन में कितने ही दु:ख पड़े, खाने पीने की असुबिधा रही, बैठने सोने को कैसीही बुरी जगह मिली पर सती सीता जी अपने पति के साथ सदा प्रसन्न रहीं और उनकी सेवा करके बनवास का दु:ख भुलाने का प्रयत्न करती थी। दंडक वन में शूर्पणखा नाम की एक राक्षसी ने सीता जी को मारना चाहा था। सीताजी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बच गई और लक्ष्मणजी ने शूर्पणखा की नाक काट ली। इसी वन में शूर्पणखा का भाई खर राक्षसों का सरदार रहता था। उसने दोनों भाइयों से बदला लेने के लिये चौदह हज़ार राक्षस इकट्ठे किये। इन लोगों ने पाश बरछों और गदाओं से श्रीरामचन्द्रजी को घेर लिया। श्रीरामचन्द्रजी ने अकेले इनका सामना किया और इतने वाण बरसाये कि सूर्य छिप गया। फिर सुवर्णपंखयुत वाण और अर्द्धचन्द्र के आकार के अस्त्र चलाकर श्रीराम ने राक्षस सेना का संहार कर दिया; पीछे एक वाण से खर को भी मार डाला।

शूर्पणखा राक्षसी का एक भाई लंका का राजा रावण भी था। शूर्पणखा ने खर के मरने का समाचार रावण से कहा। इस पर रावण ने प्रतिज्ञा की कि हम राम को मारेंगे। शूर्पणखा ने सीताजी की सुन्दरताई भी रावण के आगे बखानी। उस पर रावण ने विचार किया कि श्रीरामचन्द्रजी से सीता को हर लाऊं। इस कार्य को सिद्ध करने के लिये पहिले उसने मारीच नाम राक्षस को सुनहला हरिण बनाकर श्रीरामचन्द्रजी की कुटी के पास भेज दिया। सीताजी को यह हरिण बहुत अच्छा लगा और उन्हीं के कहने से श्रीरामचन्द्रजी सीताजी की रखवाली के लिये लक्ष्मणजी को छोड़ कर हरिण के पीछे दौड़े। जब श्रीरामचन्द्र को बड़ी देर लगी; तो सीताजी ने उनकी खोज में लक्ष्मणजी को भी भेज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिया और दोनों को राह देखती हुई अकेली कुटी में बैठी थीं। इतने मे रावण उनके पास योगी के भेस मे आया। पहिले तो भीख मांगी पीछे श्रीसीताजी को वह फुसलाने लगा। जब उन्होंने न माना, तो उनको बरजोरी से पकड़ ले गया और अपने खच्चरों से जुते रथ पर, बैठाकर आकाश में ले उड़ा और लंका में ले जाकर उनको बंदिनी करके रक्खा।

रामचन्द्रजी कुटी को लौट, तो सीता को न देख कर बड़े दुखी हुए। कई दिन तक दुःख में इधर उधर फिरते रहे पर सीताजी क्या हुई? कहां गई? इसका कुछ भी पता न लगा।

अंत को श्रीरामचन्द्रजी को वानरों* के राजा के प्रधान सचिव हनुमान से भेंट हुई और हनुमान जी ने लंका जाकर सीताजी का पता लगाया। वानरों के राजा सुग्रीव ने भी श्रीरामचन्द्रजी की सहायता के लिये लाखों वानरों की सेना इकट्ठी की और सब लोग लंका को चले। समुद्र के ऊपर पत्थरों का पुल बांधा गया और वानर सेना लंका टापू में पहुच गई।

वानरसेना पत्थर और पेड़ की डालियों से लड़ती थी। राक्षसों के हाथ में तलवारें और बरछियां थी। दोनों में घोर युद्ध हुआ। अन्त को श्रीरामचन्द्रजी ने

---

* वानर उस समय की एक विशेष जंगली मनुष्य जाति थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ब्रह्मास्त्र से रावण का सिर काट दिया और बड़े आनंद के साथ सती सीता अपने पति के पास आगईं।

चौदह बरस बनवास के दिन भी पूरे हो गये और श्रीरामचन्द्र जो सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या को लौट आये। यहां उदार भरतजी ने उन्हें राज सौंप दिया।

पर सीता के दुःखों का अंत न हुआ। जान तो ऐसा पड़ता था कि अब अयोध्या में रहकर उनको पति के साथ सुख ही सुख भोगना रह गया है पर कोई कोई नगरवासी उनके राक्षस के घर में रहने के कारण उनका फिर आना और श्रीरामचन्द्र जी का उनको फिर ग्रहण करना अच्छा न समझते थे। राम को यह बातें बहुत बुरी लगीं और अपनी प्रजा को प्रसन्न करने के लिये सीताजी को फिर वन में भेज दिया। सती सीता एक बार वनवास को दुःख सह चुकी थीं फिर वन में पहुंच गईं। घर छोड़ते उनको बड़ा दुःख हुआ पर अपने लिये उन्हें कोई चिन्ता न थी। दुःख इसी बात का था कि महाराज रामचन्द्रजी ने उनके सतीत्व का विश्वास न किया। इसी दुःख के कारण जब श्रीरामचन्द्र जी से अश्वमेध यज्ञ के अंत में वाल्मीकिजी ने कहा कि सीताजी में कोई दोष नहीं, आप इन्हें फिर अपने घर में बुला लीजिये और श्रीरामचन्द्रजी ने कहा कि जो सीताजी सभा में यह शपथ करें कि हम सती रही हैं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और सब को विश्वास हो जाय तो हम फिर उन्हें ले ले; तब उस सती ने यही शपथ की कि जो हम सती रही हैं तो धरती माता हमें अपनी गोद में लेलें और इतना कह कर धरती में समा गईं।

महाभारत की कथा।

हज़ारों बरस पहिले उत्तर भारत में चन्द्रवंशी राजा राज करते थे। इनमें एक का नाम शान्तनु था। इनका विवाह परम सुन्दरी गंगादेवी के साथ हो चुका था। गंगा का पुत्र देवव्रत था जो पीछे से महावीर भीष्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कुछ दिन पीछे राजा शान्तनु मर गये, उनका लड़का जो उनके पीछे राजा हुआ बहुत दिन न जिया और जब वह मरा तो कोई राज्य का अधिकारी न रहा। ऐसी कहावत है कि व्यासमुनि के प्रसाद से राजा की दोनों विधवा रानियों में एक एक को एक पुत्र हुआ। इनमे एक धृतराष्ट्र जन्म का अन्धा था और दूसरा पांडु बहुत ही गोरा था।

पांडु के लड़कपन में उनके चचा भीष्म ने राज संभाला। जब पांडु सयाने हुए और उनका ब्याह हो गया, तो वह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आप राजकाज करने लगे। पांडु के दो रानियां थीं। एक से उनके तीन लड़के हुए। वह तीनों देवताओं के पुत्र माने जाते थे; युधिष्ठिर धर्म का बेटा, भीम वायु का और अर्जुन इन्द्र का बेटा कहा जाता था। पांडु की दूसरी स्त्री के भी ऐसे ही दो लड़के थे—नकुल और सहदेव। यह ही महाभारत के वीर नायक पांच पांडव कहलाते हैं।

राजा पांडु ने अपने लड़कों के जन्म से पहिले अपने भाई धृतराष्ट्र को राज दे दिया था। बहुत दिन न बीते थे, जब पांडु मर गये और उनके लड़के राजधानी हस्तिनापुर पहुंचे। यहां राजा धृतराष्ट्र ने उनके साथ बड़ी मेहरबानी का बर्त्ताव किया और पांचों पांडव अपने चचेरे भाइयों, राजा धृतराष्ट्र को सौ बेटों, के साथ जो कौरव कहलाते थे हस्तिनापुर में रहने लगे। पांडव भी अपने चचा के लड़कों के साथ पले और द्रोणाचार्य्य एक ब्राह्मण पंडित ने सब को अस्त्रविद्या सिखाई।

कुछ ही दिनों में सब राजकुमार जब अस्त्र शस्त्र चलाने में बड़े निपुण हो गये, तो द्रोणाचार्य्य के कहने से उनकी अस्त्र परीक्षा हुई। कुमारों के विक्रम दिखाने का जो दिन निश्चय हुआ, उस दिन राजा धृतराष्ट्र अपने मंत्रियो और दरबारियो के साथ मोतियों की झालर और बैदूर्यमणि से सजे सोने के दर्शनभवन मे जाकर बैठे और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र चार वर्णों के लोग दूर दूर से कुमारों की योग्यता देखने के लिये अखाड़े के चारों ओर इकट्ठे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुए। पहिले तो तीर और तलवार चलाने में कुमारों ने अपनी निपुणता दिखाई, पीछे कौरव कुमार दुर्योधन और महाबली पांडव भीम गदा लेकर अखाड़े में उतरे। दोनो वीर ऐसे गरजते थे, जैसे दो मत्त हाथी गरजैं। लड़ाई में दोनो को क्रोध आ गया पर द्रोणाचार्य ने बीचबिचाव कर दिया। फिर सोने का कवच पहिने हुये अर्जुन अपना धनुष लेकर अखाड़े में उतरा। अस्त्र विद्या में उसकी निपुणता देखकर सब को बड़ा आश्चर्य हुआ। इसके अनंतर एक दूसरा वीर अखाड़े में उतरा। यह सूर्य का पुत्र कर्ण था। कर्ण की माता भी कुन्ती ही थी, पर वह कुन्ती के कन्यापने ही में जन्मा था। चमचमाता कवच पहिने लंबे और सुन्दर कर्ण ने अखाड़े में अर्जुन को ललकारा। पर कर्ण न राजा था न राजकुमार था। इससे अर्जुन के साथ द्वन्द्वयुद्ध न कर सकता था। दुर्योधन ने इस दोष को मिटाने के लिये कर्ण को अंगदेश का राजा बना दिया। दुर्योधन अर्जुन से जलता था और उसे यह आशा थी कि कर्ण उसे हरा देगा। परन्तु दिन अस्त हो गया और सब लोग अपने अपने घर लौट गये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लाखा मण्डप ।

एक बरस पीछे धृतराष्ट्र ने अपना बुढ़ापा सिर पर आता जान पांडवकुमार युधिष्ठिर को युवराज बना दिया। यह बात कौरवों को बहुत बुरी लगी। वह पांडवो के मारने का उपाय सोचने लगे। हस्तिनापुर से थोड़ी दूर बारणावत एक नगर था। इस स्थान की पांडवों से बड़ी प्रशंसा की गई और राजा ने उनसे कहा कि तुम लोग कुछ दिन बारणावत में जाकर विहार करो। पांडव हस्तिनापुर से चले तो सब को बड़ा दुःख हुआ क्योंकि सब जानते थे कि उनका बुरा चेता जारहा है।

बारणावत में दुर्योधन ने पांडवों के रहने के लिये लाख का घर बनवाया था। घर के बांस और खर भी तेल और चर्बी में भीगे थे जिससे चिनगारी लगते ही भस्म हो जायं।

इस घर में पांडव और उनकी मा टिकाई गई। पर यहां आने से पहिले हस्तिनापुर ही में उनके चचा विदुर ने उनको चेता दिया था कि उनको मारने के लिये यह उपाय किया गया है। जब उन्होंने घर को देखा तब उसमें से निकलने के लिये भीतर ही भीतर एक सुरंग खोदी। एक दिन कुन्ती ने बहुत से ब्राह्मण खिलाये। एक स्त्री अपने पांच बेटों के साथ बिना बुलाये वहां आई। सब लोग खापीकर चले गये, पर वह स्त्री

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और उसके लड़के मद पीकर बेसुध हो रहे थे वहीं सोरहे। रात को आंधी आई और भीम ने घर मे आग लगादी। सवेरे घर राख होगया था और इस राख में एक स्त्री और पांच पुरुषों की हड्डियां मिलीं। यही उस स्त्री और उसके बच्चों की हड्डियां थीं। दुर्योधन और उसके भाई समझे कि यह हड्डियां पांडवों और उनकी मा कुन्ती की हैं, और अपने पट्टीदारों को मरा जान बहुत प्रसन्न हुए। पर पांडव जीते जागते थे। यह सब सुरंग से निकल कर भाग गये थे और ब्राह्मणो के भेस में बन मे जाकर छिप रहे थे।

पाण्डवों का ब्याह।

पाण्डव बहुत दिनों तक बनों में मारे मारे फिरे। चारों ओर से उनको डर लगा रहता था। भीम ने राक्षसों से कई लड़ाइयां लड़ीं नहीं तो राक्षस उसकी मा और उसके भाइयों को खाजाते। भीम अपनी बली भुजाओं से लता तोड़ता और बन में सब के लिये राह बनाता चलता था। यहां उनसे महाभारत के रचने वाले व्यासमुनि मिले। व्यास ने उनको बतलाया कि पांचाल राज की परमसुन्दरी कन्या द्रौपदी का स्वयंवर होनेवाला है। द्रौपदी सांवली थी उसकी आंखे काली और कमल की तरह खिली थीं। उसका चेहरा सांवला और उसके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बाल काले और घूंघरवाले थे। पांडव कुमार ब्राह्मण का भेस धर स्वयंवर देखने चले। स्वयंवर का सभामंडप पांचाल राजधानी के ईशान कोण में अच्छी समभूमि पर रचा गया था और उसके चारों ओर सुनहरे ऊंचे भवन खड़े थे। इन भवनों मे वह राजा लोग ठहरे थे जो राजकुमारी के साथ विवाह की अकाङ्क्षा से पांचाल आये थे। इस सभामण्डप के एक सिरे पर एक ऊंचा खंभा गड़ा था। इस पर एक सुनहरी मछली टांगी गई थी। इसके नीचे एक चक्र घूम रहा था। स्वयंवर की प्रतिज्ञा यह थी कि जो कोई चक्र के भीतर से मछली को तीर मार दे उसीके साथ द्रौपदी व्याह दी जायगी। सोलहवे दिन द्रौपदी अपने भाई के साथ सभा में आई। उसके हाथ में अक्षत और अर्घ्य से भरा हुआ सोने का कटोरा था और उसकी सहेली हाथ में माला लिये हुए थी। राजकुमार अपने अपने बल का परिचय देने लगे और धनुष उठा के अखाड़े मे उतरे। पर किसी से धनुष का रोदा भी न चढ़ा। सब के पीछे चमचमाता कवच पहिने कर्ण आया। उसने सहजही धनुष चढ़ा दिया और तीर चलाने ही को था कि द्रौपदी बोल उठी कि "मैं सूत से व्याह न करूंगी।" कर्ण सूर्य का पुत्र था पर सूत (सारथी) के घर में पला था। कर्ण ने धनुष उठाकर फेंक दिया। सब क्षत्रिय राजा और राज-कुमार हार गये, तो ब्राह्मण के भेस में अर्जुन आगे बढ़ा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसने कर्ण की तरह रोदा चढ़ाया और मछली की आंख में चक्र के भीतर से बाण मार दिया।

जो क्षत्रिय राजा रोदा तक न चढ़ा सके थे वह अर्जुन का यह पराक्रम देखकर जल गये। विशेष कर जब वह ब्राह्मण के भेस में था। वह कब चाहते थे कि क्षत्रिय राजकुमारी का व्याह एक ब्राह्मण के साथ हो। जब राजा द्रुपद ने लक्ष्यभेद करने वाले ब्राह्मण को कन्यादान करने की इच्छा प्रगट की तो सब राजा लोगों को बड़ा क्रोध हुआ और वह द्रुपद को मारने दौड़े। पर अर्जुन ने अपने भाई भीम की सहायता से, जो वृक्ष उखाड़ कर लड़ा था, राजा द्रुपद को बचा लिया और द्रौपदी को साथ लेकर वह दोनो चल दिये।

इसके पीछे भीम और अर्जुन द्रौपदी को लेकर कुम्हार के घर में जहां यह लोग ठहरे थे, जाकर कुन्ती से बोले—"मा! आज यह भिक्षा मिली है।" कुंती कुटी के भीतर थी, विना कुछ देखे बोल उठी—"तुम सब बांट कर भोगो"। जब उसने कृष्णा को देखा, तो कहने लगी, "मैंने कैसी अनुचित बात कही है।" पर द्रौपदी के भाग्य मे पांच भाइयों की स्त्री होना बदा था। यद्यपि न वह चाहती थी और न उसके पिता को यह अच्छा लगता था कि द्रौपदी का पांचो के साथ विवाह हो, पर व्यास जी ने पहिले ही सब को बता रक्खा था कि द्रौपदी के पांच पति होंगे और इसीलिये फिर किसी ने मौन भेष

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

न किया। सो द्रौपदी का एक एक भाई के साथ एक एक रात को पांच रात तक व्याह हुआ। व्याह में बड़ा यौतुक दिया गया। भेद खुल जाने पर द्रौपदी अपने पतियों के साथ इन्द्रप्रस्थ में जा कर रहने लगी।

युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ करना।

इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ करने की इच्छा की, जिससे वह भूमण्डल के सब राजाओं के राजा मान लिये जायं पर यह बात हो न सकती थी क्योंकि मगध देश का राजा जरासन्ध बड़ा प्रतापी था। उसने अस्सी राजा बंदी कर लिये थे और मथुरा तक उसके

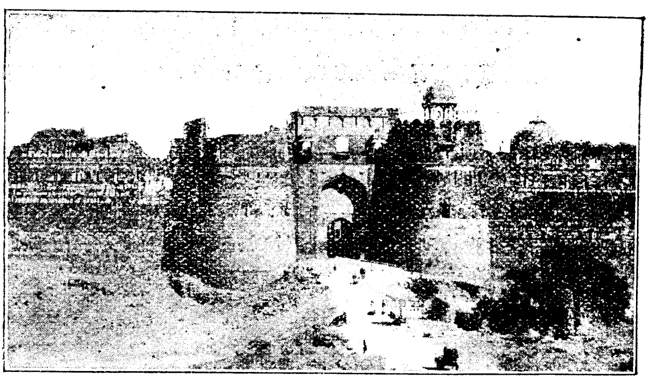

शासन मे था। इसी अवसर पर पाण्डवों के नातेदार श्रीकृष्ण जी महाराज पांडवों के साथ इन्द्रप्रस्थ में ठहरे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुए थे। उनकी सहायता करने को श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुन और भीम को साथ ले ब्राह्मणों का रूप धरे मगध को चले। जब वह मगध की राजधानी पहुंच गये तो उन्होंने जरासन्ध से कहा कि हम तुम्हारा वध करने आये हैं। तुम अपने बंदी राजाओं को सता कर रुद्रदेव के नाम से बलि चढ़ाना चाहते हो, सो तुम हमारे साथ युद्ध करो। वीर और निर्भय मगधराज ने युद्ध करना स्वीकार कर लिया और भीम के साथ द्वन्द्व युद्ध ठन गया।

इस युद्ध को देखने के लिये सारे पुरवासी इकट्ठे हुए। किसी वीर के हाथ में कोई हथियार न था। तेरह दिन तक लड़ाई होती रही। दोनों में से किसी ने न अन्न खाया न विश्राम किया। अन्त को भीम ने वीर जरासन्ध की पीठ अपने घुटने से तोड़ डाली।

अब राजसूय यज्ञ में कोई विघ्न न रहा और राजा युधिष्ठिर ने भूमण्डल के राजाओं से कर लेकर अपना भंडार बढ़ाने के लिये अपने चारों भाइयों को सेना देकर भेज दिया। सब राजा इन्द्रप्रस्थ में आये और बड़े धूम धाम से यज्ञ किया गया।

पांडवों का राज्य हार जाना।

पांडवों की बढ़ती देखकर कौरव कुमार अपने मन में बहुत कुढ़े और अपने पट्टीदारों का सर्वनाश करने का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वे उपाय सोचने लगे। इन लोगों ने कोस भर लंबा चौड़ा बिलूर का सुनहर, सभामंडप बनवाया इसमें एक हज़ार खंभे और सौ फाटक थे। जब मंडप बन गया तब युधिष्ठिर चौसर खेलने को बुलाये गये। युधिष्ठिर को जुए से घृणा थी, पर जब उनसे कहा गया कि आप चौसर खेलने को बुलाये गये हैं, तब वह बोले कि कपट चौसर बड़ा पाप है। न इसमे क्षत्रियधर्म देख पड़ता है और न इसमें कोई नीति है। पर युधिष्ठिर क्षत्रिय थे, बोले मेरा यह धर्म है और मैंने यह व्रत कर लिया है कि बुलाये जाने पर न लौटूंगा। विधाता बलवान है मैं भी दैव के बस मे हूं। अब यह बतलाओ कि मेरे साथ जुआ कौन खेलेगा। दुर्योधन ने कहा शकुनि खेलेंगे। इस सभा में युधिष्ठिर बाजी पर बाजी और दांव पर दांव हारते गये। रुपया रत्न हाथी दास सब हारते ही जाते थे। जब कुछ न रहा तो चारो भाइयों को दाव पर रख दिया। वह भी हार गये फिर अपने को और अन्त को द्रौपदी को भी हार बैठे। खेल समाप्त हुआ। कौरव द्रौपदी को सभा में खींच लाये और उन्होंने बीच सभा मे उसका अपमान किया। भीम मारे क्रोध के अपने दांत पीसता था और कहता था कि मैं दुर्योधन की जांघ तोड़ डालूंगा। पर इस समय तो कौरवों की जीत हो रही। इधर तो सभा में यह सब हो रहा था और उधर कुरुराज के महल में गीदड़ बोलने लगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस रीति से पांडव फिर धनहीन हो गये और अपनी माता को एक अपने हितू के पास छोड़, द्रौपदी को साथ ले, वन में चले गये। चलते समय भीम ने अपनी बड़ी बड़ी बाहें दिखाकर यह प्रतिज्ञा की कि मैं दुःशासन का लोहू पीलूंगा और द्रौपदी अपने केशों से अपना मुंह छिपाकर रोई।

युद्ध।

वनवास की अवधि पूरी होगई। जब तेरह बरस बीते तो कौरव पांडवों ने युद्ध की तयारी कर दी, जिससे सदा के लिये झगड़े का निपटारा होजाय। दोनों पक्ष के लोग श्रीकृष्णचन्द्र जी से सहायता मांगने गये। श्रीकृष्ण द्वारकापुरी में अपने महल में सोए हुए थे। दुर्योधन जाकर उनके सिरहाने बैठ गया; पर अर्जुन ने उनके चरणों के पास बैठना उचित समझा। दोनों उनके जागने का आसरा देखते रहे। जब श्रीकृष्णचन्द्र जागे, तब उनकी आंख पहिले अर्जुन पर पड़ी। जब श्रीकृष्णचन्द्र ने अर्जुन और दुर्योधन दोनों की बातें सुन ली तो अर्जुन से बोले कि तुम हमको लेना चाहते हो या हमारी सेना को। अर्जुन ने कहा कि हम आपकी सहायता मांगते हैं। यही बात पक्की ठहरी और श्रीकृष्ण ने पांडवों का पक्ष लिया। कुछ दिनों पीछे दोनों ओर की सेनाएं थानेसर के पास कुरुक्षेत्र

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के मैदान में इकट्ठी हुईं। बुड्ढे भीष्म पितामह कौरवसेना के सेनापति थे। चमकता कवच पहिने कर्ण भी कौरवों का पक्षपाती था। पर दुर्योधन पांडवों का कट्टर बैरी था। वह कहता था कि या मैं ही न रहूंगा या पांडव न रहैं।

कौरव-सेना बहुत बड़ी थी। पर धनुर्धारी अर्जुन, और बली भीम एक एक सेना के बराबर थे और श्रीकृष्ण जैसे नीतिजानने वाले पाण्डवों के साथ थे। रथ हाथी, पैदल और घुड़सवार पांति बांध बांध कर खड़े होगये। चारों ओर धनुष वाण, परशु, बरछी गदा और विष के बुझे अस्त्र ही देख पड़ने लगे।

इतने मे अर्जुन ने श्रीकृष्णचन्द्रजी से, जो उनका रथ हांक रहे थे, कहा कि आप दोनों सेनाओं के बीच में रथ खड़ा कर दीजिये। यहां से अर्जुन ने सेनाओं की सजावट देखी, पर साथ ही उसकी दृष्टि उसके चाचा, दादा, मामा आदि पर पड़ी, जो उससे लड़ने को तैयार खड़े थे। इन सब को देख कर अर्जुन को बड़ा दुःख हुआ और वह श्रीकृष्णचन्द्रजी से बोला, हाय हाय हम लोग बड़ा पाप करने यहां आये हैं। राज्य पाने के लिये हम अपने भाई बन्धों को मारने को तय्यार है। मैं तो ऐसा राज्य नहीं चाहता। इतना कह कर उसने धनुष फेंक दिया और बोला, मैं न लड़ूंगा; भीख मांगकर खाऊंगा, पर अपने सगों को मार कर राज्य न लूंगा। उसकी यह दशा देख श्रीकृष्णचन्द्र ने उसे ज्ञान का उपदेश

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देकर उसकी शंका दूर कर दी। यह ज्ञान का उपदेश भगवद्गीता के नाम से प्रसिद्ध है।

लड़ाई छिड़ी और अठारह दिन तक होती रही। बाणों की वर्षा ऐसी हुई कि आकाश छिप गया। हथियार मंत्र पढ़कर चलाये जाते थे जिस से उनमें विशेष शक्ति आ जाय। वीर लोग बाणों से शरीर बिध जाने पर भी लड़ते रहे। उनके शरीर से लोहू की धारा बहती थी, पर उन्होंने युद्ध से मुंह न मोड़ा। एक वीर के सिर में तीन तीर लगे थे। भयंकर पराक्रम करने वाले भीम, सिंह की भांति अपने ओंठ चाटते थे और गरजते थे। उन्होंने कितने ही रथ और हाथी, अपनी गदा से चूर चूर कर डाले। अर्जुन ने तीर बरसा कर हज़ारों वीर मारे, धीर धर्मराज युधिष्ठिर भी रण में क्रोध से बैरीके ऊपर टूटे पड़ते थे।

कौरव सेना के नायक भीष्म और द्रोण ने भी पांडवों के अगणित वीर मार डाले। वीर सिपाहियों का रौंदा जाना घायल घोड़ों का हिंनहिनाना, धनुषों की टंकार और हाथियों की चिंघाड़ से भयंकर शब्द होता था। रात होने पर यह शब्द बन्द हो जाता था और इसके बदले रणभूमि पर गीदड़ चिल्लाते फिरते थे। सवेरे दिन निकलते ही मरे हाथी घोड़े सिपाही, टूटे बरछे लोहू में भींगे कवच और झंडों का समरभूमि में भयानक दृश्य देख पड़ता था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri M Jin Gun Aradhak Trust

कई दिन की लड़ाई के पीछे वीर अर्जुन ने अपने बाणों से बुड्ढे भीष्म का सारा शरीर छेद डाला। बाण उनके सारे शरीर मे चुभे खड़े थे। भीष्म अपने रथ पर से गिर पड़े पर बाण उनके शरीर में इतने छिदे थे कि वह उपर ही उठे रह और उनकी पीठ धरती से न लगी। इसी को भीष्म की शरशय्या (बाणों का बिछौना) कहते हैं।

अब द्रोण सेनापति हुए और उन्होंने कौरव सेना को बढ़ाया। पांडव सेना एक बार ऐसे संकट में पड़ गई कि श्रीकृष्णचन्द्रजी ने लड़ाई बंद करने के लिये सूर्य को छिपा दिया। रात समझकर कौरव हट गये। इसी अवसर पर अर्जुन ने उन पर धावा मारदिया और कितनेही वीर काट डाले। द्रोण लड़ाई में मारे गये और सुनहले कवच वाले वीर कर्ण को अर्जुन ने परास्त कर दिया। दुर्योधन को भीम ने गदायुद्ध में मार डाला। लड़ाई समाप्त हुई और विजयी पांडव हस्तिनापुर में आये। यहां युधिष्ठिर अपने पूर्व पुरुषों के सिंहासन पर बिराजे और श्रीकृष्ण की सहायता से उन्हों ने महायज्ञ किया। इस यज्ञ में बड़ी धूमधाम रही और कितने ही हाथी गाय सोना चांदी और रत्न लोगो को बांट दिये गये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

युद्ध के पीछे की कथा।

बेटों के मारे जाने पर महाराज धृतराष्ट्र तपस्या करने बन को चले गये। कई बरस पीछे पाण्डव उनके पास गये और जो भाई बन्धु लड़ाई में मारे गये थे, उनकी चर्चा होने लगी। इसी अवसर पर व्यास मुनि आये और कहने लगे कि हम अपने तपोबल से तुम्हें उन सब को दिखा सकते हैं, जिनके लिये तुम सोच कर रहे हो। सब लोग गंगा में स्नान करके तीर पर खड़े हुए। जल सामने बह रहा था। एकाएक एक भयंकर शब्द हुआ और मरे वीर सब कवच पहिने रथों पर सवार पानी में से निकल आये। सबेरे तक सब ने आपस में मिल-जुल कर बातचीत की। सूर्य निकलने से पहिले सब अन्तर्द्धान हो गये।

दो बरस पीछे महाराज धृतराष्ट्र का देहान्त हो गया। पाण्डवों के परम मित्र और सहायक श्रीकृष्णचन्द्र जी भी वैकुंठ को चले गये। इस भांति अकेले रह जाने पर पांचों पाण्डव सुमेरु पर्वत की ओर चले, जहां देवता रहते हैं। पाण्डवों में जेठे युधिष्ठिर सब से आगे थे, उनके पीछे क्रम से चारों भाई और सब के पीछे परम सुन्दरी द्रौपदी थी। उनका कुत्ता सब से पीछे था। इस रीति से पांडव इस लोक से सिधार गये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बुद्धदेव ।

दो हज़ार बरस से भी पहिले हिमालय के तट पर एक छोटे से देश में शाक्य वंश का एक राजा राज करता था। इस राजा का नाम शुद्धोदन था। इसके एक ही लड़का सिद्धार्थ था। राजा यह चाहता था कि मेरा लड़का भी मेरी तरह वीर हो। लड़का बढ़ते बढ़ते जवान हुआ। उसके वीर होने में संदेह न था और वह अस्त्र चलाने में बड़ा निपुण था। परन्तु वह दिन रात एकान्त में बैठा सोचा करता था और हंसी ठट्ठा रीला करने वाले साथियों से उसको घृणा सी थी। वह सयाना हुआ तो पड़ोस के एक राजा ने अपनी बेटी का स्वयंवर रचा। इसमें बहुत से राजा आये पर सिद्धार्थ जी ने अपनी वीरता से सब को नीचा दिखा दिया और राजकुमारी के साथ उनका व्याह हो गया।

सिद्धार्थ वीर थे, बली थे, पर उन्हें लड़ाई अच्छी नहीं लगती थी। वह चाहते थे कि सब लोग प्रसन्न और संतुष्ट रहकर अपना अपना काम करें। वह यहां तक चाहते थे कि घोड़े बैल भी जिनसे हम लोग काम लेते हैं और जो अपना दुःख सुख हमको नहीं बता सकते, सुखी रहैं, उनके साथ दया का बर्त्ताव किया जाय और उन्हें पेट भर भोजन दिया जाय।

कभी कभी वह अपने पिता के साथ शहर में

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

घूमने निकलते थे। वहां उन्होने धनो कंगाल साथ ही साथ देखे। संकट मे घबराते सैकड़ों प्राणी उनको आंखों के आगे आये। उनको यह सोच हुआ कि संसार में कोई धनी और कोई दरिद्र क्यों होता है ? यह भी उन्होंने देख लिया कि न धनी हो सदा सुखो रहते हैं और न कंगाल सदा दुखो। धनी हो या कंगाल, सैकड़ों स्वार्थपरायण होते हैं और स्वार्थ साधन ही में अपने दिन काटते हैं। सैकड़ों सबल निर्बलों के साथ बड़ी निठुराई करते और उनको सताते हैं। सिद्धार्थ को दुखियों की दशा देख कर बड़ा सोच हुआ और वह दिन रात इसी चिन्ता में पड़े रहते कि कौन सा ऐसा उपाय किया जाय जिससे लोग सुखो रहैं और स्वार्थान्ध न हों। वह दो बरस तक दो विद्वानों से ज्ञान उपदेश लेते रहे, पर उनका मन शांत न हुआ। अंत में उन्हों ने यह निश्चय कर लिया कि घरबार, माता पिता, स्त्री पुत्र और जितने सम्बंध के संबध हैं, सब छोड़कर तपस्या करनो चाहिये। यह ठान कर, उन्होने अपने लंबे केश काट डाले अपने राजसी कपड़े एक भिखमंगे से बदल लिये और बन को चले गये। सात बरस तक सिद्धार्थ नें जो गौतम के नाम से प्रसिद्ध हैं, बन में रह कर कड़ी तपस्या की ; वह बहुत थोड़ा भोजन करते थे और कभी तो प्राणरच्चा के लिये जल तक न पीते थे। पर इससे कुछ न हुआ। शरीर को क्लेश देने से उनको शांति न

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मिली। उन्होंने तपस्या छोड़ दी और एक दिन वह ध्यान

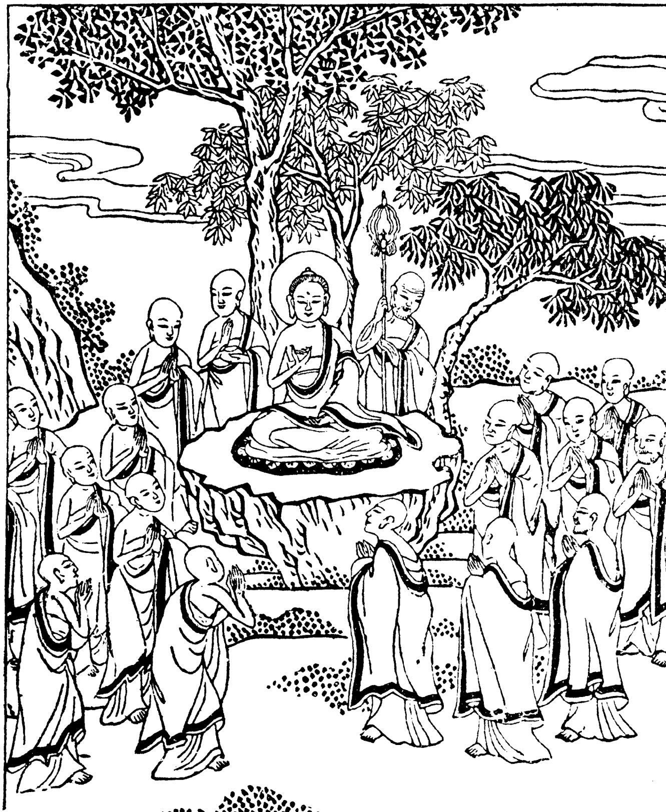

में मग्न हो गये। कई दिन पीछे उनको ऐसा अनुभव हो गया कि हम बुद्ध हो गये। उनको वह मार्ग देख पड़ा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिस से मनुष्य मात्र सुखी रह सकता है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्वार्थरहित और पापरहित रहने से शांति और सन्तोष मिलता है और जो औरों के साथ भलाई करते हैं, वह ही सुखी रहते हैं। उन्होंने यह भी निश्चय किया कि अपना मत सब को सिखा दें। जब गौतम ने तपस्या छोड़ दी तो उनके शिष्यों ने भी उनका साथ छोड़ दिया। इससे गौतम को बड़ा दुख हुआ! उनके मन में यहां तक आगया कि अपने घर लौट चलें और अपनी प्यारी स्त्री से मिलें। बुद्धदेवजी प्रसिद्ध वट वृक्ष के नीचे बैठ कर विचार करने लगे। अन्त में उन्होंने सांसारिक बंधन तोड़ दिये और अपने पांचों शिष्यों की खोज में काशी चले गये। यहां धमेख स्थान पर उन्होंने अपने शिष्यों को अपने धर्म का उपदेश दिया। उनके शिष्यों ने उनका मत स्वीकार कर लिया और अपने गुरु के साथ हो लिये। कुछ दिन पीछे बुद्धदेवजी के बहुत से चेले हो गये और उनको उन्होंने दूर दूर देशों में धर्म प्रचार करने भेज दिया। यह धर्म बौद्धमत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसमे लोगो को सब के साथ करुणा और मैत्री सिखाई गई। पशुओं पर भी दया करने का उपदेश दिया जाता था। बुद्धदेवजी ने यह उपदेश दिया कि शुद्ध और साधु आचरण चलने से, बड़ों की आज्ञा मानने से, कृतज्ञता और दयादान और सच बोलने से सब को निर्वाण मिल सकता है। गौतम

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एक बार अपनी जन्मभूमि को गये। यहां उनकी स्त्री उनकी शिष्या हो गई।

बुद्धदेव को निर्वाण प्राप्ति के दो सौ बरस पीछे हिन्दुस्थान का एक सम्राट इस मत का अनुयायी हो गया। उसने भारत के कोने कोने में और समुद्र पार के देशों में इस धर्म का प्रचार कराया।

जिस स्थान पर गौतम "बुद्धदेव" हुए थे वह अब भी बुद्धगया के नाम से प्रसिद्ध है।

महावीर तीर्थङ्कर।

इन्हीं दिनों एक और बड़े धर्मप्रचारक हुए। इनका नाम बर्द्धमान था पर यह महावीर के उपनाम से प्रसिद्ध हैं। जिस समय गौतम मगध में अपने धर्म का उपदेश करते थे, उसी समय और उसी देश में महावीर भी लोगो को अपना धर्म सिखा रहे थे। गौतम ने शरीर को क्लेश देकर तपस्या करना व्यर्थ समझ कर छोड़ दिया था पर महावीर को कई बरस कड़ी तपस्या ही से निर्वाण मिला।

महावीर ने कुछ दिन उपदेश देने के पीछे जैन की पदवी धारण की और उनका मत जैनमत के नाम से प्रसिद्ध है।

महावीर का यह मत था कि जितने प्राणी हैं सब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के आत्मा है। इससे किसी को सताना न चाहिये। झूठ बोलना भी बड़ा पाप है। उनके शिष्यों ने पशुओं के लिये भी अस्पताल बनवाये, जिनमें कीट पतंगों की भी रक्षा की जाती थी।

महावीर ने जिस मत का हज़ारों बरस पहिले मगध में प्रचार किया था, उसके हज़ारों मानने वाले आजकल भारत में रहते हैं।

भारत पर सिकंदर की चढ़ाई

और

झेलम की लड़ाई।

पुराने समय में मसिडान का यूनानी बादशाह सिकन्दर यूरप में सब से बड़ा बादशाह था। यह बड़ा सुन्दर लंबा बलवान वीर था और एक उत्तम घोड़े पर सवार होकर चलता था। यह घोड़ा उसे मित्र से बढ़कर प्यारा था। यह वीर बादशाह बड़ा योद्धा था और इसने अपने सैनिकों को ऐसा सिखा रक्खा था और इतनी लड़ाइयां जीती थीं कि वह उसे जहां लेजाना चाहता था, सब प्रसन्न होकर उसके साथ चले जाते थे।

जब सिकंदर ने जितने देश सुने थे सब जीत लिये तो उसने एक बड़ी सेना इकट्ठी करके हिन्दुस्थान जीतने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का बिचार किया। हिन्दुस्थान की राह ईरान के मैदान और अफ़गानिस्तान की ठंढी बीहड़ पहाड़ियों पर होकर थी। इस राह पर यात्रा करना बड़े साहस का काम था; क्योंकि यूनान अच्छा देश है, वहां खाने पीने को थोड़े ही परिश्रम से मिल जाता है, और यूनानी सैनिक हिमालय की ठंटक और पहाड़ी देशों में अन्न जल का क्लेश सहने का अभ्यास न रखते थे।

परन्तु सिकंदर को कठिनाई झेलने में बड़ा आनन्द मिलता था। वीर सेना को लिये देश पर देश जीतता वह हिमालय के पार आ गया और सिंधु नदी के तीर पर पहुंच गया। यही उसके और हिन्दुस्थान के बीच मे थी। अटक से थोड़ी दूर ओहिन्द के पास उसकी सेना ने बड़े वेग से बहने वाली नदी पर पुल बांधा और इसी पुल पर से उसने हिन्दुस्थान में प्रवेश किया।

सब से पहिला शहर जिसे सिकंदर ने स्वाधीन कर लिया तक्षशिला था। उन दिनों यह भारत के बहुत बड़े नगरों में से एक था। सिकंदर समझता था कि ऐसे ही भारत के और शहर भी बिना लड़ाई भिड़ाई के उसके अधीन हो जायंगे। पर उन्हीं दिनों चन्हाब और झेलम के बीच का देश एक बड़े वीर राजा के शासन में था। जब इस राजा ने सुना कि एक विजयी सेना भारत में आगई है तो उसने अपने मित्रों और राज्य के सामंतो को बुलाया और यूनानियों का सामना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करने को बढ़ा और उनको अपने राज्य में आने से रोकने के लिये झेलम की ओर कूच किया। सिकंदर

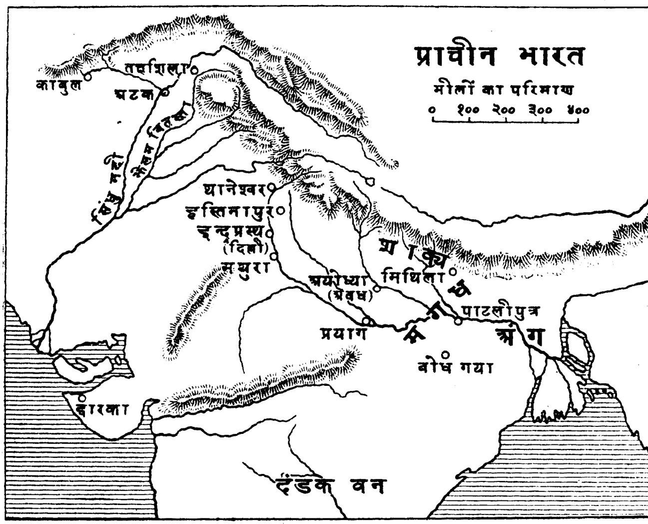

भी इतने मे झेलम तक पहुंच गया था। झेलम को यूनानी हैडास्पीज़ कहते थे। दोनों सेनाओं की देखादेख हुई। दोनों के झंडे फहरा रहे थे दोनो के बीच में झेलम नदी गरमी में बरफ़ पिघलने से बढ़ रही थी। भारत के राजा के पास दोसौ लड़नेवाले हाथी और तीन सौ रथ थे जिनमें चार चार घोड़े जुते थे। सिकंदर ने देखा कि लड़ने वाले हाथी उसके सामने नदी के उस पार सूंड़ हिला रहे है और चिंघाड़ मार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रहे हैं। इस जगह नदी उतरना कठिन है। उसके सिपाहियों ने इतने बड़े बड़े जानवर कभी देखे न थे। इस लिये वह हाथी देखकर बहुत घबराये। रातों रात यूनानी सेना आठकोस नदी के उपर चढ़ गई और वहां पार उतरी। पौरव राजा को इसका ज्ञान भी न था। जब पौरव ने सुना कि यूनानी नदी पार उतर आये तो वह अपनी सजी हुई सेना बढ़ा कर यूनानियो से युद्ध करने को मैदान में चला। सेना की दोनों ओर सवार और रथ थे और बीच में भारत के प्रसिद्ध धनुर्धारी और तलवार चलानेवाले हाथियों की ओट में खड़े थे। यूनानी सिपाही उसी रीति से लड़ने को आगे बढे जिसके लिये वह संसार में प्रसिद्ध थे। ढाल से ढाल मिलाकर एकत्र चलती भीत की भांति बढ़ते हुए बरछे सीधे किये धीरे धीरे वह आगे बढ़े और तीर चलाने वाले उनकी दोनों ओर घोड़ो पर सवार थे। वीर पौरव एक बड़े भारी हाथी पर सवार यूनानी दल को रौंदने लगा पर सिकंदर के सिखाये सिपाही पीछे न हटे। अन्त को हिन्दुस्थान का राजा घायल होगया और पकड़ लिया गया और उसकी सेना भाग गई।

राजा पौरव सिकंदर के सामने लाया गया सिकंदर ने उससे पूछा कि तुम क्या चाहते हो, तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव किया जाय ? पौरव ने बड़ी गंभीरता से उत्तर दिया, "जैसा राजाओं के योग्य है"। सिकंदर आप बड़ा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वीर था। इस जीते हुए राजा की वीरता देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसका राज्य उसे फेर दिया। उस दिन से पौरव सिकंदर का बड़ा मित्र होगया।

सिकंदर हिन्दुस्थान में दो बरस रहा। उसकी सेना देश जीतते जीतते थक गई और वह अपने देश को लौट गया।

भारत का पहिला सम्राट।

अलेकजंडर (सिकंदर) के समय में उत्तर भारत अनेक राज्यों में बंटा हुआ था। इनमें सब से बड़ा और सब से बलवान मगध का राजा था। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी, जिसे अब पटना कहते हैं और यहां मगध के राजा महाबली नन्द राज करते थे। सिकन्दर मगध तक न जासका पर और जितने देश थे सब उसकी विजयी सेना ने परास्त कर लिये थे। मगध में चन्द्रगुप्त नाम का एक नवयुवक रहता था। यह मगध राज नन्द के वंश में था। यह राजकुमार नीच जाति की मां से था परन्तु बड़ा निडर और चतुर था।

जब सिकंदर भारत से चला गया तो उसके पीछे उसके सेनापतियों ने भारत के जीते राज्यों पर शासन किया। सिकंदर के जाने के कुछ ही बरस पीछे हिन्दुस्थान में यह समाचार आया कि वह मर गया। परदेशियों का भारत

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में राज करना चन्द्रगुप्त को अच्छा नहीं लगता था। जब उसने सुना कि उनका राजा मर गया तो उसने यह ठान लिया कि यूनानियों को भारत से निकाल दें।

चन्द्रगुप्त बड़ा बली और निडर था और भारत के बहुत से राजा उसके साथ हो लिये। अब उसके पास यूनानियों को परास्त करने के लिये बड़ी सेना हो गई। इस सेना को लेकर वह पहिले मगध पर चढ़ गया और नन्दराजा से उसका राज्य छीन लिया।

इस रीति से चन्द्रगुप्त मगध का राजा हो गया। उसके पास एक बड़ी सेना थी और इस बल से उसने थोड़े ही दिनों मे उत्तर भारत के सब राज्य जीत कर अपने अधीन कर लिये। पाटलिपुत्र को राजधानी से उसने अपने राज्य का बहुत अच्छा शासन किया। उसके महल में एक से एक बढ़ कर सुन्दर वस्तु भरी थी। टट्टियों पर अंगूर की सुनहरी बेल फैली थी, जिनपर चांदी की चिड़ियां बैठी थीं। राजसिंहासन बहुत ही उत्तम बना था। सोने के बरतनों में राजा पानी पीता था। उसके घरके तांबे के बरतनो मे भी रत्न जड़े थे। इतनी संपति पहिले किसी राजा के दरबार मे न देखी गई थी।

भारत से निकलकर यूनानियों ने हिन्दूकुश पहाड़ के उत्तर बैक्ट्रिया नामक राज्य मे शरण ली। यह राज्य सिकंदर ने स्थापित किया था और उस समय प्रसिद्ध सेनापति सिल्युकस निकेटार (विजयी) इसका शासन करता

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था। सिल्युकस ने एक बड़ी सेना लेकर भारत पर चढ़ाई की पर चन्द्रगुप्त ने उसे हरा दिया और उससे पंजाब और काबुल देश छीन लिये।

चन्द्रगुप्त का पूरा नाम चन्द्रगुप्त मौर्य था, इससे उसके राज्य को मौर्यराज्य कहते हैं।

बैक्ट्रिया राज का दूत जो उन दिनों भारत में रहता था, मेगास्थिनीज़ था। वह कई बरस तक पाटलिपुत्र में रहा और उसने अपने ग्रंथ में भारतवासियों के आचार व्यवहार लिखे हैं। अनेक यूनानी ग्रंथकारों ने अपने ग्रंथो में इससे संक्षेप लिखे हैं। मेगास्थिनीज़ का ग्रंथ अब नहीं मिलता, पर और यूनानी ग्रंथों से दो हज़ार बरस पहिले भारत का हाल जो मेगास्थिनीज़ ने देखा था हम आज बहुत कुछ जान सकते हैं।

एक धर्मात्मा राजा की कथा।

पहिले लोग बड़े निठुर होते थे। कोई चोरी करता था तो उसकी नाक काट लेते थे। जो सरकारी कर न दे उसका बध होता था। लड़ाई में बड़ा निर्दयीपन होता था। कठोर सिपाही सुकुमार स्त्रियों और नन्हे निरपराध बच्चों को, जिन बेचारों का लड़ाई से कुछ काम न था, जान से मार डालते थे। उन दिनो यूनानवाले

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सब से बढ़ कर सभ्य माने जाते थे पर वह भी स्त्रियों और बच्चों के प्राण ले लेते थे।

चन्द्रगुप्त के मरने के कई बरस पीछे उसका पोता अशोक मगध के सिंहासन पर बैठा। अशोक बड़ा सुजन था। पर उसकी यह बड़ी लालसा थी कि और देश जीत कर अपने शासन में करले। इसका बाप और दादा दोनों बड़े प्रसिद्ध समरविजयी थे। अशोक चाहता था कि मैं भी उन्हीं की भांति विजय करूं। मगध के दक्षिण एक छोटा सा स्वतंत्र राज्य था। इसको अभी तक किसी ने न जीता था। इसका राजा स्वाधीन था और एक छोटी सी सेना रख कर अपने देश का शासन करता था। इस देश का नाम कलिंग था।

महाराज अशोक ने अपने राज को बढ़ाने की इच्छा से एक बड़ी सेना लेकर कलिंग पर चढ़ाई की। उसकी सेना में बड़े बड़े वीर थे और उसे विश्वास था कि इस लड़ाई से उसकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ जायगी।

कलिंग जीत लिया गया पर राजा को इस विजय से कोई बड़ाई न मिली। एक छोटे से राज के जीतने में कौन बड़ाई थी, जो सामना भी न कर सका था। बेचारी दीन दुखिया प्रजा के प्राण लेने में या सीधे किसानों के खेतों का नाश करने में भला कौन बड़ाई हो सकती है?

दयावान अशोक इस विजय से प्रसन्न न हुआ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसको इतने प्राणियों का मरना देखकर बड़ा शोक हुआ और इसने अपने मन मे ठान लिया कि फिर कभी लड़ाई न लड़ेंगी ।

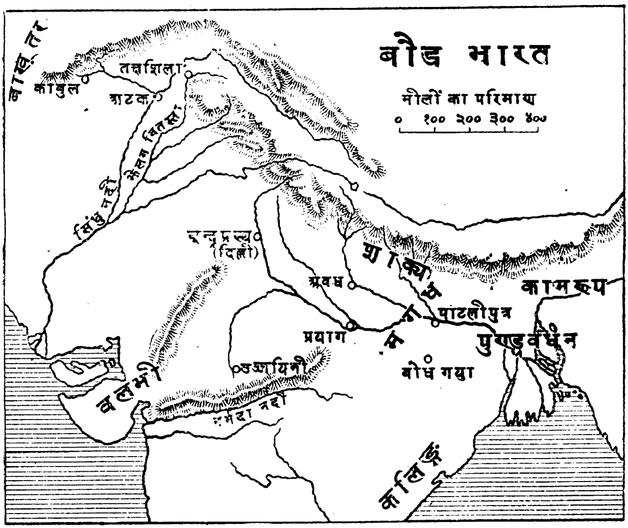

इसी लड़ाई से धर्म की ओर अशोक की प्रवृत्ति बढ़ गई और गौतम बुद्ध ने जिस धर्म का प्रचार किया था उसकी महिमा उसकी समझ में आ गई और वह बौद्ध हो गया ।

अशोक की इच्छा थी कि सब लोग इस सच्चे धर्म को मानें । इस अभिप्राय से उसने दूर दूर देशों मे धर्मप्रचारक भेजे । अपने देश में अशोक ने बौद्धधर्म की मुख्य बातें ठांव ठांव पत्थर पर खुदवा दीं जिसमे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उन्हें सब लोग पढ़ैं। यह लेख कुछ पत्थर के बड़े बड़े टीलों पर, कुछ पत्थर की लाटों पर और कुछ गुफाओं की भित्तियों पर खुदे हैं और सब पाली भाषा में हैं जो उस समय हिन्दुस्थान में बोली जाती थी। अशोक ने थके बटोहियों के लिये सड़कों के किनारे कुएं खुदवाये और रोगियों के लिये ठांव ठांव दवाईखाने बनवा दिये।

इस अच्छे राजा के मन में पशुओं पर भी दया थी और उसने पशुओं के लिये भी दवाखाने स्थापित किये। उसने बच्चों को आज्ञा दी कि अपने माता पिता का आदर करैं और उनसे प्रीति रक्खैं।

उसके सारे राज्य में सुख, सन्तोष, शांति और परस्पर प्रेम था। इस कारण उसको सुजन अशोक कहना परम उचित है।

फाहियन की यात्रा।

तुम पढ़ चुके हो कि महाराज अशोक ने दूर दूर देशों में बौद्धधर्म सिखाने के लिये धर्म्मप्रचारक भेजे थे। कुछ धर्मप्रचारक चीन में भी गये थे। उस बड़े देश ने उनका बड़ा आदर किया और बहुत से चीनी बौद्धमत के अनुयायी होगये।

चीनियों में एक धर्मनिष्ठ सज्जन ऐसा निकला और गौतम का अच्छा धर्म उसको ऐसा भाया कि उसने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बुद्धदेव की जन्मभूमि के देश में यात्रा करने की ठान ली। इस भक्त धर्मनिष्ठ चीनी का नाम फ़ाहियन था। उस समय में एक देश से दूसरे देश में जाना सुगम न था। जहाज़ छोटे होते थे उन पर खाने पीने का प्रबंध न रहता था और यात्री के सुख की उनमें कोई सामग्री नहीं होती थी। इस से जहाज़ समुद्र के तीर ही तीर चलते थे और इस राह में भी पानी के नीचे चट्टानों से टकरा जाने का डर लगा रहता था। इससे बढ़कर एक और उपद्रव यह था कि समुद्र में जलडाकू फिरा करते थे। थल की राह से घने बनों पहाड़ो और ऊबड़ खाबड़ देशो में होकर चीन से भारत की यात्रा समुद्र यात्रा से भी बढ़कर भयानक थी। उन दिनों में चीन से भारत को अकेला आना, बड़े जोखम का काम था।

और फ़ाहियन भारत में आ भी गया तो उसने कैसे जाना कि यहां के वासी उसे मार न डालेंगे? वह क्या जानता था कि भारत के वासी सदा अतिथिसत्कार के लिये प्रसिद्ध हैं और परदेसियों के साथ बहुत अच्छा बर्त्ताव करते हैं। वह भारत की कोई भाषा भी नहीं जानता था। परन्तु उसका उत्साह और उसका निश्चय ऐसा दृढ़ था कि उसने सब जोखम सहे और पहाड़ों पर होकर कुशल से हिन्दुस्थान में पहुंच गया। फ़ाहियन बुद्धभक्त तो था ही साथ ही बड़ा पंडित भी था। क्योंकि वह ऐसे देश से आया था जहां विद्या की बड़ी महिमा मानी जाती है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वह जहां जहां गया उसका ब्योरा लिखता रहा। कई हिन्दू राज्यों में बहुत दिनों तक रहा और जहां गया लोगो ने उसकी आवभगत की। सैकड़ों बरस बीतगये अब उसके लेख हमलोगों के लिये अमूल्य होरहे हैं। करोड़ों जन्मे और मर गये पर फ़ाहियन का लेख उस पुराने समय का ब्यौरा बताने वाला अबतक विद्यमान है।

फ़ाहियन मगधदेश में पहुंचा जो उस समय मध्यदेश के नाम से प्रसिद्ध था और उत्तर भारत में सब से बड़ा राज्य माना जाता था। तुम पढ़ चुके हो कि चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन में क़ानून बड़े कड़े थे और सज़ा देने में बड़ी निठुराई की जाती थी। जब फ़ाहियन मगध में आया था, तो क़ानून बहुत नरम कर दिये गये थे। ठांव ठांव बौद्ध मत के विहार थे, जिनमें संन्यासी रहते थे और दीन दुखियों को अन्नवस्त्र देने के लिये उन्हें सरकार से रुपया मिलता था।

फ़ाहियन ने अशोक का महल भी देखा। अशोक को मरे छ सौ बरस बीत चुके थे पर उसका महल तब भी बड़ा सुन्दर था उस अच्छे राजा का सुशासन सफल हुआ था और उस समय में भी उसके देश में सुख और सुचितई थी। फ़ाहियन की यात्रा के समय मगध का राजा प्रसिद्ध चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य था। उसकी सभा में नव बड़े विद्वान थे जो नवरत्न कहलाते हैं। इन में महाकवि कालिदास सब से प्रसिद्ध हैं। सात सौ बरस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पहिले अशोक का दादा चन्द्रगुप्त मौर्य मगध में राज करता था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य हिन्दू था तिस पर भी बौद्ध विहारों को दान देता था। मगध देश भी कैसा सुखी और संतुष्ट रहा होगा जहां दोनो मत धर्म के कामों में एक दूसरे की सहायता करते थे और उनमें तन मन धन से अलग अलग भी प्रवृत्त रहते थे।

इस बड़े राजा की सभा में बड़े बड़े विद्वान होगये हैं। महाकवि कालिदास ने जो काव्य और नाटक रचे वह अब भी ऐसे प्रसिद्ध हैं जैसे तब थे जब वह बनाये गये थे। यह भी विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में गिने जाते हैं। इसी समय संस्कृत भाषा उन्नति के शिखर पर पहुंच गई थी। पंडित लोगों ने नक्षत्रों की गति जांची थी और ज्योतिष शास्त्र के ग्रंथ लिखे। दर्शन शास्त्र और इतिहास की पुस्तकें भी रची गईं।

फाहियन ने पाटलिपुत्र में तीन बरस तक संस्कृत पढ़ी। उत्तर भारत मे ग्यारह बरस रहकर फाहियन समुद्र पथ से अपने देश को लौटा और सैकड़ो ग्रंथ अपने साथ लेता गया।

हुयनच्वांग की भारतयात्रा।

विद्वान राजा हर्षदेव।

ईसवी सन की सातवीं शताब्दी में भारत दो बड़े बड़े राज्यों में बंटा था। उत्तर भारत में सदा से अनेक छोटे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छोटे राज्य थे। जिसे अब गुजरात कहते हैं उस देश में बलभी वंश का राज्य था। पूर्व में कामरूप देश में

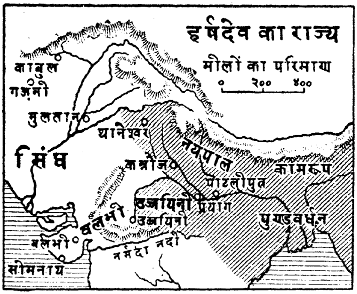

जिसे अब आसाम कहते हैं एक राजा शासन करता था। मध्यभारत में उज्जयिनी एक राजधानी थी और बंगाले में पुंड्रवर्धन वंश के राजा अपना हुकुम चलाते थे। परन्तु उत्तरभारत के राजाओं में सबके ऊपर कन्नौज का राजा हर्षदेव महाराजाधिराज था। राजा हर्षदेव विद्या और कला का गुणग्राहक तो था ही, आप भी एक प्रसिद्ध कवि था और लोग कहते हैं कि उसने कई ग्रन्थ रचडाले। इससे उसकी सभा में बड़े बड़े कवि और पंडित रहते थे। यह बड़ा पंडित और विद्या का प्रेमी था। अनेक बड़े ग्रन्थकार कनौज में उसके आश्रित रहते थे और राजा हर्ष उनका आदर करता और उनका उत्साह बढ़ाता था।

महाराज हर्षदेव के शासन काल में एक बड़ा विद्वान चीनी यात्री हुयनचुांग बलख और काबुल देशों में होता हुआ भारत में आया। यहां वह दस बरस तक बौद्ध मत के अवशिष्ट स्मारक बटोरता रहा। वह कामरूप देश के कुमार राजा की सभा में ठहरा था जब उसे महाराज हर्षदेव ने अपनी सभा में बुला भेजा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माघ मास में महाराज हर्षदेव ने बीस छोटे राजाओं के साथ हुयनच्वांग को संग लेकर प्रयाग की यात्रा की। यह महाराज के राज्य का छठा वार्षिक उत्सव था। गंगा और यमुना दोनो में जल थोड़ा रह गया था क्योंकि पहाड़ों पर बरफ़ गलने के दिन न थे। नदियों में जो रेता पड़ गया था, उस पर हज़ारो यात्रियों की भीड़ थी। पहिले दिन बुद्धदेव की पूजा की गई और बहुत सा धन दान किया गया। दूसरे दिन सूर्यनारायण की पूजा हुई और तीसरे दिन महादेव की उसी रीति से आराधना की गई।

इस यात्रा के लिये पांच वर्ष तक धन इकट्ठा किया गया था। पूजा और दान की सामग्री सैकड़ो कोठों मे भरी थी। सब का सब ब्राह्मणों बौद्ध मत और जैन मत के संन्यासियों को बांट दिया गया। हाथी घोड़े और हथियार छोड़ कर रत्न हार, सोने के कड़े जड़ाऊ कंठे सब बांट दिये गये।

यह उत्सव पचीस दिन तक रहा। पहिले इस के राजाओं की सवारी निकली थी। जब यात्रा समाप्त हुई तो हुयनच्वांग अपने घर लौट चला। चलते समय कामरूप के कुमार राजा ने एक संबूरी चोगा उसको भेट में दिया। हर्षदेव ने भी उसे एक हाथी और तीन हज़ार सोने की मोहरे दीं और एक राजा को आज्ञा दी कि कुछ सिपाही साथ लेकर हुयनच्वांग को पहुंचादे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुयनचांग बीस घोड़ों पर बौद्ध मत के ग्रंथ और स्मारक चिह्न लाद कर चीन को लौट गया।

राजा पुलिकेशिन।

हर्षदेव बहुत बड़ा सम्राट् था। उसकी आज्ञा पाते ही लाखों सिपाही लड़ने मरने को तयार हो जाते थे, उसके सेनापति बड़े वीर थे, और उसके हाथ हिलाने से संसार की संपति उसके चरणों पर गिरती थी। इतना शक्तिमान होने पर भी हर्षदेव दक्षिण के राजराजेश्वर को न दबा सका।

राजा पुलिकेशिन की राजधानी वटपी थी। दक्षिण के सारे राजा उसको प्रणाम करते थे और अपना महा राजाधिराज मानते थे। पश्चिम में कोकण और दक्षिण गुजरात के राजा, पूर्व मे वीरपल्लव, दक्षिण का प्राचीन चोला राजा सब पुलिकेशिन के अधीन थे।

दूर देश ईरान तक के बादशाह ने दक्षिण के सम्राट का नाम सुना और उसके दरबार में, अपना दूत भेजा। जब हुयनचांग भारत में आया था तो उसको अजंटा की विचित्र गुफाए दिखाईं गई थीं। यह गुफांये दक्षिण के राजाओं की आज्ञा से बनी थीं। एक गुफा में उसको ईरानी राजदूत का राजसभा मे आना चित्र में दिखाया गया है। इस समय दक्षिण में चालुक्य वंश

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के सम्राट शासन करते थे। एक बार हर्षदेव ने भी इन पर चढ़ाई की थी। पर पुलिकेशिन की सेना ने उन्हें भगा दिया और जब तक चालुक्य वंश का अधिकार रहा तब तक किसी बैरी का ऐसा साहस न हुआ कि नर्मदा के पार उतर के उनके देश मे पांव धरे।

महाराज राजराज।

तुम पढ़चुके हो कि राजा पुलिकेशिन ने हर्षदेव को परास्त किया था। पुलिकेशिन भी बड़ा समरविजयी था। उसकी सेना ऐसी सुसज्जित थी कि दक्षिण भारत के सब राजा उससे हार गये। परन्तु उस समय दक्षिण भारत में जितने राजा थे सब बली और वीर थे। पल्लव वंश के महावीर राजा कृष्णा नदी के तीर वेङ्गी मे शासन करते थे। पलक्क जिसे अब पलघट कहते हैं और कांची में भी पल्लवों का राज्य था। राष्ट्रकूट का प्रसिद्ध राजवंश महाराष्ट्र देश में पहिले शासन करता था। पिछले दिनों में राजपूतों के प्रसिद्ध यादववंश ने देवगिरि को अपनी राजधानी बनाया। देवगिरि दौलताबाद का पुराना नाम था।

राजा पुलिकेशिन के मरने पर बड़ी लड़ाई हुई। कभी दक्षिण में पल्लव सब से बढ़ जाते थे। कभी चालुक्यों

का प्रताप प्रबल था और बहुत दिनों तक राष्ट्रकूट सब से बढ़ गये। दक्षिण में बहुत दूर दूर तक तीन राज्य इन सब से प्रसिद्ध थे। इनका नाम पाण्ड चेर और चोल था।

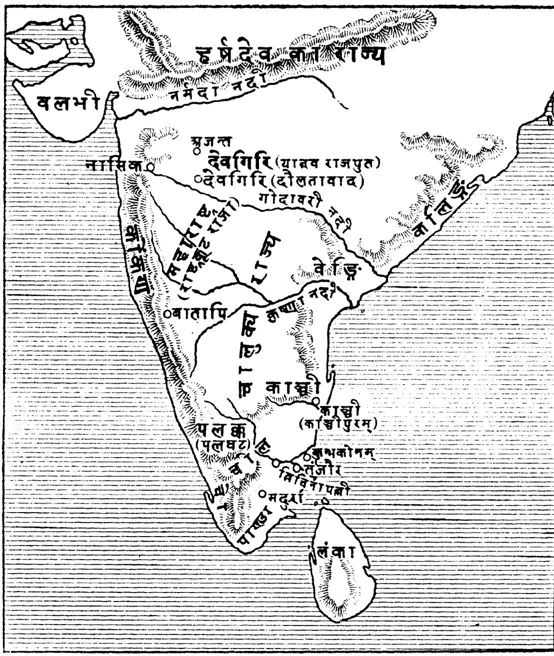

चोल राज्य में दो बड़े नगर त्रिचिनापल्ली और कुम्भकोनम् थे। तामिल विद्या का प्रसिद्ध स्थान मधुरा पांड्यों की राजधानी था, चेर समुद्रतट पर मलयवार पर राज करते थे। मधुरा राजा की ध्वजा पर दो मछलियां थीं और चेर वंशवालों का निशान धनुष था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दक्षिण के राज्यों का बड़ा व्यापार मोती का था और इन दिनों में भी यूरप के व्यापारी इन पुराने नगरों मे मोती और और चीजें मोल लेने आते थे। दक्षिण के बन्दरों में चीन के भी जहाज़ आते थे।

ईसवी सन् १००० में चोलराज्य का शासनकर्त्ता राजराज था। यह राजा बड़ा यशस्वी और प्रतापी हो गया है। इसने दक्षिण के सब राज्य जीत लिये और दूर का कलिंग भी अपने अधीन कर लिया था। लड़ाके पल्लव और प्रसिद्ध चालुक्य भी इसका लोहा मान गये। उसके मरने से पहिले चोलराज भारत के दक्षिण भर में फैला हुआ था। राजराज की राजधानी तानजौर की प्रसिद्ध नगरी थी, इस मे असने एक बड़ा मन्दिर बन गया जिसकी भीतियों पर उसके विजय का चरित लिखी हैं।

चोलराज मे एक प्रबल स्थल सेना तो थी ही जल सेना भी थी, उसी जलसेना की सहायता से राजराज ने लंकाद्वीप भी जीत लिया था और वह भी उसी के आधीन था।

चोलराजा शिव का उपासक था पर अपने राज्य के बौद्ध का भी बड़ा आदर सत्कार करता था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पारसी लोग भारत मे कैसे आये।

पारसियों के भारत में आने की एक बड़ी कथा है जिसका आरंभ अरब के दूर देश से होता है।

अरब एक विचित्र देश है। इस मे कहीं कहीं पानी बरसता ही नही। बड़े बड़े रेतीले मैदान पड़े हैं जिन में हरी घास जो आखों को कैसी ठंढक पहुचाती है कभी जमती ही नहीं। अरब में कहीं कहीं ऊंचे पहाड़ है जिनपर कभी कभी पानी बरस जाता है देश के बीचो बीच मे कोसों तक ऊसर पड़ा है और जब इसपर सूर्य की किरनैं पड़ती है तो बहुत ही तप जाता है। जो पानी पहाड़ों पर बरसता है धरती मे समा जाता है और रेतीली भूमि मे कही कहीं निकल पड़ता है और यहां पानी के छोटे कुंड बनजाते हैं। इस कुंड के चारों ओर ताड़ के पेड़ जमते हैं और सुन्दर हरी घास उग आती है। इन ही सुहावने स्थानों को अंग्रेजी मे ओयज़िज़ और फारसी में तावलिस्तान कहते है। जब हम किसी ऐसी वस्तु का वर्णन करते है जिसे हम बहुत चाहते है पर हमें कठिनाई से मिलती है तो हम उसे ओयज़िज़ कहते हैं।

अरब के रहने वाले अपने ऊटों पर सवार धीरे धीरे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इन ऊसर मैदानों में यात्रा करते दिन भर के हारे मांदे जब इन ताड़ के पेड़ो को देखते हैं तो इनको कैसा आनन्द होता है क्योंकि उनको निश्चय हो जाता है कि यहां जल है और विश्राम करने का ठिकाना है। और जो अरबवासी घोड़े पर सवार है तो उस का थका पशु कैसा प्रसन्न होकर लंबेलंब कदम बढ़ाता है जब उसे ओयजि़ज़ के ठंढे जल से लगी हवा उसके नथनों मे लगती है। जहां पानी बरसता हैं वहां लोगोने कुछ नगर बसाये हैं। इसी अरब देश मे महम्मद साहेब पैगंबर का जन्म हुआ था। महम्मद साहेब की जन्मभूमि मक्का नगरी थो। अरब वाले बड़े लड़ाके होते हैं। इस देश में शहर शहर के रहने वाले आपस मे नित लड़ाई दंगा किया करते थे। जैसे बुद्धदेव ने अपने देशवासियों का दुख दूर करने का प्रयत्न किया था वैसे ही महम्मद साहेब ने भी अपने देशवालो के बुरे आचार छुड़ाने के लिये उनको उपदेश दिया और उनको अपनी चालढाल सुधारने की शिक्षा दी। देखो पुराने समय के धर्म उपदेश करने वालों ने हमारे साथ कैसे उपकार किये हैं। हमको चाहिये कि हम उनके बचनों और कामों को ध्यान से देखें और जैसे वह रहते थे वैसा रहने को यत्न करें।

महम्मद साहेब ने अपने देशवालों को सब से प्रीति रखना और सब के साथ भलाई करना सिखाना चाहा। मक्का वालों ने उन्हे अपने शहर से निकाल दिया पर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मदीना वालों ने जो मक्के से कुछ दूर उत्तर है वहां उनका आदरमान किया और उनको अपने शहर मे बसने दिया।

अरब वाले लड़ाके होते थे। जब उन्हों ने दीन महम्मदी स्वीकार किया तो उनकी इच्छा यह हुई कि सारा संसार पैगंबर की उम्मत में आ जाय। पैगम्बर के मरने के पीछे मुसलमान दीन का मुखिया खलीफा के नाम से प्रसिद्ध हुआ और खलीफा की आज्ञा से अरबों की सेना दिग्विजय करने निकली।

एक सेना भारत में आई और मुलतान तक सिंध देश जीत कर लौट गई। दूसरी ईरान को गई। ईरान के शहर लूट लिये गये और लोग मुसलमान कर डाले गये।

इस समय तक ईरान वाले ज़रतशत का धर्म मानते थे जो बहुत दिन पहिले उनके बड़े धर्मोपदेशक ज़रतशत् या ज़रो आस्टर ने उन्हें सिखाया था। यह लोग सूर्य की पूजा करते थे क्योंकि सूर्य ही की गरमी से सब जीते है। सूर्य नहो तो संसार में न कोई पेड़ पैदा, उग सकता है न कोई प्राणी जी सकता है।

ईरानवाले भी योद्धा थे। पुराने समय मे जब दारा उनका सम्राट था तो उन्हो ने युरपके कई देश जीत लिये थे और यूनानी तक उन से डरते थे। कितने ईरान वालों ने अपना धर्म न छोड़ा और मरना स्वीकार किया और बहुतेरे जो अपने धर्म मे दृढ़विश्वास रखते थे अपनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्यारी मातृभूमि को छोड़ कर दूसरे देश की खोज में चल खड़े हुये जहां वह सुख से रह सकैं और कोई छेड़ छाड़ न करे। भारत से बढ़कर ऐसा देश कहां है जो सदा से सब धर्मों और मतोंका आदर करता और जिसके

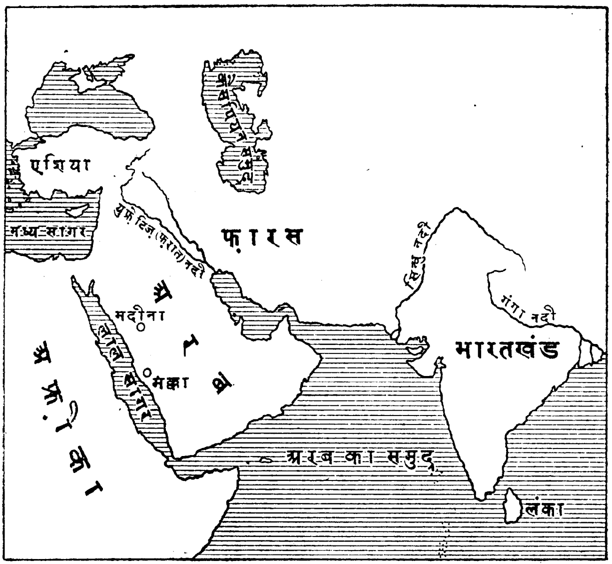

आतिथ्य का द्वार सब के लिये खुला है। यह ईरानी या पारसी भारत मे चले आये। अपने देश से चल कर पहिले भारत के पश्चिम समुद्रतटपर पहुंचे और सूरत और बंबई के पास देश मे बस गये। यहां तुम जानते ही हो कि वह अब तक रहते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महमूद ग़ज़नवी।

सुलतान महमूद ग़ज़नी का बहुत बड़ा बादशाह था। ग़ज़नीवाले मुसलमान थे क्योंकि अरब वालों ने अरब और तिबत के बीचके सारे देश मुसलमान कर डाले थे।

महमूद पहाड़ों के बीच अपने शहर में एक सुन्दर महल बनवाकर रहता था। इस महल में सैकड़ों किताबें और कारीगरी की सुन्दर चीज़ें सजी थीं। उसके दरबार में कवि और वैज्ञानिक रहते थे और वह सबका आदर सम्मान करता था। उन दिनों ग़ज़नी विद्या और कला का एक बड़ा केन्द्र था।

यह बादशाह विद्या और कला की उन्नति तो कराता ही था बड़ा वीर योद्धा भी था। उस समय के मुसलमानों की भांति वह भी चाहता था कि संसार के सब लोग मुसलमान हो जायं। समझा बुझाकर, शास्त्रार्थ करके मुसलमान करना उसने उचित न जाना। उसने शहर लूटे और जिसने अपना धर्म न छोड़ा उसको मारा। वह यह समझता था कि इसलामही सच्चा दीन है और काफ़िर* को मारने मे बड़ा पुण्य है। दूसरे धर्म के नाम ही से उसको चिढ़ थी।

यह शक्तिमान राजा चाहता तो अपना बल भले काम

---

* जो मुसलमान नही है उनको मुसलमान काफिर कहते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मे लगाता। पर उसने यह निश्चय किया कि भारत में छापा मारें और जो लोग अपने उस धर्म को न छोड़ें जो उनके बापदादे सदा से मानते आये हैं उनका बध करें।

महमूद के साथियों ने भारत में जो उपद्रव मचाये उनका ब्यौरा तुम को कहां तक बताया जाय। उन लोगों ने शहर लूटे, मन्दिर ढाये, जिन ब्राह्मणों की हिन्दू पूजा करते थे उनके सिर काटे, गावं जला दिये, खेत उजाड़े, हरी भरी धरती को राख का मैदान बना दिया और बस्तियों को उजाड़ बन कर दिया। पैग़ंबर साहेब ने जो अच्छे उपदेश दिये थे उन से उनके अनुयायियों के काम कितने विरुद्ध रहे। फिर भी महमूद और उसके सिपाही समझते थे कि हम बड़े धर्म का काम कर रहे हैं।

उस समय एक हिन्दू राजा ऐसा था जिसने मुसलमानों से अपने देश को बचाने के लिये बड़ा उद्योग किया। यह लाहौर का राजा जयपाल था।

सुलतान महमुद ने अपनी सेना पहाड़ों पर से भारत मे उतार दी और पेशावर में आकर ठहरा। जयपाल अपने राजपूत सवार और पैदल और बहुत से हाथी लेकर चढ़ाई करनेवालों को भगाने के लिये आगे बढ़ा। हिन्दू सेना हाथी घोड़े और पैदल, लड़ने के उत्साह मे भरी आगे बढ़ती चली जाती थी। मुसलमान भी बढ़े और जब दोनों सेनाओ की देखा देख हुई तो पहिले तीरो को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वर्षा थोड़ी देर तक हुई पीछे घमसान लड़ाई होने लगी। हिन्दू दल के हाथियों के सूंड़ मुसलमान वीरों की तलवार से कटने लगे और उनके पांव तीरों से छिद गये। हाथी लौट पड़े और हिन्दूदलको रौंदते हुए भागे। इसके पीछे दीन के जोश मे पागल मुसलमान इतने वेग से झपटे कि हिन्दुओं की पांति टूट गई और खेत से उनके पैर उखड़ गये। जयपाल बांध लिया गया और उसे सुलतानके आगे ले गये। कुछ कैदियों के हाथ पीछे बांध दिये गये थे। कोई गाल पकड़कर और कोई गर्दन पर गद्दे मार मार के चलाये जाते थे। जयपाल का मोती और मानिक का हार उतरवा लिया गया और वह अपने ही लड़कोंके सामने घुमाया गया जिससे वह भी उसकी दुर्दशा देखलें। उसके पीछे सुलतान ने उसे छोड़ दिया और वह लाहौर लौट आया।

वीर क्षत्रिय राजा को बड़ी ग्लानि हुई और इस अपमान के पीछे उसने जीना उचित न समझा। दुख और ग्लानि के मारे उसने अपने बेटे अनंदपाल को राज देकर आप चिता पर बैठ कर भस्म हो गया।

अनंद पाल भी बड़ा वीर था। उसने भी मुसलमानों से दबना उचित न जाना। उसने और राजपूतोंसे सहायता मांगी। सारे राजपूत राजा अपनी अपनी सेना लेकर आये। हिन्दू स्त्रियों ने अपने वीर भाईयों और पतियों को लड़ाई के लिये धन देने के लिये अपने गहने उतार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिये। हिन्दू दल इतना बड़ा था कि कई दिनों तक मुसलमानों का हियाव न बड़ा कि उनकी ओर बढ़े। अंत को हिन्दू आप बढ़े। इस बार भी हाथी बिगड़ गये और हिन्दुओं को रौंद डाला। महमूद के सवार टूटी पांति पर टूट पड़े और हिन्दू भाग खड़े हुये। अब क्या था। महमूद ने जितना चाहा लूटा। भारत के तीर्थ-स्थान खोद कर धूर में मिला दिये गये, और मंदिर नष्ट कर दिये गये। सोमनाथ के मन्दिर की रक्षा के लिये हिन्दुओं ने कई दिन तक बड़ा उद्योग किया पर वहां भी हार गये। जब तक महमूद जीता रहा भारत में लूट मार की धूम मची रही।

राजा जयचंद का राजसूय यज्ञ।

गहरवार राजपूतोंकी बढ़तीके दिनोमें इनकी राजधानी कन्नौज थी। कन्नौज का राजा जयचंद बड़ा शक्तिमान हो गया और राजा जयचंद उस ने चारों ओर के देश जीत लिये थे। सिंधु नदी के पार उत्तर के कई राजा जयचंद ने परास्त किये थे और आठ राजा उसके बंदी हो गये थे। उस ने दो बार अन्हलवाड़े के राजा को हरा दिया और उसका राज्य नर्मदा नदी के दक्षिण तक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फैल गया था। पिछले दिनों मे जयचंद ने गोर के सुलतान पर चढ़ाई कर दी थी जब गोर की सेना ने सिंधु के नीले पानी को लाल कर दिया था। दिल्ली का वीर चौहानों का राजा पृथिवीराज न होता तो जयचंद सारे राजपूतमंडल को अपने आधीन कर लेता।

जयचंद विजय के मद मे मत्त और धन संपति से भरा पुरा तो था ही उस के मन में यह समाया कि राजसूय यज्ञ ठान लूं और अपने को भारत का राज-राजेश्वर बना लूं। ऐसे यज्ञ में कभी मंगल नही हुआ। इस यज्ञ को छेड़कर पांडव अपना राज खो बैठे थे। जयचंद ने भारत के सब राजाओं के नाम न्यौता भेज दिया और यह भी घोषणा करा दी कि इसी यज्ञ मे उसकी बेटी संयोगिता का सयंवर भी होगा।

यह न्यौता जब पृथिवीराज को मिला तो उसे बड़ा क्रोध आया। कहीं चौहान भी कनौज के राजा को अधिराज मान सकता है? जयचंद के बुलावे पर कनौज जाना उसके लिये बड़ी हेठो थी। लोगं कहते हैं कि पृथिवीराज एक बार भेस बदल कर कनौज गया था। यहा उसकी आख जयचंद की बेटी पर पड़ी थी और देखते ही वह उसके प्रेम में डूब गया था। जब पृथिवीराज ने सुना कि इस यज्ञ में उसका स्वयंबर भी होगा तो उसके क्रोधका वारपार न रहा।

यज्ञशाला मे भरतखण्ड के सारे राजा उपस्थित हुए।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसकी शोभा कवियों ने लिखी है। हम उसका बखान नहीं कर सकते। एक चौहानराज न देख पड़ा।

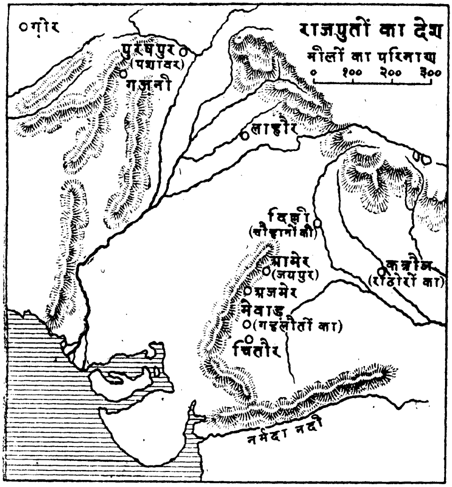

राजसूय यज्ञ में यह रीति थी कि राजराजेश्वर के घर की टहल आधीन राजा लोग किया करते थे। इस काम से मानो उन्हों ने जयचंद को अपना प्रभु मान लिया। एक भी राजा घर बैठ रहता तो यज्ञ में विघ्न पड़ जाता। इस लिये जयचंद ने चौहानराजा को सोने की मूर्त्ति बनवाई और द्वारपाल बनाकर फाटक पर खड़ी कर दी। चौहान वीर का इससे बढ़कर और क्या अपमान हो सकता था। यह कौन नहीं जानता कि सब से बड़े क्षत्रिय महाराज के लिये द्वारपाल बनना बहुत ही अयोग्य है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पृथिवीराजने निश्चय करलिया कि यज्ञ विध्वंस कर देना चाहिये और कुछ थोड़े से सामंत इकट्ठाकरके कन्नौज को गया। इस मंडलोमें उसके ८५ बड़े सामन्त थे और एक एक के साथ अनेक वीर योद्धा आये थे। अम्बर का राजा पज्जून राय और मेवाड़ वंश का गोविंद गहलोत भी पृथ्वीराज के साथ था।

राजपूत वीर घोड़ों पर सवार सरपट दौड़ाते हुए बनों को छानते दोपहर के समय कन्नौज पंहुचे। गहरवारों ने उन्हे रोकना चाहा पर चौहान उनका दल चीरकर यज्ञशाला में पहुंचे और सब राजाओं के देखते, जो गहरवार महाराज के अधीन बने थे जयचंद की बेटी को उठा ले गये और बात की बात में दिल्ली पहुंचें।

कन्नौज के वीर घोड़ों पर सवार होकर उनके पीछे लगे। पांच दिन तक बड़ी लड़ाई हुई। चौहान वीर थोड़े ही थे नित मरते और घटते जाते थे। गोविंद और पज्जून दोनो एक ही दिन मारे गये। पर पज्जून का भाई तैहे मे आकर समरभूमि मे पिल पड़ा और ऐसे काम किये जैसे कर्ण ने भी न किये थे। पांचवे दिन चौहानों ने सब को भगा दिया और कुशल समेत दिल्ली मे प्रवेश किया। यहां पृथ्वीराज के साथ संयोगिता का आनंद से विवाह हुआ। कई बरस पीछे जब चौहानराज मारा गया तो उसकी शोकग्रस्त रानी उसके साथ चितापर भस्म हो गई।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसी अवसर पर जब राजपूत राजा अपने बल के घमंड मे आपस मे कटे मरे जाते थे, गोर का मुसलमान बादशाह भारत पर चढ़ाई करने की तयारी कर रहा था।

महाराज पृथिवीराज।

चौहान बंश के महाराज पृथिवीराज अपने बहनोई चितौड़राज समरसीं के बड़े मित्र थे। कन्नौज की लड़ाइयों में समरसी ने कईबार दिल्ली के राजपूतों का साथ दिया।

पृथिवीराज ने समरभूमि ने अनेकबार विजय पाई थी। इस राजपूत बीर की कीर्ति कविचन्दने अपने पृथिवीराज रासौ काव्य में विस्तारके साथ वर्णन की है। चौहान राज ने इतनी लड़ाइयां लड़ी थीं कि अब उसे शान्त बैठने और विश्राम करने का अधिकार सा मिल गया था। चित्तौरराज समरसी की सहायता से उसे नाजौड़में बहुत सा गड़ा धन मिलगया था। इस निधान को पाने से वह पहिले से भी बढ़कर धनी और शक्तिमान होगया था।

अन्हलवाड़ा और कन्नौज के राजपूत चौहानोंके सदा के बैरी थे। इस निधि के पाने का समाचार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सुनकर वह दोनों और भी जल मरे। जयचन्द उससे इतना डरा कि उसने और अन्हलवाड़ाके राजाने अफगानोंसे कहला भेजा कि पृथिवीराज से लड़नेमें हमारी सहायता करो। यह भारत का अभाग्य था कि एक हिन्दू राजा भारतके दूसरे हिन्दू राजासे लड़ने के लिये परदेशी शत्रुको बुला ले।

जब पृथिवीराज ने सुना कि ग़ोर और ग़ज़नी का बादशाह भारतपर चढ़ा आरहा है तो वह अपने देश की रक्षा करने के लिये राजपूत वीरों की एक सेना इकट्ठी करके पठानों को सामना करने को चला। करनाल से थोड़ी दूर तरायं के मैदान मे जिसे अब तराउड़ी कहते है उसकी पठानोंसे मुढ़भेट हो गई।

ग़ोर का बादशाह महम्मद बड़ा सेनानायक था और उसके सिपाही भी बड़े बीर थे पर राजपूत तबतक हारना जानते ही न थे। उनकी बीरता के आगे पठानों की एक न चली। मुसलमान बादशाह खेत मे घायल होगया और उसे घोड़े पर लादकर उठालेगये। उसकी सेना तित्तिर वित्तर हो गई और खेत छोड़कर भागी। हिन्दुओं की ऐसी जय कभी नही हुई।

अफ़गान बादशाह बड़ा बहादुर था। उससे यह हार सही न गई। राजपूत अपने अपने घरों मे सुखसे बैठने न पाये थे कि एक लाख तीस हजार की सेना लेकर महम्मद फिर भारत मे उतर आया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पृथिवीराज अपने दिल्लीके महल में सुखभोग रहाथा। उसे फिर लड़ाई के मैदान मे आना अच्छा न लगा। पर महम्मद चौहानों के राज़ मे होता हुआ आगे बढ़ता गया। अन्त को चित्तौरराज समरसीं भी राजपूत सेना लेकर अपने मित्र चौहानराज की सहायता को चला। दिल्ली के राजपूत अपने चित्तोरी भाइयों को देखकर उछलपड़े और अपने प्यारे समरसीका शहरवालों ने बड़े आनन्द से स्वागत किया।

अब पृथिवीराज भी चौकन्ना हुआ और अपने चौहान वीर और राजपूत राजालोग जो उसके मित्र थे समरसी और चित्तौर राजपूतों को संगलिये हुये पठानों से लड़ने को निकल खड़ा हुआ। दिल्ली की राजपूत सेनाके नायक जैसे इस समय थे वैसे कभी न रहे होगें। पृथिवीराज वीरों में वीर था और समरसीं अपने नाम के अनुसार गुण रखनेवाला समर मे धीर और नीति में निपुण था और दिल्ली और चित्तौर दोनों के योद्धा उसको बहुत मानते थे।

उसी तरायं के मैदान में जहां हिन्दुओंने पहिले बिजय पाई थी हिन्दू मुसलमानों के बीच फिर घमसान लड़ाई हुई। पर राजपूतों के भाग्य फूट गये। समरसी उस का बेटा और तेरह हज़ार चित्तौर के वीर लड़ाई में काम आये। पठानों की संख्या बहुत थी। राजपूत उन से दबगये। पृथ्वीराज हरवल में लड़ता हुआ पकड़लिया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गया और उसकी सेना कुछ कट गई, कुछ पकड़ ली गई।

चित्तोर राजकी रानी पृथा ने जब यह सुना की उस का पति मर गया, उसका भाई कैदकर लिया गया और दिल्ली और चित्तौर के बीर कगारके तीर लोहे की धार में सो गये तो वह भी अग्निसात् होकर अपने पति के पास पहुंच गई।

गोर के वीरों ने चौहानों की राजधानी दिल्ली को हल्ला करके ले लिया और अन्तिम चौहान राजकुमार इसकी रक्षा करता हुआ मारा गया।

कन्नौज के राजा जयचंद ने पृथिवीराज का सत्यानास कराया। गहरवारों ने चौहानों का सर्वनाश देखकर अपनी छाती ठंढी की पर उनका यह सुख बहुत थोड़े ही दिनों तक रहा। मुसलमानों ने कन्नौज को भी परास्त किया और जयचंद जिसके कर्मों से भारत परदेशियो के हाथ में चला गया गंगा मे डूब कर मर गया।

राजपूत अपने सुहावने देशों से भाग कर सिंध और मध्यभारत के मरु और उजाड़ देशो में जा बसे। इसके पीछे कितनी सेनायें उनपर चढ़ी पर उन्हों ने कभी हार न मानी। जो लड़ाइयां पीछे हुईं उनमे चित्तौर के राना का नाम और कीर्त्ति सब से ऊपर है जिन के पुरषा मुसलमानों के विरुद्ध लड़ाई में पृथिवीराज के सहायक रहे थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महारानी पद्मिनी की कथा।

पठान बादशाह अलाउद्दीन ने जिस रीति से चितौर का गढ़ जीता उसकी कथा उसी समय के एक कवि ने वर्णन की है। यह कथा अक्षर अक्षर ठीक न हो तौ भी इस में संदेह नहीं है कि इसकी मुख्य घटनायें सत्य हैं क्योंकि उन दिनों वीर जाति में ऐसी बातें बहुत हुआ करती थीं।

जब अलाउद्दीन दिल्ली में बादशाहत करता था उसी समय चित्तौर के सिंहासन पर एक क्षत्रिय राजा भीमसी विराजमान थे। भीमसी की रानी पद्मिनी थी जो अपनी सुन्दरताई में ऐसी प्रसिद्ध थी कि उनकी कहानियां बन गई हैं और गीत गाये जाते हैं।

दिल्ली का बादशाह अपने समय का सब से बड़ा समरविजयी था। उसकी सेना भारतके कोने कोने तक मारती काटती आगलगाती राजाओं महाराजाओं से कर लेती पहुंच गई थी। उसका बिजयी सेनापति मलिक काफ़ूर दक्षिण मे मदुरा तक पहुंच गया था और उसको स्वाधीन कर चुका था। वह हजारों हाथी और लाखों सवार लड़ाई के मैदान मे खड़ा कर सकता था। युद्ध में कभी उसकी हार नहीं हुई और न उसकी इच्छा के प्रतिकूल कोई कुछ कर सकता था। वह जो चाहता था कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सकता था। सारे भारत में एक राजपूत की जाति ऐसी थी यो उसका सामना करने में न हिचकी।

अलाउद्दीन ने सुना कि संसार में सब से सुन्दर राजकुमारी चित्तोर के महाराना की स्त्री है। उस ने कभी राजपूतों को परास्त न किया था फिर भी उसने चित्तोर पर चढ़ाई करने को अपनी सेना बढ़ा दी। कुछ दिन में पठान चित्तौर पहुंच गये। क्षत्रिय राजा रानी ने अपने को अपने पहाड़ी गढ़ में बन्द कर लिया। वह गढ़ के कोट से पठानों के झंड़े फहराते और उनके नगाड़ो कीं गरज सुनते थे। बहुत दिनों तक पठान गढ़ को घेरे पड़े रहे पर बीर क्षत्रियों के आगे उनकी एक न चली। अन्त को अलाउद्दीन ने महाराना भीमसीं के पास दूत भेज कर यह कहलाया कि जो राजा अपनी रानी का प्रतिबिंब दर्पण मे हमें दिखादें तो हम कुछ न करेंगे और अपने घर लौट जायंगे। राजपूत राजा ने इस में कुछ दोष न देखा। अलाउद्दीन निहत्था गढ़ में चला गया और जैसा उसने कहा था रानी की परछाईं उसे दिखा दी गई।

दिल्ली के बादशाह को राजपूतों की भलमंसाहत पर पूरा विश्वास था। वह जानता था कि क्षत्रिय अपनी बात के बड़े पक्के होते हैं कभी धोखा नही देते और न निहत्थे पर हथियार उठाते है। इसी विश्वास पर वह अकेला गढ़ मे चला गया। भीमसीं समझा कि पठान

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भी ऐसे ही होते हैं तो मै इन से घटकर क्यों रहूं। वह भी निहत्था पठानों की सेना मे चला गया। धूर्त पठान ने सोचा कि ऐसा अवसर हाथ से न देना चाहिये और उसने राजाको घात मे सिपाही बिठा दिये। भीमसीं पकड़ लिया गया। अलाउद्दीन ने कहला भेजा कि रानी मेरे पास चली आये तो मैं राजा को छोड़ दूं।

इस विश्वासघात पर राजपूतों को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने पठानो की करतूत पद्मिनी से कही और एक ऐसी चाल सोची जिससे राजा रानी दोनों बच जायं। पद्मिनी ने बादशाह से कहला भेजा कि मैं तुम्हारे लशकर में आती हूं पर मेरे साथ इतनी लौंड़िया होंगी जितनी कि मुझ सी महारानी के साथ रहनी चाहियें। बादशाह ने मान लिया और सात सौ पालकियां पठानों के लशकर मे पहुंचा दी गईं। इन में से एक में पद्मिनी थी, औरों में चित्तौर के सात सौ चुने वीर थे।

अलाउद्दीन की इच्छा न थी कि राजा को छोड़ दे। वह समझा था कि राजा रानी दोनो मेरे बस में आजायंगे। पर उसकी चाल चूक गई। ज्योंही भीमसी बुलाया गया राजपूत वीर पालकियों में से कूद पड़े, अपने राजा रानी को घेर लिया और पठानों के दल को चीरते हुये अपने गढ़ मे पहुंच गये।

पठानों ने चित्तोड़ को फिर घेर लिया और कई दिन तक लड़ाई रही। सैकड़ो वीर राजपूत मारे गये। पर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अलाउद्दीन ने जाना कि राजपूत हम से कम नहीं है और चित्तौर से लौट गया।

चित्तौर गढ़ का टूटना।

अलाउद्दीन चित्तौर की हार को न भूल सका। कई बरस पीछे उसने फिर एक बड़ी सेना इकट्ठी की और गढ़ को घेर लिया। पठानों ने गढ़ का घेरा इसबार बहुत ही सावधानी से किया। एकबार राजपूतों की वीरता का परिचय पा चुके थे इस से अब की बार बड़ी चतुराई से काम में लगे। उन्हों ने खाइयां खोदीं और गढ़ की ओर बढ़ते चले गये। राजपूतो को भी रात दिन चैन न था न जाने कब पठान कोट पर धावा कर दें। पठान कई बार बढ़े और हटा दिये गये पर उनका उत्साह कम न हुआ और न उन्हो ने चढ़ाई में किसी प्रकार की ढील की। नित्य राजपूत वीर घायल होते थे और मरते थे और उनकी संख्या घटती जाती थी। पठानों का दल इतना भारी था की उनके बलमें कोई त्रुटि प्रतीति न हुई। जब राजपूतों ने देखा कि पठान हम से कई गुने अधिक हैं और इन से कोई बचने की आशा नहीं है तो लड़कर मरजाना निश्चय कर लिया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गढ़की रक्षा एक ही घंटेका काम था जिसमें उनकी स्त्रियां और बहिनें जुहार करलें। गढ़के नीचे खड्ड मे एक चिता बनाई गई जिसमें एक हज़ार राजपूत स्त्रियां बड़ी धीरता और शान्ति के साथ जलकर मर गईं। इन्होंमें पद्मिनी भी थीं।

इसी अवसर पर राना का लड़का थोड़े से सिपाही लेकर बैरी के सेना को चीरता हुआ बाहर निकलगया। राणा ने देखा कि हमारे वंश की प्रतिष्ठा रह गई है, अब मरने में कोई हानि नहीं है; और अपने भक्त सिपाहियों को बुलाकर गढ़का फाटक खोल दिया। फाटक खुलते ही अलाउद्दीनके सिपाही गढ़ में घुस गये। राजपूत उनपर टूट परे और एक एक करके कट मरे।

चित्तोर के घेरे का यही अन्त हुआ। अलाउद्दीन के हाथ मे एक राजपूत भी जीता न पड़ा। सूना क़िला उसके हाथ लगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बादशाह बलबन
और
बंगाले का राजविद्रोह ।

महम्मद गोरी के मरने के पीछे भारत मे बहुत दिनों तक पठान बादशाह राज करते रहे। इन मे कुछ तो अच्छे और दयावान थे पर बहुधा निठुर और निर्दयी ही हुये। सब से बुरे वह थे जो भोग विलास मे डूबे रहते थे और भारत का शासन दरबारियो के हाथ में छोड़े हुये थे। ऐसे ही दिनो मे डाके पड़ते थे और भांति भांति के अपराध होते थे। निठुर पठान सरदारों का कोई रोकनेवाला तो था ही नहीं और वह बड़े बड़े उपद्रव करते थे। हिन्दुओं के लिये यह बुरा दिन था।

बादशाह बलबन बड़ा शक्तिमान राजा था। यह बड़ा रूखा था और किसी से हंसी दिल्लगी न करता था। इस के चर चारों ओर फैले थे और इसको राजभर की खबरें दिया करते थे। बलवनके एक अनुयायी ने एक नौकर को मरवाडाला था। नौकर की विधवा बादशाह के पास गई और अपना दुख रोई। बलबन को बड़ा क्रोध आया और उसने सरदार को विधवा के सामने इतना पिटवाया कि वह मर गया। यह बादशाह बहुत कड़ा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शासक था पर बड़ा न्यायकारी था और किसी का पक्षपात न करता था।

जब बलबन राजसिंहासन पर बैठा उस समय में उसके राजमें यात्रियों के लिये सड़कों पर कोई सुपास न था। हजारों डाकू बनों में छिपे रहते थे और जो उधर से निकलता था उसे लूट लेते थे। बादशाह ने पहिला काम यह किया कि जंगल कटवाकर डाकू मरवाडाले। डाकू इस रीति से चुक गये और बलबन के राज में सड़कें ऐसी सुरक्षित हो गईं जैसी कभी मुसलमानों के राज मे नथीं।

इसी समय तुग्रल खां बंगाले का हाकिम था। बंगाला भी उन दिनों दिल्ली का एक सूबा था। तुग्रल बिगड़ गया और बंगालेका स्वतंत्र शासक बनबैठा। तुग्रल जाति का तुर्क बड़ा नेक और युद्धनीति का चतुर वीर था। इस कारण बहुत से सरदार उसके साथ हो गये।

तुग्रल का विद्रोह सुलतान को बहुत खला क्यों कि वह सुलतान के बड़े प्यारे दासों में था। क्रोध और शोक मे सुलतान को खाना पीना अच्छा न लगता था। जब उसने सुना कि तुग्रल ने अपने नाम का सिक्का चलाया तो उसके क्रोध का वारपार न रहा और उसने एक सेनापति अबतगीन उपनाम अमीर खां को अपने पुराने दास के दमन करने को भेजा। तुग्रल ने सुलतान की सेना को भगा दिया और सुलतान के कितने सिपाही

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विद्रोहियों से मिलगये। जब इस हारका समाचार बलबन को मिला तो क्रोध और ग्लानि से उसकी छाती जल उठी। उसने हुकुम दिया कि अमीर खां को अवध के फाटक पर फांसी देदो।

इसी साल सुलतान ने तुग़ल को परास्त करने के लिये एक और सेना भेजी। इसे भी तुग़ल ने मार भगाया। अब तो सुलतान के क्रोध की सीमा न रही। बरसात चढ़ी आरही थी तिसपर भी बुड्ढे सुलतान ने दो लाख सिपाहियों की सेना इकट्ठी करके इस विद्रोह की जड़ उखाड़ने के लिये कूच कर दिया। कभी नावों पर कभी पानी में हलती पानी बरसते में सेना बंगाले की ओर बढ़ी।

सुलतान से लोग इतना डरते थे कि उसका नाम सुनते ही तुग़ल और उसकी सेना अपने हाथी घोड़े धन दौलत लिये सब भाग खड़े हुये। सुलतान ने उनका पीछा किया और यह कसम खाई कि जब तक तुग़ल न मारा जायगा दिल्ली लौटना कैसा दिल्ली का नाम भी न लेंगे। एकदिन सुलतान की सेना विद्रोहियो के पास पहुंच गई और चालीस सवार उनके लश्करमें घुस गये। विद्रोही न जानते थे कि सलतान उनके सिरपर आगया है और निश्चिन्त बैठे थे। कोई अपने कपड़े धो रहा था कोई गाता था कोई मद पींता था। हाथी पेड़ो की डालियां तोड़ तोड़ खा रहे थे और घोड़े बैल खेतों में चर रहे थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चालीस सवारों ने अपनी तलवारें सूत लीं और तुग्रल तुग्रल पुकारते लश्कर मे पिल पड़े। तुग्रल अपने डेरेसे निकलकर भागा। उसके सिपाही समझे कि सुलतान पहुंच गया और सब तिड़ी बिड़ी हो गये। तुग्रल के पेट मे एक तीर लगा और वह गिरपड़ा। उसका सिर काटकर सुलतान के आगे रक्खा गया। सैकड़ों सरदार कैद कर लिये गये। इन्ही में तुग्रल के बेटे भी थे।

सुलतान ने चालीसों सवारों को खिलत दी और लखनौती की ओर बढ़ा। यहां भयानक लीला हुई।

तुग्रल खां के सारे लड़के और सरदार जो उसके नौकर थे मार डाले गये और उनकी लाशें लखनौती के बाज़ार में लटका दी गई। दो तीन दिन तक यह हत्याकांड रहा यहांतक कि देखनेवाले देखते देखते घबरागये। भारत मे एसा दंड कभी पहिले नहीं दिया गया था।

सुलतान बलबन ने अपने छोटे लड़के को बंगालेका हाकिम बनाया और उसे राजछत्र दिया। जब चलने लगा तो उसने अपने बेटे से पूछा "महमूद, तुमने देखा।" शाहज़ादा इसको सुनकर चकराया और कुछ न बोला। सुलतान ने फिर पूछा "महमूद ने न देखा।" तीसरी बार सुलतान ने फिर यही प्रश्न किया पर शाहज़ादे ने कुछ उत्तर न दिया। तब उसने कहा "तुम ने बाजार मे देखा कि हम ने कैसा दंड दिया।" शाहज़ादे ने प्रणाम किया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और बोला मै समझगया। सुलतान बोला "देखो और विश्वास रक्खो जो कोई सुलतान के विरुद्ध तलवार उठायेगा वह हमरा बेटा ही क्यों न हो उसको वही दंड दिया जायगा जो तुग्रल को दिया गया है। उसको स्त्री और बच्चे भी उसी दंड के भागी होगें।"

यह भयानक चेतावनी देकर इस निठुर बादशाह ने अपने बेटे को कुछ अच्छे सिखावन भी दिये और उसको गले लगाकर आंसू गिराता हुआ बिदा हुआ।

बहमनी वंश का पहिला बादशाह।

महम्मद तुगलक भी दिल्ली का एक बादशाह था। उसे पीछे दिल्ली के पागल बादशाह की पदवी मिली थी। उसके समय में दिल्ली मे हसन नामका एक अफ़गान रहता था। हसन गंगो नाम एक ज्योतिषी पंडित का नौकर था। ज्योतिषी ने हसन के काम से प्रसन्न होकर उसे एक जोड़ी बैल दिये थे जिससे वह खेती करके अपने दिन काटता था। एक दिन हसन हल जोतरहा था कि हल का फाल किसी चीज़ में अटक गया। हसन ने मिट्टी हटाकर देखा कि तांबे के कलसे में एक जंजीर बंधी हैं। इस कलसे मे सोने की अशरफ़ियां भरी थीं। हसन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किसान था उसने समझा कि यह गड़ा धन मेरा नहीं हो सकता। खेती से जो उपजे वही मुझे लेना चाहिये। यह सोचकर उसने वह धन अपने मालिक को देदिया।

गंगो ने अपने नौकर की ईमानदारी का हाल शाहज़ादे मुहम्मद से कहा और शाहज़ादे ने बादशाह से सारा व्यौरा कह दिया। बादशाह यह सुनकर ऐसा प्रसन्न हुआ कि उसने तुरंत हसन को बुलाकर सौ सवारों का अफ़सर कर दिया। यह पद उन दिनों सरदारी की पहिली सीढ़ी समझी जाती थी। इसके पहिले ही हसन के ब्राह्मण मालिक ने उससे कह दिया था कि तुम एक दिन बड़ी प्रतिष्ठा पाओगे और उस से यह प्रतिज्ञा करा ली थी कि तुम जब कभी बादशाह होना तो मेरे नाम का अपना उपनाम करलेना और मुझे अपना मंत्री बनाना। कुछ दिन पीछे हसन दिल्ली छोड़कर दक्षिण की ओर चला गया और यहां शाहज़ादा महम्मद ने जो इस समय बादशाह हो गया था उसे एक जागीर देदी।

मुहम्मद तुगलक प्रजा पालक न था; वह निर्दयी और विश्वासघातक था। उसके सामने दरबार में कोई बुलाया जाता तो डरता कापता जाता था क्यों कि कभी कभी बिना कारण के भी मुहम्मद तुगलक लोगों को फांसी लटकवा देता था। इसीसे उसके शासन में बहुत से उपद्रव हुये। गुजरात सूबे के अफ़गान सरदार बिगड़ गये और जब बादशाह उनपर चढ़ दौड़ा तो वह दक्षिन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को भाग गये। दखिन प्रांत को जब से वीर अलाउद्दीन ने जीता था तभी से वह पठान साम्राज्य का एक अंग हो गया था। तिस पर भी दखिन के सरदारों ने गुजरात के सरदारों को शरन दी और बादशाह के क्रोध से उनको बचालिया।

. जब बादशाह ने सुना तो उसे बड़ा क्रोध हुआ और उसने दखिन के हाकिम को हुकुम दिया कि दखिन के सारे सरदारों को गुजरात भेज दो। उस समय दखिन की राजधानी दौलताबाद थी। सरदार समझे कि बादशाह उनको मरवाडालेगा और सब बिगड़ खड़े हुये। दखिन के हिन्दू राजा पठान बादशाह से लड़ाई करने का यह अवसर पाकर बहुत प्रसन्न हुये और विद्रोहियों से मिलगये और बात की बात में सारे दखिन में विद्रोह फैल गया। थोड़े ही दिनों में दौलताबाद सरदारों के हाथ मे आगया। इन लोगो ने अपना एक नायक चुन लिया और जिन लोगो ने सहायता की थी उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाई गई और हसन को जफ़र खां की पदवी मिली।

महम्मद शाहने विद्रोहियों को दंड देने के लिये अपनी सेना बढ़ाई पर उनको परास्त न कर सका और इस लड़ाई में जफ़र खां की जय हुई। जब महम्मद शाह की सेना दखिन से लौट आई तब सरदारों ने निश्चय किया कि जफ़र खां को अपना बादशाह बनाना चाहिये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१३४७ ई॰ मे जफ़र खां के सिर पर मुकुट रक्खा गया और उसके सिंहासन के ऊपर काला छत्र लगाया गया। उसके नाम का सिक्का बना और उस पर अलाउद्दीन हसन नाम खोदा गया।

बादशाह अलाउद्दीन हसन ने गुलबर्गे को अपनी राजधानी बनाया और यहां रहकर उसने बड़ी बुद्धिमानी से राजकिया। अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहकर उसने अपने पुराने मालिक गंगो को अपना मंत्री बनाया और अपनी उपाधियों मे गंगो का नाम भी बढ़ा लिया। उसका वंश बहमनी वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। लोगों का यह अनुमान है कि बहमनी शब्द "ब्राह्मण" का अपभ्रंश है और हसन ने गंगों के स्मरणार्थ यह पदवी रक्खी थी। बादशाही मोहर पर गंगो बहमनी शब्द खुदवाया गया और इस वंश के सब बादशाह यही मोहर काम मे लाते रहे। इस वंश मे डेढ़ सौ बरस तक बादशाही रही। बादशाह अलाउद्दीन हसन ने ग्यारह बरस बादशाही की अन्त में उसको ज्वर आया और वह मर गया। एक बार उससे किसी ने पूछा कि विना धन और बिना सेना के आप कैसे बादशाह हो गये। हसन ने उत्तर दिया कि "मित्रों पर दया, शत्रुओं से सौजन्यता और मनुष्यमात्र के साथ अच्छे बर्ताव और दान से"।

बहमनी राज्य भारत में बड़ा शक्तिमान राज्य हो गया है। किसी किसी बहमनी बादशाह के पास तीन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हज़ार हाथी थे। गुजरात इसी का अंश था। उत्तर में यह राज्य सिन्धु नदी के दुबैल बन्दर तक फैला था और पूर्व मे वारंगल की रियासत भी बहमनी बंश के बादशाहों को कर देती थी।

प्रजापालक फ़ीरोज़ तुग़लक़।

सुलतान बलबन को तुमने देखा कि कैसा निठुर था पर वह न्याय करता था। दिल्ली के सिंहासन पर कठोर और निर्दयी बादशाह तो बहुत बैठे न्यायकरनेवाले बिरले ही थे। अब हम तुम्हें एक बड़े सुजन और दयावान पठान बादशाह की कथा सुनाते है जिस के राज में सब को सुखचैन रहा।

सुलतान बलबन के सौ बरस पीछे तुग़लक़ बंश का एक बड़ा सुजन बादशाह जिसका नाम फ़ीरोज़ था दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। फ़ीरोज़ की मा राजपूत राजकुमारी थी इस से उसे आधा हिन्दू कहना अनुचित न होगा। यह बड़ा दयावान था और लड़ाई मारकाट से इसको घृणा थी।

इस बादशाह का वज़ीर भी पहिले का हिन्दू था। मुसलमान होने पर उसका नाम मक़बूल खां हो गया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था। वह भी बड़ा बुद्धिमान और सुजन था। इस मंत्री की सलाह से बादशाह ने प्रजा के कर घटा दिये। उसके राज मे प्रजा धन धान से भरी पुरी रही। अनाज सब के घर भरा पड़ा था। सोना चांदी घर घर उछलता था। कोई स्त्री ऐसी न थी जिसके तन पर गहने न हों।

दिल्ली का राज धन बल से पूर्ण हो गया और सुलतान ने कई अच्छे अच्छे शहर बसाये। इन मे जवनपूर और फ़तेहाबाद प्रसिद्ध हैं।

नये शहरों को पानी की आवश्यकता होती ही है। इस लिये सुलतान ने यमुना और सतलज से नहरें निकलवाईं। इन मे यमुना की एक नहर दिल्ली को आजतक पानी पहुंचाती हैं। ठांव ठांव नये पुल बांधे गये, मसजिदें और मदर्से बने और पुरानी इमारतों की मरम्मत कराई गई।

सुलतान फ़ीरोज़ कंगालों बुड्ढों और अपाहिजों को हर बरस बहुत सा धन बांट दिया करता था। उसने रोगियों के लिये दवाख़ाने बनवादिये। कहां तक कहैं वह अपनी प्रज़ा को ऐसे ही पालता था जैसे बाप अपने बच्चोंको। जब कोई सरकारी नौकर बुड्ढा हो जाता और उससे काम न हो सकता था तो उसके लड़के को उसकी जगह नौकर रख लेता था।

सुलतान फ़ीरोज़ के राज मे सारी प्रजा प्रसन्न थी। किसी को कोई चिन्ता न थी। और न इसके राज में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विद्रोह हुआ और कैसे होता जब सब लोग ऐसे सुजन और धर्मात्मा बादशाह से बड़ी प्रीति रखते थे।

तैमूरलंग।

तातारियों को बादशाह तैमूरलंग की राजधानी समरकंद थी। वहां बैठे बैठे उसके मन मे यह तरंग उठी कि काफिरों को दंड देना चाहिये पर उसने यह निश्चय न किया कि भारत पर चढ़ूँ या चीन पर। उसका मन डांवांडोल था। उसने कुरान खोला तो उसकी आंख इस आयत पर पड़ी "ऐ पैगंबर तू काफिरों और बेईमानों से लड़ और उनको कड़ा दंड दे।"

यह तातार सम्राट चंगेज़ खां के बंश मे था। उसने भारत पर आक्रमण करने के लिये सेना बटोरी। भारत के भी कैसे कैसे बैरी रहे हैं।

बादशाह लंबा और गठीला सुडौल बना हुआ था। उसका सिर बड़ा उसकी आवाज़ भारी और उसकी दाढ़ी लंबी थी। वह लंगड़ा था; इसी से उसे तैमूरलंग कहते हैं और उसका एक हाथ भी कटा था।

बादशाह ने अपने बेटों और अपने सरदारों से अपने मन का भाव कहा। उसका एक बेटा बीर पीरमुहम्मद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

काबुल का हाकिम था। उसने सेना इकट्ठी करने में अपने बाप की सहायता की। एक लड़का और साथ आने को तैयार हो गया और उस ने अपने बाप को भारत के असंख्य धन का लोभ दिलाया। उसने कहा कि भारत मे सत्तरह खानें सोने, चांदी हीरा मानिक रांगे और पारे की हैं, देश सदा हरा भरा रहता और सोहावना लगता है; गन्नों से मीठा रस निकलता है और कपड़ा बनाने के भी पौदे होते हैं।

कुछ लोग भारत से डरते भी थे। वह बोले कि भारतभूमि को चार रक्षाकरनेवाले हैं; एक तो पांच बड़ी बड़ी नदियां हैं जिनका पार करना बिना पुल और बिना नावके महा कठिन है दूसरा रक्षक घने वन और पेड़ झाड़ हैं जो एक दूसरे से फंसे रहते हैं और जिनके मारे पैदल चलना कठिन है। तीसरे रक्षक देशके राजा और रईस हैं जो बनों मे किले बनाकर शेरों की तरह रहते हैं। चौथे रक्षक लड़नेवाले हाथी है जो पाखर पहिने सेना के आगे चलते, अपने सूड़ो से सवार समेत घोड़े को उठा लेते और घुमाकर पटक देते हैं।

तातारवालों ने अपनी बातों से कैसी मूर्खता जनाई। कुछ सरदार बोले कि "सुलतान महमूद ने हिन्दुस्थान जीत लिया था तो उनके लिये क्या कठिनाई है जिनके बादशाह के साथ एक लाख सवार चलने को तयार हैं। हम लोग चलेंगे तो हमारी भी जीत होगी।"

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तैमूर ने जिस दिन भारत आक्रमण करना निश्चय किया था भारतवासियोंके भाग्य फूट गये। फीरोज़ शाह ने सब को धनी और संतुष्ट कर दिया था। जो बोते थे वह काटते थे। उनको किसी का डर न था। लड़ाई और लूट को भूल से गये थे। तैमूरलंग तातारी रुधिर के प्यासे जंगली सवारों को लिये भारत के शांत मैदानों मे पिल पड़ा। उनका अभिप्राय यह था कि काफिरों का बध करें। जो मुसलमान न था वह काफ़िर कहलाता था।

तातारी ने गांवं पर गांवं जलाये शहर पर शहर लूटे एक लाख आदमी कैद कर लिये और उनको भारत में घुमाते फिरे। उनका नाम उनके आगे दौड़ना था। लोग उनका आना सुनते ही घर छोड़कर भाग गये। तातार सेना सूने शहरों और गावों मे होती हुई दिल्ली से कुछ दूर पानीपत के मैदान पर पहुंची। यहां पहिले पहिल उनका सामना करने को एक सेना देख पड़ी।

यह सेना भारत के सुलतान महमूद की कमान में थी जो तुगलक बंश का सब से पिछला बादशाह था। इस सेना के आगे सौ से कुछ अधिक पाखर ओढे और अपने दांतों मे विष की बुझी तलवारे बांधे हाथी खड़े थे। हिन्दुस्थानी सेना के पास तातारिये के घोड़ो के डराने को हवाइयां भी थीं।

तैमूर हिन्दुस्थान की सेना देखकर इतना डरा कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसने कैदियों की रखवाली के लिये एक सिपाही भी

छोड़ना उचित न समझा और हुकुम दिया कि

Jin Gun Aradhak Trust

सब कैदी मार डाले जायं। इतने मे नगाड़े बजे और लड़ाई होने लगी। तातारियों ने अपने बरछों और तीरों से सब हाथी घायल कर दिये और महावत मार डाले। हाथी लौट पड़े और अपने ही दल के सिपाहियों को तित्तर बित्तर कर दिया। सुलतान महमूद अपने हाथी पर दिल्ली भाग आया। उसकी सेना भाग गई और दिल्ली तैमूर के पांव के तले आगई।

तातारियों का अंतिम भयानक हत्याकांड दिल्ली के भीतर हुआ। पहिले तो तैमूर ने यह प्रतिज्ञा की कि किसी को न मारेंगे। पर जब उसके सिपाही शहर लूटने लगे तो कुछ मार पीट हो गई। फिर क्या था लोहू के प्यासे तातारी सिपाहियों ने मार काट मचादी और शहर मे किसी को जीता न छोड़ा। तैमूर ने अपना काम पूरा कर दिया और फिर अपने पहाड़ी देश को लौट गया। रास्ते मे जिधर से हो कर उसकी सेना गई जलते गांव और कटी लाशें देख पड़ती थीं। हिन्दुओं ने उसे ईश्वर के कोप की पदवी दी थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भारत के पुराने व्यापारी।

पुर्तगाल और अरब के सौदागर।

राजराज की कथा मे तुमने पढ़ा है कि चोला राज के व्यापारी यूरप के सौदागरों से व्यापार करते थे। हज़ारों बरस से हिन्दुस्थान के मसालों की उन देशों में बड़ी मांग थी जहां यह पैदा नहीं होते थे। यूरप के सौदागर सोंठ अद्रक मिर्च दारचीनी लौंग, और और मसाले यहां से मोल लेकर अपने देशों को लेजाते थे। मलयवार के मोती, हीरे, कम्ख़ाब, और भारत में कारीगरों की बनाई अनेक वस्तु दुनियाभर मे प्रसिद्ध थीं।

आजकल सारे देशों के जहाज़ समुद्र मे फिरा करते है। यह बात पहिले न थी। जब पठान बादशाह हिन्दुस्थान जीतने की तयारी करते थे और राजपूत आपस मे लड़ रहे थे उस समय केवल एक जाति के लोग मलयवार के बन्दरगाहों से जहाज़ लादकर यूरप को लेजाते थे। यह जहाज़ अरबवालों के थे।

यह तो तुम पढ़ ही चुके कि अरब वाले महम्मद साहेब के दीन में आकर योद्धा होगये और मारते काटते आग लगाते और देशों मे अपने दीन का प्रचार करने लगे। पर अरबवाले व्यापारी भी थे और जहाज़ चलाते थे। उनके जहाज़ इतने बड़े न होते थे जैसे कि आजकल

समुद्र में चलते हैं। पर उन दिनों दुनिया मे इतने आदमी भी न थे और न लोगों को इतनी चीज़ों की आवश्यकता थी। अरब वालों के छोटे जहाज़ जिन्हे धव कहते थे जिद्दा, अदन मसकत के बन्दरगाहों से कालीकट और सिंधुके मुहाने पर देबुल को आते थे। कुछ जहाज़ लाल सागर होकर मिस्र देश को जाते थे और काहिराकी हाट मे अपना माल बेंचते थे। यहां से उह माल सिकंदरिया जाता था और जहाज़ो पर लदकर मध्यसागर होकर यूरप में पहुंचता था।

उनदिनो यूरप मे हिन्दुस्थान का माल इतने महंगे दामो बिकता था कि अरब के सौदागर बड़े धनी होगये और भारत के व्यापार से उनको बड़ा लाभ हुआ। ऐसी दशा मे जब दूसरे देशवालों ने हिन्दुस्थान का माल यूरप मे पहुंचाने की सस्ती और सीधी राह निकाली तो उनको बहुत बुरा लगा। यह दूसरे देशवाले पुर्तगाल के बासी थे।

१४९७ ई० में पुर्तगाल का एक सारंग वास्कोडागामा अपने बादशाह के हुकुम से चार छोटे छोटे जहाज़ लेकर लिस्बन से चला। उस से कहा गया था कि उत्तमाशा अंतरीप का चक्कर लामकर भारत का पता लगाये। इस यात्रा करने का साहस समझ में नही आसकता यदि हम यह न जानें कि उस समय भूगोल का ज्ञान बहुत कम था। वास्कोडागामा के मांझी यह न जानते थे कि पृथिवी गेंद की तरह गोल है। वह समझते थे कि चलते

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चलते ऐसा नहो कि धरती के छोर पर पहुंचजायं और वहां से अन्तरिक्ष मे गिर पड़ें। पर यह साहसी सारंग एक मुसलमान मल्लाह का विश्वास करके जो उसे अफ्रिका के एक बन्दर मे मिला था हिन्द महासागर को चीरता हुआ अपने जहाज़ बढ़ा लाया।

वास्कोडागामा कुशल पूर्वक भारत के समुद्रतट पर पहुंच गया और उसने कालीकटके बन्दर में लंगर डाल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिया। यहां उसने अपने जहाज़ों पर मालभरा और लिस्बन लौट गया। उसके देशवालों ने बड़ी धूम से उसका स्वागत किया। उसका सौदा मोल से साठ गुने दामों पर बिका। पुर्तगाल मे कभी किसी को इतना लाभ न हुआ था।

पर उत्तमाशा अन्तरीप का चक्कर करके समुद्रयात्रा मे उन दिनों बड़ा जोखम था। वास्कोडागामाके साथ लिस्बन से जितने जहाज़ चले थे उनमें से आधेही लौटे वास्को का सगा भाई एक जहाज़ के टकराजाने से डूब गया था।

व्यापारियों का सिरताज अलबुकर्क।

भारतका जलमार्ग ज्योंही निकलआया पुर्तगाल के बादशाहने यहां आने के लिये बहुत से जहाज़ सजवाये। उनमे बहुतेरों मे तोपें भी लगी थी और गोला बारुद भरा था। पुर्तगालवाले बड़े लड़ाके थे और अपने धर्म के पक्षपाती और पर धर्म के बड़े द्वेषी थे। मुसलमानों से उनको बड़ा बैर था क्योंकि महम्मद साहेब की उम्मतवालों ने सारा स्पेन देश और पुर्तगाल जीत लिया था। पुर्तगाल वालों ने मूरों * को अपने देश से निकाल दिया था फिर भी

* मूर उस देश मे मुसलमान को कहते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उनका वैर ठण्डा न हुआ था और उनसे बड़ा विरोध करते थे। अब वह हिन्दसागर मे मुसलमानों से लड़ने और उनका व्यापार नष्ट करने का अवसर पाकर आनंद से फूल गये। पहिले उन लोगों ने कालीकट के बन्दर से व्यापार का लग्गा लगाया। कालीकट एक हिन्दुस्थानी राजा ज़मोरिन के आधीन था। इसके आस पास अरब के बन्दरों के धव खड़े थे। पुर्तगाली सारंग चाहता था कि जहां तक जल्द हो सके अपना माल बेंच के पुर्तगाल लौट जाया पर उसके जहाज़ पर माल लदने मे देर हो रही थी। अब उसने क्या किया कि एक अरब जहाज़ का माल जो भरा खड़ा था उतार कर अपने जहाज़ पर लाद लिया। इस पर लड़ाई हुई और पुर्तगालवालों ने बड़ा दुष्टपना किया। एक बार वास्कोडागामा ने कालीकट के पास एक अरबी बेडा पकड़ लिया और उस पर आठ सौ मांझी मल्लाह थे सब के हाथ नाक कान काट लिये। इससे जमोरिन् बहुत बिगड़ा और उसने पुर्तगाल वालों से व्यापार करना बन्द कर दिया। पुर्तगालवाले लाचार हो कर दूसरे बन्दर की खोज मे समुद्र तट पर चलते चलते कोच्चि पहुंच गये। कई बरस व्यापार और लड़ाई पुर्तगाल के बादशाह ने व्यापार बढ़ाने के लिये योग्य पुरुष भेज दिया। इसका नाम अ अलबुकर्क कट्टर ईसाई और अपने धर्म का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसके चित्त में बड़े बड़े विचार थे। उसकी इच्छा थी कि उसका देश संसार मे सब से बढ जाय। पर अपने देशवासियो की भांति वह भी मुसलमानों का वैरी था। उसने पुर्तगाल के बादशाह से कहा कि मिस्रदेश मे कुछ सेना भेज दीजिये जो नील नदी की धारा भटकाने के लिये दूसरी नहर खोद दे; जिस से नील का पानी

सब लाल सागर में गिर जाय। मिस्र अरबवालों का सबसे धनी देश था। नील भटकाने से मिस्र के खेतों की उपज जाती रहती क्योंकि मिस्र नील ही के आश्रित है और इससे मुसलमानों को बड़ी हानि हो जाती। अलबुकर्क मुसलमानों का बैरी जरूर था फिर भी वह अपने देश का पूरा हितैषी और प्रेमी था। उसने जो कुछ किया अपने देश और अपने राजा के लिये

था। उसकी तजवीज़ से हिन्दुस्थान के समुद्र तट
वैर था
जगह कोठियां बनाई गईं। मलाका जल
स्पेन देश में
और चीन तक पुर्तगालवालों की कोठियां थी।
ने मूरों * को
ने
र मलाकावाली सब से प्रसिद्ध थीं।

* मूर उस देश मे मुसलमं बनवाई थीं। हिन्दसागर मे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अरबी जहाज़ नष्ट हो गये और कुछ दिनों तक पुर्तगाल वासी दुनिया मे सब से बड़े व्यापारी रहे। और आज तक ऐसे ही रहते जो अलबुकर्क के पीछे जो कार्य्य-कारी आये वह भी ऐसे ही उदार और बुद्धिमान होते। पर जो व्यापारी पुर्तगालराजके भेजे पीछे से आये सब डाकू थे। बहुत जल्द धनी बन जाने के लिये वह लोग लूट मार करते थे। बहुतेरे उनमे जल डाकू हो गये और हिन्दुस्थानी हों या युरपवासी सब के बैरी हो गये। अलबुकर्क के ने अपने देश के लिये जो काम उठाया था उसका ऐसा अयोग्य और बुरा अन्त हुआ। पुर्तगालवाले आज कल संसार भरमे फैले है। यह सब उन्ही पुराने समय के पुर्तगाली माझियों के वंश मे हैं।

पुर्तगालराज का भेजा एक बेड़ा आंधी में पढ़कर अटलांटिक सागर के पार उड़गया। यह बेड़ा ब्राज़िल देश मे पहुंच गया और आजदिन तक उसमे पुर्तगाल वासियो ने बंशज रहते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

वीर बाबर ।

जिस समय कालीकट के अरबों से लड़ने के लिये पुर्तगालवाले जहाज़ भेज रहे थे उसी समय अफ़गानिस्तान के पहाड़ी देशों में बाबर अपना राज्य स्थापन करने के लिये लड़ रहा था। इसी बाबर ने पीछे से हिन्दुस्थान भी जीत लिया।

तैमूर को तो तुम जानते ही हो जो समरकंद मे बैठा एक बड़े लंबे चौड़े राज का शासन करता था। तैमूर के मरने पर उसके राज के कई टुकड़े होगये। उसके भाई बन्ध आपस मे लड़े और राज को बांट लिया। तैमूर की छटी पीढ़ी मे शाहज़ादा बाबर फरग़ाने के राज का अधिकारी हुआ। यह राज बहुत दूर आक्सस नदी के तीर फैला हुआ था। बाबर के शरीर मे तुर्की और मुग़ल दोनो जाति का अंश मिला था। इसलिये वह उत्साही भी था और वीर भी था और जैसा वीर था वैसाही चतुर और सुजन था। लड़कपन ही से उस की यह लालसा थी कि समरकंद जीत ले और वहां से तैमूर के बड़े राज्य का शासन करे।

बाबर लड़ाइयों ही मे पला था। पहाड़ी देश मे कई छोटे छोटे सरदार थे। सब की अलग अलग रियासतें और अलग अलग सेना थीं। किसी सरदार ने अपनी प्रतिष्ठा बढाई तो औरोंको दाह होता था और सब उसकी प्रतिष्ठा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

घटाने का उद्योग करते थे। ऐसी दशा में एक छोटी सी रियासत के मालिक बाबर के लिये समरकंद और उसके बड़े राज्य का जीतना कितना कठिन काम था। फिरभी इस वीर ने समरकंद को दोबार जीता ; पर दोनो बार उसके हाथ से निकल गया।

बाबर की दशा विचित्र थी। कभी तो उसके पास बड़ी भारी सेना रहती थी और कभी उसके साथ बहुत थोड़ें सिपही रह जाते थे। जब उसकी हार होती तो उसके सिपाही उसका साथ छोड़कर दूसरे सरदार के पास चले जाते थे। फिर भी बाबर का उत्साह न घटता था और न आपदा मे वह कभी निरास होता था।

एक समय जब उसके बुरे दिन आगये थे और वह अपना सारा राज खो बैठा था, उसने ऐसा कड़ा हल्ला मारा कि फिर सारा देश जीत लिया। इसका ब्यौरा यों है। बाबर समरकंद परास्त करने के लिये चला पर उसके मित्रों ने उसका साथ न दिया और उसे अपनी सेना समेत पहाड़ों और विषम राहों से होकर लौटना पड़ा। इस यात्रा मे उसके ऊंट और घोड़े सब नष्ट भ्रष्ट हो गये और उसकी सेना उसे छोड़कर भाग गई। उसके पास केवल दो सौ चालीस सिपाही बच रहे। उसने अपने सरदारों को बुलाकर पूछा कि अब क्या करना चाहिये। बाबर ने निश्चय कर लिया कि इन थोड़े से भक्त साथियों ही की सहायता से समरकंद जीत लूंगा। वह समरकंद को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ओर चला पर रास्ते में उसका मन डांवां डोल हो गया और उसने सोचा कि मैं ऐसा निश्चय न करता तो अच्छा होता। वह वहीं एक पेड़ से उठंग कर सो गया और एक सपना देखा जिससे उसकी उदासी सब जाती रही और शहर पर धावा मारने को फिर उतारू हो गया। इस सपने का हाल उसने अपने हाथ के लिखे हुये ग्रंथ तुज़क बाबरी मे लिखा है।

बाबर की छोटी सी पल्टन घोड़ों पर सवार आधी रात को मोघट के पुल पर पहुंची। यहां से बाबर ने आठ सिपाही खोह के पास जहां कोट कुछ नीचा है भेज दिये और आप फीरोज़ फाटक की ओर बढ़ा और वहां पहुंचकर पहरेवाले को मारडाला। फाटक खुला था और बाबर अपने दोसौ चालीस साथियों समेत शहर में घुस गया। उसके सिपाहियों ने "बाबर बाबर" की चिल्लाहट मचादी और ऐसा रौला किया कि लोग नींद से चौंक पड़े और अपने प्राणों के भय से चारों ओर भागने लगे। इस अनोखी चाल से बाबरने उन्तीस बरस की उमर में समरकंद को जीत लिया।"

कुछ दिन पीछे बाबर ने समरकंद के आस पास का राज स्वाधीन करने का बिचार छोड़ दिया और भारत को परास्त करना निश्चय कर लिया। उसने चार बार हिन्दुस्थान पर चढ़ाईकी पर चारों बार उसका उद्योग निष्फल हुआ। इस समय वह काबुलपर शासन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करता था। जब काबुल छोड़कर वह हिन्दुस्थान मे आया तो पीछे से बैरियों ने काबुल पर धावा मार दिया। बाबर को अपने देश लौट जाना पड़ा। जब उसने पांचवीं बार भारत पर चढ़ाई की तो दिल्ली से कुछ दूर पानीपत तक चला गया। यहा उसकी मुढ़भेर दिल्ली के पठान बादशाह इब्राहीम लोदी के साथ हुई। बाबर की सेना मे तेरह हज़ार सिपाही थे। इब्राहीम की सेना बहुत बड़ी थी और उसके साथ सौ हाथी भी थे। मुगलों की सेना के बीच में बड़ी बड़ी तोपें चमड़े के रस्सों से बंधी रक्खी थी। हिन्दुस्थान की सेना ने मुगलों पर धावा मारा। मुगल पीछे न हटे। फिर मुगल सवारों की एक पल्टन दोनो ओर से पीछे से जाकर हिन्दुस्थानी सेना पर टूट पड़ी। हिन्दुस्थानी सेना तितर बितर होकर भाग गई। इब्राहीम के सारे पठान सिपाही मारे गये और उसकी लाश लड़ाई के मैदान मे खड़ी मिली। बहुत से सिपाही और हाथी पकड़ लिये गये और बादशाह का सिर काटकर बाबर को भेंट किया गया। लड़ाई के ६ दिन पीछे दिल्ली की मसजिद में मोगलवंश के पहिले सम्राट के नाम का खुतबा पढ़ागया।

हिन्दुस्थान के सम्राट होने पर बाबर ने बादशाह की पदवी धारण की। इसे बहुत सी लड़ाइयां लड़नी पड़ीं तब सब लोग इसके आधीन होगये। सब से भारी लड़ाई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aradhak Trust

राजपूतों से लड़ी गई जिसमें चित्तौर का राना सांगा उनका नायक था। इस लड़ाई में राजपूत हार गये।

हुमायूं।

हिन्दुस्थान जीतने के पीछे बाबर बहुत दिन न जिया। उसको ज्वर आया और वह चार ही बरस राज करके मर गया। उसके पीछे उसका बेटा हुमायूं तख़्त पर बैठा। यह बादशाह बड़ा वीर और उदार था। पर इस नये देश में इसके बैरी बहुत थे। इन में बिहार का वली सरदार शेरखां और गुजरात का हाकिम बहादुर शाह मुख्य थे।

गुजरात के बादशाह के साथ लड़ाई में हुमायूं एक रात अपने कुछ सिपाही लेकर ऊंचे पत्थर के कोट पर चढ़कर गढ़ मे घुस गया और जो बैरी के सिपाही कोट को रक्षा कर रहे थे उन्हें मार कर भगा दिया। उसकी वीरता उसके हंसोड़पन और सब के साथ अच्छे बर्त्ताव के कारण लोग उसे बहुत चाहते थे। पर उस में एक दोष था जिस से उसका राज उसके हाथ से निकल गया। वह विषय भोग मे डूबा रहता था और अपना समय व्यर्थ नष्ट किया करता था। उसने कई लड़ाइयां

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जीतीं। पर जब जब उसकी जय होती वह या तो आगरे चला जाता या कहीं डेरा डालकर नाचरंग में लग जाता और इसी अवसर में उसके बैरी फिर सेना इकट्ठी करलेते और उस पर चढ़ दौड़ते। हुमायूं का भाई कामरां जो उस समय लाहौर का बादशाह था उससे जलता था और कभी उसका सहायक न हुआ।

कई लड़ाइयों के पीछे हुमायूं की सेना धोखा देकर नष्ट कर डाली गई। वह शेर शाह के साथ लड़ने को सेना लिये तैयार था। शेरशाह ने कहला भेजा कि आइये हम लोग संधि करलें और लड़ाई भिड़ाई से हाथ खींचें। हुमायूं बीर और उदार था उसको कभी धोखे का संदेह भी न हुआ; पर संधि की बात अफ़गान सरदार की एक चाल थी। हुमायूं और उसके सिपाही पठान की बातों में आकर अपने डेरों में निश्चिन्त पड़े सोरहे थे और पठानों ने उन पर छापा मार दिया। हुमायूं के सारे सिपाही काट डाले गये या गंगा मे डूब कर मर गये। हुमायूं एक साधारण सिपाही की मदद से गंगा पार हो गया और भाग कर आगरे पहुंचा। यहां उस उदार सम्राट ने सिपाही को आधे दिनके लिये बादशाह बना दिया और इस आधे दिन में सिपाही ने अपने इष्ट मित्रों बहुत सा धन बांट दिया।

दूसरे बरस हुमायूं ने फिर एक बड़ी सेना इकट्ठी की और पठानों के साथ कनौज के पास गंगा की लड़ाई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुई। हुमायूं के बहुतेरे अफ़गान सिपाही शेरशाह की ओर चले गये। हुमायूं हार गया और राजपूताने की तरफ़ भागा। उसके पास बहुत थोड़ी सेना बची थी। इसको लेकर पश्चिम चलागया; पीछे अफ़गान सिपाही लगे थे। राजपूताने के रेते मे एक जगह उसके सिपाही छूट गये और उसके साथ केवल बीस वीर बच रहे। एक बार तीन दिन तक इन लोगों को पानी न मिला, चौथे दिन एक कुआं देख पड़ा पर उस मे पानी इतनी दूर था कि चरस के बैल हांकने वालों को चरस कुयें पर पहुंचने की सूचना देने के लिये ढोल बजाया जाता था; उसे भी न सुन सकते थे।

चलते चलते हुमायूं अमरकोट पहुंचा। यहां के राना ने उसकी आवभगत की। यहीं अमरकोट मे चौदहवीं अक्तूबर १४५२ ई० को हुमायूं के बेटा पैदा हुआ। हुमायूं ने उसका अकबर नाम रक्खा।

यहां से हुमायूं क़न्दहार गया और वहां से फ़ारसराज के सीस्तां में पहुंचा। फ़ारस के बादशाह तहमास्प ने इस भाग्यहीन हुमायूं को अपने दरबार में बुलाया। हुमायूं फ़ारस की राजधानी इसफ़हान मे कुछदिन रहा। फ़ारस के बादशाह ने उसके साथ बहुत अच्छा बर्त्ताव किया और उससे कहा कि आप फिर अपना राज्य जीतने का उद्योग करें हम आपको मदद देंगे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शेरशाह सूर।

शेरशाह सूर के लड़कपन का नाम फ़रीद था। वह गोर के राज बंश से था और उसके कुल का नाम सूर था। फरीद को लड़कपन में अपने पिताके घर कोई सुख न मिला इस कारण वह जौनपुर चला आया और यहां उसने साधारण सिपाही की नौकरी कर ली। इस छोटे पद से बढ़ते बढ़ते वह हिन्दुस्थान का बादशाह हो गया। फ़रीद का कोई काम सफल न होता तो उसके कोई बली हित बंधु न था जिससे वह सहायता मांगता। इस कारण उसने ऐसा कोई काम ही न किया जिसमें उसे सफलता न हो। कभी कभी उसने अपना कार्य्य सिद्ध करने के लिये अनुचित काम भी कर डाले और व्यवहार में वह कभी कभी झूंट बोलता और विश्वासघात करता था। फिर भी फ़रीद बड़ा आदमी था। उसे इतिहास पढ़ने और कबिता करने का बड़ा शौक़ था।

जब फरीद कुछ दिन तक जौनपुर में नौकरी कर चुका तो उसके बापने उसे अपनी जागीर दे दी। जागीर लेते समय फ़रीद ने कहा कि राज की नेंव न्याय पर जमती है इसलिये मैं कभी न्याय की राहसे न हटूंगा। यह बड़ी बुद्धिमानी का वचन था और फ़रीद अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा। उस की जागीर सदा हरी भरी रही। लोग धन धान से भरे पुरे रहते थे और उसको समय पर माल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गुज़ारी देते थे। कुछ दिन पीछे फ़रीद के हाथ से उसकी जागीर जाती रही। तब उसने बिहार के बादशाह के बेटे के यहां नौकरी कर ली। एक दिन जब बादशाह शिकार खेल रहेथे, तो एक शेर उनपर झपटा। फरीद बीचमें आ गया और अपनी तलवार की एक वारसे शेर को मार डाला। बादशाह ने उसी समय फरीद को शेर खां की पदवी दी और इसी नाम से वह प्रसिद्ध हुआ।

शेरखां थोड़ी ही उमर में एक बार बाबर की लशकर में गया और वहां बादशाह के सामने उस की देशी हुई। एक दिन वह बादशाही डेरे मे खाना खाने बैठा। मांस काटने को उसके पास छुरी न थी। उसने चट अपनी कटार निकाली और उससे मांस के छोटेछोटे टुकड़े करके पेट भर भोजन कर खाया।

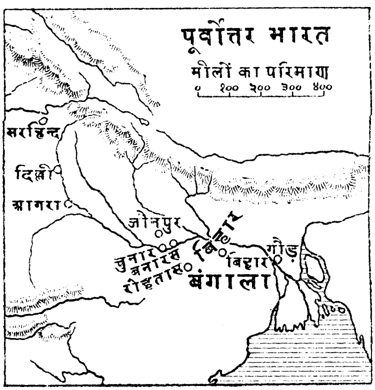

बादशाह ने यह चरित्र देख कर कहा कि यह पठान छोटी छोटी बातों से नहीं रुक सकता; यह एक दिन बहुत बड़ा आदमी होगा।

शेरखां बिहार के बादशाह की नौकरी में बढ़ते बढ़ते इतना बढ़ गया कि उसका बादशाह नाम मात्र का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रह गया और शेरखां ही बादशाही करने लगा। पर विहार का बादशाह उस समय निरा लड़का था। वह बंगाले के बादशाह के पास चला गया और उससे शेर खां को निकाल देने के लिये सहायता मांगी। बंगाले के बादशाह ने शेर खां पर चढ़ाई कर दी। बंगाली सेना हार गई और अनेक हाथी और बहुत सा रुपया पैसा शेर खां के हाथ लगा। इसके पीछे उसने चुनार की गढ़ी सरकी और रोहतास गढ़ जो संसार में सबसे सुरक्षित और दृढ़ समझा जाता था बड़ी चालाकी से ले लिया। उसने क्षत्रिय राजा से कहला भेजा कि मैं बंगाले पर चढ़ाई करना चाहता हूं जब तक लड़ाई रहै तुम मेरे बाल बच्चों और मेरे ख़ज़ाने को अपने गढ़ में रखलो मैं मारा भी जाऊं तो मैं चाहता हूं कि मेरा ख़ज़ाना तुम ही को मिले। राजाने उसके बालबच्चों को अपनी रक्षा में रखना स्वीकार कर लिया। कदाचित उसके विचार में यह भी आया हो कि धन मेरे हाथ में आ जाय फिर कैसे निकलेगा। यह निश्चय होने पर गढ़के आगे सकड़ी राहपर सैकड़ों डोलियां चलीं। डोलियों के पीछे कुली थैलियां लिये खड़े थे। डोलियों में स्त्रियों के बदले पठान सिपाही थे और थैलियों में रुपयों के बदले सीसे की गोलियां थीं। आगे के दो चार डोलियों पर कुछ बुड्ढी औरतें बैठी थीं। राजाने यह डोलियां देखीं और समझे की सबमें स्त्रियां ही हैं और फिर किसी को गढ़ के अन्दर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाने से न रोका। राजा तो थैलियां गिनने में लग गये और अफ़गान सिपाहियों ने डोलियों से कूद कूद कर गढ़के भीतर मार काट मचादी और गढ़ी सर हो गई।

शेर खां कुछ दिनों में इतना बली हो गया कि वह मुगलों का सामना कर सका। उसने बंगाले की पुरानी राजधानी को अपने अधीन कर लिया। अब वह शेर खां न रह गया शेर शाह हो गया। यह तो तुम पढ़ही चुके हो कि उसने हुमायूं को धोखा देकर परास्त किया था। और हुमायूं के साथ अन्तिम लड़ाई के पीछे उसने मुग़लों को देश से निकाल दिया। अब वह बुढ़ापे में हिन्दुस्थान का बादशाह हो गया। बादशाह होने पर उसने अपने राज्य का प्रबन्ध उसी उत्तम रीति से किया जैसे उसने अपनी जागीर का किया था। उसने बंगाले से सिन्ध तक दो हज़ार मील लम्बी सड़क निकलवाई और उस सड़क के बीच बीच में सैकड़ों सरायें बनवा दीं। सड़क के किनारे दोनों ओर पेड़ लगवा दिये जिनकी छांह में बटोही सुख से चले जांय और उनका फल खांय। दो दो चार चार कोस पर कुयें खोदवा दिये और सवारों की चौकियां बैठवा दीं जिनका काम केवल सरकार को खबर पहुंचाना ही न था वरन् व्यापारियों की रक्षा और सहायता करना भी था।

शेरशाहने अपने विश्वासी हाकिम अपने राज्य में चारों ओर नियुत कर दिये। उनका काम यही न था कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सरकारी मालगुज़ारी वसूल करें पर यह भी था कि राह के चोर डाकुओं का दमन करें और सरायों की मरम्मत कराते रहें।

लोग कहते हैं कि शेरशाह के राज में एक बुढ़िया सोनेके गहनों का टोकरा अपने सिरपर रक्खे जहां चाहती वहां चली जाती। बादशाह के हाकिमों का इतना डर था कि किसी चोर की मजाल न थी कि उसके पास फटकता।

शेरशाह ज़न्म का राजकुमार होता और उसे दया धर्म्म की शिक्षा मिली होती, राजघर में पलाहोता और उसे अपनी उन्नति के लिये इतनी लड़ाइयां न करनी पड़तीं तो वह बहुत ही अच्छा और बहुत बड़ा बादशाह होता।

शेरशाहके मरने पर उसका बेटा सलीम सूर बादशाह हुआ। उसके समय में सारा अधिकार उसके मंत्री के हाथ में लगा। राज्य में बड़ा गड़बड़ मच गया। इसी अवसर पर बीर हुमांयू ने फ़ारस के बादशाह की मदद से हिन्दुस्थान पर चढ़ाई करदी। उसके साथ उसका विश्वासी सेनापति बैराम खां था जिसने संकट में उसका साथ न छोड़ा था। सरहिन्द के स्थान पर सलीम के साथ बड़ी लड़ाई हुई। हुमायू जीत गया और दिल्ली में आकर फिर अपने तख़्त पर बैठा। इस विजय का सुख भोगने के लिये वह बहुत दिन नजिया। एक दिन महल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में पत्थर की सीढ़ी पर उस का पांव फिसल गया और वह गिर कर मर गया।

अकबर।

संसार मे बादशाह तो बहुत हुये और होते ही रहते हैं पर अकबर के बराबर उदार बिरला ही कोई हुआ होगा। वह इतना बड़ा और ऐसा शक्तिमान था कि वह अपने बैरियों का अपराध क्षमा करने मे कभी मीन मेष न करता था। वह जानता था कि मै जब चाहूं इनका सिर कुचल सकता हूं। क्षमा करके अपनी उदारता दिखा ने मे मेरी हानि ही क्या है। उदार और सुशील दानी और मानद होने से उसने अपने दरबार में अच्छे अच्छे लोग जमा कर लिये। उसके सेवक उसका इतना आदर करते और उसे इतना चाहते थे कि उसके लिये मरने को तय्यार थे।

एकबार बादशाह अकबर घोड़े पर सवार अजमेर से आगरे को आ रहे थे कि राह मे एक सिंहिनी आकर खड़ी हो गई। बादशाह घोड़े परसे उतर पड़े और उसपर बन्दूक चलाई। गोली सिंहिनी के सिर के उपर से निकलगई और सिंहिनी बादशाह पर झपटी। बादशाहने उसपर फिर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गोली चलाई और वह घायल होगई। इसी अवसर पर अकबर के एक वीर साथी ने उसे तीर मारे ; सिंहिनी बादशाह को छोड़ उसपर झपटी और उसे पटक दिया और उसका सिर पकड़ने को थी जब उस वीर सिपाही ने अपना हाथ उसके मुंह मे घुसेड़ दिया पीछे दूसरे हाथ से कटार निकलकर उसकी कोख में भोंक दिया। उसके साथी सिंहिनी को मारने दौड़े पर उस बेचारे को सिंहिनी ने इतना चबा डाला था कि वह मर

गया और अपने प्राण देकर अपने स्वामी से उरिन हो गया।

अकबर के राज मे कई लड़ाइयां हुई पर सदा उसके सिपाहियों ने बड़ी स्वामिभक्ति दिखाई। बादशाह भी उनका बड़ा मान आदर करता था। जब बादशाह ने चितौर गढ़ पर चढ़ाई की थी तो उसने गढ़के कोट तक खाई खोदने के जोखम मे पड़ने को किसी को बाध्य न किया। उसने यही कहा कि जो इस जोखम मे पड़ना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चाहें उन्हें बहुत सा रुपया दिया जायगा। अकबर बड़ा उदार था। जिन राजाओं नवाबों ने उससे लड़ाई की उनको परास्त करके उनके प्राण तो सदा बचाता ही रहा; जो उसके साथ रहकर विद्रोही हो गये उनपर भी उसने दया की। जब अकबर सिंहासन पर बैठा था तो उसका बड़ा विश्वास पात्र उसके बापका सच्चा दोस्त और सेनापति बैरामखां था। बैराम अकबर का उस्ताद था और खानबाबा कहलाता था। इसी सच्चे हित और दृढ़ चित्त बैराम की सलाह मानने से अकबर ने हेमूं को परास्त किया और दृढ़ होकर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। हुमायूं के मरने पर हीमू ने दिल्ली पर अपना अधिकार जमा लिया था और मुगल सेनाके बराबर एक सेना लेकर अकबर पर चढ़ गया था। अकबर के जितने सलाहकार थे सब ने कहा कि दिल्ली छोड़कर काबुल लौट जाना चाहिये। एक बैराम खां ने न माना। अकबर की उमर उस समय बहुत कम थी। उसके मन में बैराम खां की बात गड़ गई। हीमू भी बड़ी बहादुरी से लड़ा पर अकबर की सेना की वीरता और बैराम खां की बुद्धिमानीसे उसकी हार हो गई।

बैराम खां में एक बड़ा दोष था। वह बड़ा अभिमानी और हठी था। जब हुमायूं मारा मारा फिरता था उस समय बैराम हो ने उसका साथ दिया था। उसी की सहायता से हुमायूं को फिर बादशाही मिल गई थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसके जी में यह न आता था कि अपने खिलाये बच्चे को सब अधिकार देकर उसका आश्रित बन जाय। बैराम खां के अभिमान और उसके स्वतंत्र व्यवहार से दरबार मे उसके बहुत से बैरी हो गये थे जो उसके और बादशाह के बीच मे फूट डाल रहे थे। अकबर को बैराम खां पर पूरा विश्वास था और उसने किसी की न सुनी। फिर भी दोनो के मनों में मैल जमता गया। बैराम खां अपने अधिकार कम करना न चाहता था ; परिणाम यह हुआ कि अकबर उससे अलग हो गया। बैराम खां के मनमे राजविद्रोह समाया। पर पुराने संबंध की सुध करके वह पछताया और बादशाह के पास अपना सेवक भेजकर क्षमा मांगी। अकबर ने बैराम खां से कहला भेजा कि आपके सब अपराध क्षमा कर दिये गये आप दरबार मे आइये। दरबार मे आते ही बुड्ढे मंत्री ने गले मे अपनी पगड़ी डालदी और आंसू गिराता हुआ बादशाह के पैरों पर गिर पड़ा। अकबर ने हाथ बढ़ाकर उसको उठालिया और सरदारोंके ऊपर पुरानी जगह पर उसको बैठा दिया। अकबर ने तो उसका अपराध क्षमा कर दिया पर उसको बड़ी ग्लानि हुई और मक्के को हज करने चला गया। पर उसकी मनोकामना पूरी न हुई और राह ही मे उसे मौत ने आघेरा।

अकबर ने बहुत दिनों तक राज किया। उसका राज नित बढ़ता जाता था और उसे नित नये मित्र मिलते

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रहे। उसके दरबार में उसका परम मित्र और मंत्री अबुलफ़ज़ल था जिसने उसके समय का इतिहास लिखा है; फ़ैज़ी जिसने मुसलमान होकर संस्कृत पढ़ी और संस्कृत के अनेक ग्रंथो का फ़ारसी कविता मे अनुवाद किया; राजा टोडरमल जिसके सुप्रबंध मे देश मे मालगुज़ारी का बंदोबस्त हुआ; राजा मानसिंह, राजा भगवान दास और अनेक वीर राजपूत राजकुमार। अकबर के राजमे किसी का कोई धर्म क्यों न हो सब दरबार मे आसकते थे। अकबरने अनेक राजपूत राजकुमारियों के साथ अपना विवाह किया। राजा टोडरमल ने जो सुप्रबंध पठान बादशाह शेर शाह के समय में किया था वही अकबर के राज मे भी करता रहा। प्रजा से बहुत ही उचित महसूल लिये जाते थे। सड़कों पर चोर बटपार न लगते, प्रजा सुचित और संतुष्ट थी। पठानों के राज मे बहुत दिनो तक दुख झेल कर अब शांति पाकर सुख चैन से रहते थे।

आगरे मे बादशाह का बड़ा भारी दरबार था। बादशाही तवेले मे पांच हज़ार हाथी और बारह हज़ार घोड़े थे। एक हजार बघेरे और चीते शिकार खेलना सिखाये गये थे। बादशाह ने फतेहपूर सिकरी मे भी एक महल बनवाया था जिसमे रत्न ढेर के ढेर भरे थे। इस महल के आंगन मे संगमरमर का फरश था जिसके बीच बीच मे फौआरे चलते थे और जिसपर उत्तम

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वस्त्र पहिने कवि, वीर योद्धा और मंत्री फिरा करते थे।

अकबर के मरते समय उसका राज पश्चिम समुद्रतट से बंगाले की खाड़ी तक और काबुल से दखिन तक फैला हुआ था। अकबर ने कई राजपूत राजा जीतकर अपने मित्र बनालिये। उसकी सेना मे राजपूत सेनापति थे और जिस मंत्री ने राज्य के सूबे बांटें और मालगुज़ारी तहसील करने का बन्दोबस्त किया वह भी क्षत्रिय था।

अकबर पचास बरस राज करके १६०५ ई० मे परलोक सिधारा। उसके राज्य का ब्यौरा उसके मित्र अबुलफ़ज़ल ने अपने आईने अकबरी नाम ग्रंथ मे लिखा है।

एक वीर रानी।

यह तुम पढ़ चुके कि दखिन मे हसन पठान ने बहमनी राज्य स्थापित किया और उसका वंश गंगो बहमनी वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बहमनीराज ने बड़ी उन्नति की और बड़ा समृद्ध हुआ। जिस समय मुग़ल बाबर अफ़ग़ानिस्थान मे लड़ाई कर रहा था उसी समय बहमनी राज भारतखंड मे सब से बढ़ा हुआ था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर इस के भी दिन पूरे हो चुके थे और भारत में बाबर के आने से पहिले ही बहमनीराज्य छिन्न भिन्न होगया था और उसकी जगह कई छोटे छोटे राज्य बन गये थे। इन राज्यों की राजधानियां, बरार, बीजापुर, बीदर, अहमदनगर और गोलकुंडा थीं। यह कथा अहमदनगर की है। अहमदनगर के बादशाह निज़ामशाहीवंश के थे। इस वंश के आठवें बादशाह के मरने पर राज्य का कोई उत्तराधिकारी न रहा। इसपर सरदारों मे बड़ा झगड़ा हुआ। राज्य का हबशी सेनापति कुछ चाहता था और वजीर मियां मांझू कुछ और; और पिछले बादशाह की चची चांद बीबी आप राजकरना चाहती थी। इस समय अहमदनगर में बड़ा उपद्रव मचा। अहमदनगर में हबशी बहुत थे। उनका बल बढ़ता देख मियां मंझूने अकबर के बेटे मुराद से जो उन दिनो गुजरात मे था सहायता मांगी और राज चांद बीबी को सौंपकर अहमदनगर छोड़कर चला गया।

अकबर का यश और प्रताप ऐसा प्रबल था कि उसका नाम सुनते ही वैरियों के छक्के छूट जाते थे। चांदबीबी ने सुना कि शाहजादा मुराद मुगलों और राजपूतों की सेना लिये अहमदनगर पर चढ़ा आरहा है। पर चांदबीबी का उत्साह न घटा। उसके दो वीर सेनानायक पल्टनों के साथ बाहर चले गये थे। शहर में अकेली चांदबीबी दस बीस हजार सिपाहियों के साथ रह गई। फिर भी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वह भयभीत न हुई। उसको शहर के दृढ़ कोट और अपने सिपाहियों की बीरता पर पूरा भरोसा था। उसने कोट के ऊपर तोपें चढ़वादीं और गोले बारूद के ढेर लगवा दिये और बाहर से जितनी खाने पीने की सामग्री आसकी सब क़िले में भर ली। जब सब ठीक हो गया तो बादशाह की चढ़ाई की राह देखने लगी।

एक दिन उस वीर मलका को कोट के ऊपर से मुगल सेना दल बादल की तरह आती देख पड़ी। मुगल सेना में सवार और पैदल तो थे ही बहुत सी तोपें और कई कारीगर भी साथ थे। शहर में शांति रही। दूसरे दिन रक्षकों ने देखा कि शाहज़ादा मुराद अपने लशकर से निकलकर कुछ सेनापति और शिल्पविज्ञानियों के साथ शहर की ओर चला आरहा है। शाहजादे ने हुकुम दिया कि मोरचाबन्दी की जाय जिस मे सिपाही ओट में बैठकर क़िले पर गोले चलावें और आप गोलों की मार से बचे रहें। शाहजादा सेनापतियों को गढ़ घेरने की रीति बता रहा था। उस समय अहमदनगरवालों के मन में कैसी चिन्ता रही होगी। अहमद नगर का कोट इतना ऊंचा था कि उसपर चढ़कर गढ़ जीतने की आशा करना व्यर्थ समझागया। अब एक उपाय यह रहा कि कोट मे छेद करदिये जायं जिसमें होकर मुग़ल सिपाही धावा मारकर शहर में घुस जायं। मुगल कारीगरों ने सुरंग खोदी और कोट के नीचे पहुंच

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गए और यह विचार किया कि सुरंगोंमे बारूद भरकर कोट उड़ा दें।

इसी अवसर में चांदबीबी के सिपाही भी सुरंग खोदने लगे। उनका यह अभिप्राय था कि मुगलों की सुरंगों तक पहुंचकर उनको नष्ट करदें। तीन सुरंगों का पता लगा। पर अहमदनगर के वीर उन तक पहुंचने न पाये थे कि मुगलों ने उनमें रंजक देदी। सुरंग उड़ते ही बड़ा शब्द हुआ और आकाश में धुआं छागया। थोड़ी देर पीछे लोगों ने देखा कि कोट में बड़ी भारी सेंध हो गई है। मुगल सिपाही इस सेंध मे घुस पड़े और अहमद-नगरवाले भागने लगे। वीर मलका चांदबीबी ने बड़ी धीरतासे कवच पहना चेहरे पर नकाब * डाला और नंगी तलवार हाथ में लिये कोट की रक्षा को झपटी। उसके सेनापतियों का साहस बढ़ा। उसके सिपाही सब फिर इकट्ठे हो गये फिर मुगलों का सेंध मे घुसना कठिन हो गया। कोट के आगे खाई लाशों से भरगई और सांझ होने न पाई थी कि मुगल सिपाही कोट के आगे से हट गये।

चांदबीबी की वीरता की प्रशंसा उसके सैनिकों ने तो कोही अकबर के सरदार भी उसे देखकर दंग होगये।

---

* मुसलमान स्त्रियां घूंघट के बदले एक अलग वस्त्र से चेहारा छिपालेती है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उस दिन से उसका नाम चांद सुलताना पड़ गया। रात भर वह वीर रानी खड़ी खड़ी कोट की मरम्मत कराती रही। सवेरे लोगो ने देखा कि भीत पांच हाथ ऊंची खड़ी है। दूसरे दिन उसने अपने उन सेनापतियों को बुलाने के लिये दूत भेजा जो बाहर गये थे। इस दूत को चिट्ठी समेत शाहज़ादा मुराद के सिपाहियों ने पकड़लिया।

शाहजादा मलका की बीरता देखकर ऐसा प्रसन्न था कि उसने अपने सिपाही के हाथ चांदबीबी की चिट्ठी उसके सेनापतियों के पास भिजवादी। इस लड़ाई के पीछे मुंगलों ने अहमदनगर का घेरा उठा लिया और सन्धि कर ली।

इस रीति से इस बहादुर मलका ने अपने देश की स्वतंत्रता स्थिर रक्खी और अपनी कीर्ति अचल कर दी।

तुलसीदास।

भारतेन्दुबाबू हरिश्चन्द्र ने स्वामी शंकराचार्य के जीवन चरित के प्रारंभ में लिखा है।

"धन्य वह ईश्वर है जो अपनी सृष्टि में अनेक अद्भुत शक्ति के मनुष्यों को उत्पन्न करता है और उनके द्वारा लोगो की पहिले चाल चलन को बदल देता है। फिर कुछ काल के अनन्तर दूसरे को उत्पन्न करता हुआ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उससे भी वैसाही कराता है; इसी प्रकार से अपने सृष्टिक्रम को निरन्तर चलाता है।" शंकर स्वामी ने बौद्धमत को भारतवर्ष से निकाल दिया और अपना स्मार्त

तुलसीदास।

धर्म चलाया पर गोस्वामी तुलसीदास को बनाकर ईश्वर ने उत्तर भारत के हिन्दू वासियों को अधर्म के अंधे कुएं में गिरते गिरते बचा लिया।

जबसे पठानों की दृष्टि भारतपर पड़ी और महमूद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गज़नवी की लूट मार पृथिवीराज की हार, पठानों के अधिकार और अत्याचार ने भारतवासियों को दिन खाना और रात सुख से सोना कठिन कर दिया तब से लोगों के प्राणों के लाले पड़े रहे थे। संस्कृत पढ़कर अपना धर्म जानने का किसको अवकाश मिलता था। बलबन का लखनौती का कृत्य, तैमूर के दिल्ली में भारतवासियों के सिरों का स्तंभ स्मरण करने ही से रोयें खड़े हो जाते हैं। जिन नगरों में यह दृश्य देखेगये वहां के रहने वालों की दशा कैसे बखानी जाय; जिन्हों ने सुना होगा वह भी त्राहि भगवान पुकारते रहे होंगे। कहीं कहीं भोग विलास की इच्छा करने वालों ने धर्म के नाम से अपनी कामना पूरी करने का उद्योग किया पर इससे धर्म की और अवनति होती गई। तीन सौ बरस पीछे इस देश के भाग्य उदय हुये और इसमे सुशासन करने के लिये १५४२ ई० में अकबर का जन्म हुआ जिसकी कीर्त्ति हम तुमको अभी सुना चुके। अकबर ने इस देश में शांति स्थापन करने के लिये बहुत कुछ उपाय किये पर हिन्दुओं को चित्त की शांति देने वाले की फिर भी आवश्यकता रह गई। यह शांति देने वाला जो पीछे गोस्वामी तुलसीदासके नाम से जगद्विख्यात हुआ बांदे के जिले में यमुना के किनारे राजापूर मे या उसके पास एक गांव मे १५४३ ई० मे अकबर से सालभर पीछे ब्राह्मण के कुल में पैदा हुआ था। इनका बचपन कैसे कटा यह अभी तक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

निश्चित नही हुआ पर इस मे सन्देह नहीं है कि माता पिता के लालन पालन का सुख इनके भाग्य में न था। कोई कहता है कि इनका जन्म अभुक्त मूल में हुआ था। इससे मा बापने इन्हें त्याग दिया। कोई कहता है कि दोनों बचपन ही मे मरगये थे। तुलसीदास जी आप लिखते हैं कि मेरा बालपन बड़े दुख से कटा था।

"बारे ते ललात बिललात द्वार द्वार पुनि जानत हौं चारि फल चारि ही चनक को"

मैं भीख मांगता फिरता था किसी ने चार चने दे दिये तो समझा कि धर्म अर्थ काम मोक्ष सब मिल गये।"

कथा प्रसिद्ध है कि यमुना इस पार एक गांव के रहने वाले दीनबंधु पाठक की लड़की रत्नावली के साथ इनका विवाह हुआ था। इन को अपनी स्त्री से बड़ी प्रीति थी। एक दिन इन से बिना पूछे वह अपने बाप के घर चली आई। तुलसीदास जी घर आये और अपनी स्त्री को न देखा तो व्याकुल होकर तुरंत सुसराल पहुंचे। इन की स्त्री को कुछ बुरा लगा और बोल उठी कि जितनी तुमको मेरे इस हाड़ मास के शरीर से प्रीति है उतनी जो ईश्वर मे होती तो तुम्हें जन्म मरण का डर न रहता। यह बात तुलसीदास जी को लग गई और

चरितावली—स्वामी शंकराचार्य।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वहां से तुरंत काशी जो चले गये। स्त्री तो रो पीट कर रह गई पर उसका यह बचन भारतवासियों का बड़ा उपकार कर गया। गोसाईं जी गृहस्थी के जंजाल में पड़े रहते तो हम लोगों का उद्धार कैसे होता।

काशी से घूमते फिरते सरयू और घाघरा के संगम पर शूकरक्षेत्र पहुंचे जहां अब पस्का गांव बसा है। यहां इनके गुरु नरहरिदास जी रहते थे और यहीं इन्हों ने रामायण की कथा सुनी। पीछे श्री अयोध्या जी चले आये। अयोध्या में जिस स्थान पर रहते थे वह अब भी तुलसीचौरा के नाम से प्रसिद्ध है। यहीं संवत १६३१ रामनवमी तिथि, मंगलके दिन तुलसीदास जी ने उस ग्रन्थ को प्रकाश किया जो आज दिन हिन्दुओं का बेद हो रहा है। गोसांई जी ने इसका नाम रामचरितमानस रक्खा था क्योंकि रामायण तो संस्कृत मे वाल्मीकि जी का बनाया प्रसिद्ध है। पर दोनों मे रामकथा है और संस्कृत जानने वाले थोड़े ही होते है। राम कथा इस मनोहररूप मे भाषा में मिली तो संस्कृत को कौन पूछे और यही ग्रन्थ रामायण हो गया। मिस्टर ग्रिफिथने लिखा है कि तुलसी कृत रामायण को हिन्दुस्थान में सर्वसाधारण जितना मानते है उतना अंग्रेज लोग अपनी वैबिल को भी नहीं मानते। भाषा के प्रसिद्ध पंडित और प्रेमी और भारतके सच्चे हितैषी सर जार्ज गियर्सन लिखते है "पंडित लोग वेद वेद बका करे; कोई कोई पढ़ते

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

भी हैं, पर करोड़ों भारतवासियों के लिये पढ़े हों या अनपढ़े, तुलसीकृत रामायण धर्मका एक आधार है। वह भी भारत का सौभाग्य है। इसने हिन्दुस्थान को तांत्रिकों के वाममार्ग से बचाया। ऐसे समय में जब मुसलमान साम्राज्य बढ़ रहा था, हिन्दुओं के धर्मबंधन ढीले पड़ रहे थे, देश मे व्यभिचार वढ़ता जाता था, तुलसीदास ने यह शुद्ध आचार सिखाया कि मन वचन और कर्म तीनों से व्यभिचार महा पाप है।" काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संपादित रामचरितमानस मे गोस्वामी जी के जीवनचरित में सम्पादक महाशयों ने वहुत ठीक लिखा है ;

"रामायण का प्रभाव यद्यपि थोड़ा या बहुत सारे भारतवर्ष पर है परन्तु बिहार से पंजाब और हिमालय से विन्ध्याचल तक तो नौ करोड़ मनुष्यों पर इसका पूरा राज्य है। ऐसा कोई गावं नहीं है जहां रामायण की पुस्तक न हो और ऐसा कोई अनपढ़ मनुष्य भी नहीं है जिसको ज़बान पर दो चार दोहे चौपाई नहीं। कहावत (मसल) उदाहरण और नीति के लिये रामायण के दोहे चौपाई रातदिन काम में लाए जाते हैं। लोग रामायण के उपदेशों से वहुत कुछ बुरे कामों से बचते हैं। इसके उपदेश स्त्री और पुरुष दोनो के लिये समान हैं। धर्म और चारित्र के अतिरिक्त विद्याप्रचार में भी इसने बहुत कुछ सहायता दी है। लाखों मनुष्य केवल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रामायण ही पढ़ने के लिये पढ़ना लिखना सीखते हैं। निदान रामायण का इतना बड़ा उपकार हिन्दुओं के सिरपर है कि वह कभी गोसाईं जी से उरिन नहीं हो सकते।"

तुलसीदास जी ने भाषा मे और भी कई ग्रन्थ लिखे है। पर रामायण सब से प्रसिद्ध है।

तुलसीदास जी को जीते जी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी थी। वह आप लिखते हैं "तुलसी को जग मानियत महामुनी सो"। अनेक राजा महाराजा इनके दरशनों से अपने को कृतार्थ समझते थे। संसार मे ईश्वर के भक्त बहुत हुये पर भक्ति की महिमा तुलसीदास ही ने प्रत्यक्ष दिखाई थी। यह महापुरुष पूरी उमर पाकर १६८० संवत में बनारस में असी संगम पर इस संसार से सिधार गए। "जब तक पृथ्वी पर हिन्दूधर्म रहेगा, जब तक उत्तम चरित्र का गौरव रहेगा तब तक गोसाईं जी का अलौकिक प्रकाश प्रकाशित रहेगा।"

---

* रामचरित मानस—इंडियन प्रेस—पृष्ठ ८३

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जहांगीर।

अकबर के पीछे उसका बड़ा बेटा सलीम जहांगीर के नाम से दिल्ली के तख़्त पर बैठा। यूरपवाले इसको ग्रेट (महान) मुग़ल कहते हैं। इसी के समय में इंगलैंड के बादशाह जेम्स प्रथम ने भारत मे एक राजदूत भेजा था। इंगिलस्तानवालों ने सुन रक्खा था कि भारत को जीतकर मुग़ल लोग बादशाही कर रहे हैं। बादशाह जेम्स की यह इच्छा थी कि हिन्दुस्थान के बादशाह से मेल मिलाप कर लिया जाय और इसी के साथ व्यापार में उन्नति हो। सूरत मे अंगरेज़ लोग एक कोठी बना चुके थे। वहीं यह राजदूत जिसका नाम सर टामस रो था उतरा और वहां से उसने बादशाह के दरबार में उपस्थित होने के अभिप्राय से आगरे को प्रस्थान किया।

सर टामस रो बड़ा मानी और विद्वान था और दरबार का शिष्टाचार भली भांति जानता था। उसको डर लगता ही न था और इसी कारण सूरत के किसी मुग़ल सरदार का साहस न हुआ कि उसके साथ बुरा वर्ताव करे जैसा कि वह परदेशियों के साथ उन दिनों किया करते थे।

बादशाह अंगरेजों का हाल बहुत ही कम जानता था। उसे यह विदित न था कि अंगरेज भी एक बड़े सभ्यजाति

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के लोग हैं और अंगरेज़ों का बादशाह यूरप के बड़े बादशाहों में गिना जाता है। सर टमस रो नें मुगल बादशाह को अपने बादशाह की महिमा समझाने के लिये बहुत बड़ा यत्न किया। वह दो बरस आगरे मे रहा और उसने यहां के बादशाह का बहुत कुछ हाल देखा। उसने बहुत सिर मारा पर जहांगीर के मन में यह बात न आई कि संसार मे उसके बराबर प्रतापी और शक्तिमान और भी बादशाह हैं।

उन दिनों आगरे में पुर्तगालवाले बहुत थे। इन्होंने अंगरेज़ों से बड़ा बिरोध किया और बादशाह के कान भरे। फिरभी बादशाह ने अंगरेजोंको अपनी बादशाही में व्यापार करने के फ़रमान (आज्ञापत्र) दे ही दिये। सर टामस रो ने भारत मे जो कुछ देखा या जो कुछ किया उसका दिन दिन का हाल लिखा है। इसी लेख मे बादशाह की सालगिरह (वर्षगांठ) का भी वर्णन है। इस को पढ़ने से मुगल बादशाह के दरबार की महिमा और शोभा हमारी समझ मे आसकती है। पहिली सितंबर को बादशाह की सालगिरह मनाई गई थी। उस दिन एक बड़े लंबे चौड़े सुन्दर बाग़ में जिसमे जगह जगह में पानी के हौज़ भरे थे जिनमे फौआरे चल रहे थे और रंग रंग के फूल खिले थे सोने का कांटा खड़ा किया गया। इस कांटे की डंडी लोहे की बनी थी; ऊपर से सोने का पत्तर चढ़ा था। पल्लों के किनारे किनारे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मानिक और फीरोजे जड़े थे। पल्लों के डोरियों की जगह सोने की जंजीरें थीं पर रेशम की डोरी भी लगी थी। इस कांटे के चारों ओर कालीनो पर राजा और नवाब बैठे बादशाह की राह देख रहे थे।

थोड़ी देर में बादशाह भी आगये। उनके शरीर पर हीरे मानिक मोती और अनेक रत्न झलक रहे थे। उनके सिर पर, गले मे छाती में, बाहों पर, कलाइयों मे और उंगलियों के पोर पोर में रत्न जड़े थे या सोने की जंजीरें पड़ी थीं। अखरोटके बराबर मानिक और बड़े बड़े चमकीले मोती झलझला रहे थे। हीरों की चमक का बखान नहीं हो सकता था। बादशाह एक पल्ले में खड़े हो गये और दूसरे पल्ले में रुपयों के तोड़े डाल कर तौले गये। इसके पीछे सोने, रत्न कमख्वाब रेशमी कपड़े सूती कपड़े मसाले और कई चीजो मे अलग अलग तौले गये। सब से पीछे घी और अनाज की तुला हुई। यह सारी चीजें बाट दी गईं।

जहांगीर के शासनकाल मे हिन्दुस्थान का शासन कर्त्ता बास्तव मे बादशाह न था बरन उसकी बेगम नूरमहल थी। नूरमहल फ़ारसके एक रईस की बेटी थी और जहांगीर ने उसे पहिले पहिल अपने बापके दरबार मे देखा था। जहांगीर उसकी सुन्दरताई पर मुग्ध हो गया था और उसके साथ अपना ब्याह करना चाहता था पर बादशाहने अनुमति न दी और बंगाले के एक सरदार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शेर अफ़गन के साथ उसका व्याह कर दिया। शेर अफ़गन कुछदिन पीछे मर गया। उस समय जहांगीर दिल्ली के तख़्तपर बैठ चुका था। जहांगीरने नूरमहल को बुलवाया पर नूरमहल ने बादशाह को बेगम बनना उस समय स्वीकार न किया और छ बरस तक अपने पहिले पतिका सोच करती रही। अंत को वह दिल्ली चली आई और जहांगीर की मलका बन गई।

नूरमहल जैसी परम सुन्दरी थी वैसीही असाधारण बुद्धमती थी। बादशाह बात बातमें उससे सलाह लेता था। बढ़ते बढ़ते बादशाह नाम मात्रको रहगया और सारा राज काज बेगमके हाथमे चलागया था। उसका नाम नूरमहल से बदलकर नूरजहां हो गया। वह बड़ी उदार थी। उसने हज़ारो लड़कियों को अपने पास से खर्चा देकर शादी करवादी और हज़ारों आदमी दीन दुखिया उसके दानके अधिकारी होकर उसको आसीस देते थे।

जहांगीर बड़ा मद्यप था और भोगविलास में डूबा रहता था। उसके राज को नूरजहां बेगमने संम्हाला और बेगम ही की चतुराई से जहांगीर का कोई काम न बिगड़ा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शाहजहां।

जहांगीर के बेटे शाहजहां के राज मे मुगल बादशाही उन्नतिके शिखरपर पहुंच गई थी। इस समय में हिन्दुस्थान में यूरप से बहुत से यात्री आये। उन्हों ने अपनी यात्रा का हाल लिखा है। इन मे मुख्य दो फ़रासीस स्वर्नियें और वर्नियें हैं।

दिल्ली का दरबार सारे राज्य का केन्द्रस्थल था। यहां भारत भर की संपदा उमंड आई थी और आनंद ही आनंद था। ऐसे दरबार की धूम धाम का ख़रचा भी बहुत था और इसी लिये प्रजा से महसूल भी बहुत लिया जाता था। पर यह महसूल उचित ही था और प्रजा को अखरता न था।

शाहजहां ने इस समृद्ध राज्य को बहुत दिनों तक भोग किया। उसके पहिले जो बादशाह हो गये थे उन्हो ने सारा हिन्दुस्थान जीत लिया था। इसे और देश जीतने की न आवश्यकता थी न आकाङ्क्षा। राज धन धान से भरा पुरा था और मालगुज़ारी बराबर चली आरही थी। अब बादशाह ने यह बिचारा कि अपने राजके बड़े बड़े शहरों मे सुन्दर सुन्दर इमारतें बनवानी चाहिये। इसके पहिले मुग़ल बादशाहों ने भी कई सुन्दर इमारतें बनवाई थीं पर वह सब सादी थीं और जो शाहजहां ने बनवाई उनसे उनमे कम दाम लगा था। इन मे सब से प्रसिद्ध

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एक छतरी (मुकबिरा) है जो बादशाह ने अपनी मलका

मुमताज़ महल के स्मरणार्थ बनवाई थी। इसका नक़शा

Ac. Gunratnasuri MS

एक इटली वासी ने खींचा था। यह मक़बरा संगमर्मर का बना है और इसके बीच बीच मे नग जड़े हैं। इस मक़बरे के बनाने मे हज़ारों हिन्दुस्थानी कारीगर कई बरस तक लगे थे। बादशाह प्रतिदिन आगरे के क़िले की खिड़की से देखा करते थे कि कितना काम हुआ। मुक़बरा धीरे धीरे बना और जब बनकर तैयार हो गया तो प्रातःकाल की सूर्य की ज्योति मे झलझलाने लगा और इसकी परछाईं यमुना में झलकने लगी जो इसके नीचे से बहकर किले के नीचे पहुंचती है। इस मक़बरे का नाम "रौज़ा ताजमहल" है।

आगरे के क़िले के भीतर शाहजहां ने मोती मसजिद

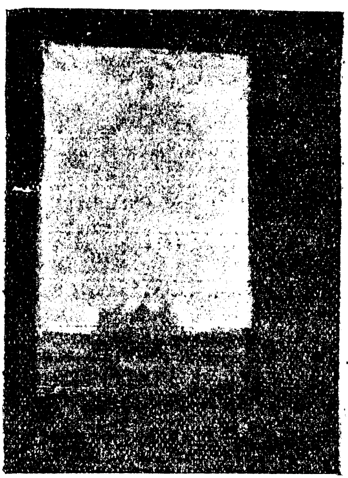

बनवाई। दिल्ली के निकट बादशाह के हुकम से शाहजहांनाबाद नाम का एक नया शहर बसाया गया। इस में भी एक क़िला और एक राजसदन बना। इस क़िले के भीतर दीवान आम और दीवान ख़ास हैं। दीवान ख़ास की दीवार में फारसी का शेर अब भी पढ़ा जाता है जिसका

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्थयह है "जदि स्वर्ग इस धरती पर है तो यही है।" जब शाहजहां बुड्ढा हुआ तो उसके चारों बेटे तख़्त पर बैठने का आसरा देखते देखते उकता गये। चारों चाहते थे कि हम बादशाह हों। उनकी उत्कंठा इतनी बढ़ी कि बापके मरने से पहिले ही तख़्त के लिये आपस मे लड़ने लगे। औरंगज़ेब ने अपने सब भाइयों को मार भगाया और बादशाह बन बैठा और अपने बूढ़े बाप शाहजहां को आगरे के किले मे क़ैद कर दिया। इस दशा मे शाहजहां सात बरस रहकर परलोक को सिधारा।

मरहठावीर शिवाजी।

सम्राट औरंगज़ेब बड़ा कड़ा शासक और कट्टर मुसलमान था। वह अपने धर्म के आगे सब धर्मों को झूठा समझता था और इससे उसकी यह इच्छा हुई कि सारा भारतवर्ष मुसलमान हो जाय। अकबर में यह गुण था कि संसार मे जितने धर्म थे सब की अच्छी अच्छी बातें ग्रहण करता और किसी से द्वेष न रखता था। यह गुण औरंगज़ेब मे न था। औरंगज़ेब की चाल बहुत सादी थी। इस बिषय में वह अपनी प्रजा के लिये आदर्श स्वरूप था। मुग़ल दरबार मे धन और विषयभोग की कमी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

न थी पर औरंगजेब ने गहने न पहिने। उसका खाना पहिनना सब सादा था और मदिरा से उसे घृणा थी। वह कभी सुस्त न बैठता था। जब राजकाज से छुट्टी पाता तो क़ुरान नक़ल करता या "इबादत" मे समय बिताता था।

वह हिन्दूधर्म का बैरी तो था ही गोलकुंडा और बीजापूरके बादशाहों से भी द्वेष रखता था क्यों कि औरंगज़ेब सुन्नी था और वह दोना शिया मज़हब के थे।

तख़्त पर बैठने के थोड़े ही दिन पीछे औरंगज़ेब ने हिन्दूधर्म पर आघात करने का लग्गा लगा दिया। पठान

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बादशाहों ने कुछ दिनों तक सब लोगों पर जो मुसलमान न थे जज़िया नाम एक कर लगाया था। औरंगज़ेब ने इसे फिर जारी कर दिया। हिन्दू जज़िया देना कब चाहते थे। परिणाम यह हुआ कि वीर और मानी राजपूत जिन्हों ने इतनी राजभक्ति से अकबर की सेवा की थी औरंगज़ेब से विरक्त हो गये। पर सम्राट से विरोध खुल्लमखुल्ला पहिले दखिन में हुआ।

दिल्ली में औरंगज़ेब सर्वशक्तिमान सम्राट था। उस के मुंह से बात निकलते ही दस हज़ार योद्धा लड़ने मरने पर उतारू हो जाते थे। उसकी टेढ़ी भौं देख कर बड़ा से बड़ा सरदार कांपने लगता था। भारत का धन और भारतवासियों का जीना मरना उसके आधीन था। जिस दिन से अकबर ने भारत को जीत लिया था, मुग़लों का यश और प्रताप देश मे फैल गया था और उनकी धाक बंधी थी। किसी की क्या मजाल थी कि सिर उठाता। तिस पर एक मरहठा युवक ऐसा निकल ही आया जिसने मुसलमान साम्राज्य की शक्ति को तुच्छ समझ कर विरोध कर ही डाला। इस मरहठे का नाम शिवाजी था। यह देवगिरि के राजाओं के वंश का एक सरदार था।

पश्चिमीय घाट पर रायगढ़ का क़िला तो तुम ने सुनाही होगा। यह क़िला शिवाजीने अपने और अपने वीरों के लिये बनवाया था। शिवाजी और उसके साथी तेज़ घोड़ों पर सवार होकर रायगढ़ से निकलकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बीजापूर के शहरों मे लूट मार किया करते थे। जब उनके दमन करने को सेना भेजी जाती तो सब अलग अलग होकर भाग जाते और जब फिर डरने का कोई कारण न रहता तो वहीं इकट्ठा होकर उपद्रव मचाया करते। इस जवान मरहठा सरदार मे बड़े राजा के सब गुण थे। शिवाजी बीर था, चतुर था, और उस मे यह शक्ति विशेष थी कि उसके सेवक उससे पूरी भक्ति रखते थे। पर वह निठुर था और लोग यह भी कहते हैं कि अपनी बात का कच्चा था। उसी का यह काम था कि दखिन के हिन्दू फिर एक हो गये। उस ने मरहठा जाति को उस उन्नति की नेंव डाली जो अन्त मे इस सीमा को पहुंची कि मरहठों ने मुगलों की राजधानी दिल्ली को अपने आधीन कर लिया। बीजापूर की सेना ने शिवाजी से लड़ना छोड़ दिया और शिवाजी को चौथ देना अंगीकार किया जिसमे शिवाजी चुप चाप बैठा रहे और बीजापूरराज के शहरों को न लूटै।

बीजापूर तो यों छूटा; अब शिवाजी को लूटने के लिये और शहरों की खोज हुई। शिवाजी ने मुग़लराज के औरंगाबाद शहर पर चढ़ाई करदी। यह सुनकर औरंग़जेब बहुत बिगड़ा और उसको परास्त करने के लिये एक सेना भेजी पर शिवाजी उसके हाथ न लगा। सम्राट आप बड़ा बीर था। वह शिवाजी की बीरता की प्रशंसा करने लगा और उसे अपने दरबार में बुला भेजा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शिवाजी मुग़ल सम्राट से मिलने दिल्ली पहुंचा। उस की वीरता का यश बहुत फैला था, वह निडर भी था पर मुग़ल सम्राट के नाम ही से लोगों के मनमे डर समाजाता था। मुग़ल बादशाह सदा अपनी बातके सच्चे थे और शिवाजी ने भी समझा कि दिल्ली ज़ाने में हानि क्या है। बादशाह ने बुलाया है तो मेरा क्या बिगड़ सकता है। पर जब शिवाजी दिल्ली पहुंच गया तो औरंगजेब के मन मे पाप समाया और उसने बिचारा कि ऐसे प्रबल बैरी को हाथ से जाने देना मूर्खता है। औरंगजेब ने शिवाजी के डेरे पर पहरा बिठा दिया। पर मरहठा सरदार भी बड़ा चतुर था। मुग़ल सिपाहियों का साधारण पहिरा उसको क्या रोक सकता? वह एक टोकरे में छिपकर निकल गया और दखिन पहुंचा। यहां उसने फिर मुग़लों से लड़ाई छेड़ दी। उसने मुग़लराजके शहर सूरत को लूटा और मुग़ल सेना को एक जमी लड़ाई में परास्त कर दिया। मुग़लों ने भी जाना कि ऐसा निडर बैरी हमको आजतक नहीं मिला।

औरंगजेब चाहता था कि दखिन देश को स्वाधीन करले। वह समझा था कि पहिले वहां की पुरानी बादशाहतें जीतलूं पीछे मारहठा सरदार सहज मे मार लिया जायगा। यह सोचकर उसने इतनी बड़ी सेना इकट्ठा की जितनी कभी किसी ने न की थी और बीजापूर और गोलकुंडा पर चढ़ गया। यह दोनों शहर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मुग़लों से लड़े और बहुत कुछ लोहू लुहान होनेपर दोनो शहर परास्त हुये। औरंगजे़ब के राजपूत सेनापति उसका विश्वास न करते थे। उनका इसकी सेवा में जी न लगता था। मुसलमान राज नष्ट कर दिये गये, अब मरहठों का जीतना रहगया।

औरंगजे़ब समझा था कि यह काम बहुत सहज होगा पर यह उसकी बड़ी भूल थी। मरहठे बड़े चतुर योद्धा थे। वह मुग़लों के साथ जम कर कभी न लड़े। जहां देखते कि सौपचास बादशाही सिपाही अलग जा रहे हैं उनपर टूट पड़ते और उन्हें काट डालते। जब मुग़लसेना उनपर चढ़ाई करती तो मरहठे घोड़ों पर सवार होकर भाग जाते। शिवाजी तो मर चुका था पर उसके बेटे ने लड़ाई जारी रक्खी।

मुग़ल बीस बरस तक दखिन में पड़े रहे। औरंगजेब के बाल पक गये पर मरहठे न हारे। अंतको औरंगजेब अहमदनगर चला गया और यहां वह मर गया। हिन्दुओं की लड़नेवाली जातियां राजपूत और मरहठे सब बिगड़ खड़े हुये और मुग़लों की हार हो गई।

यह बुड्ढा बादशाह जो अहमदनगर में मर गया सब से अन्तिम मुग़ल सम्राट था। इसके पीछे जो बादशाह हुये सब नाममात्र के सम्राट थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अबदुल हसन धीर गंभीर बादशाह।

बीजापूर को परास्त करके औरंगजे़ब ने गोलकुंडे पर चढ़ाई कर दी। गोलकुंडे का बादशाह यह समझा था कि औरंगज़ेब को जब हम अपना सम्राट अधीश्वर मान लेंगे तो वह लौट जायगा। पर जब उसने जाना कि उसके स्वाधीनता स्वीकार करने की प्रतिज्ञा करने पर भी मुग़ल सेना चढ़ती ही चली आती है तो उसने लड़ाई ठान ली। मुग़ल सम्राट से लड़ने की उसमें शक्ति न थी पर लड़ते लड़ते मर जाने में हानि क्या थी। मुग़ल सेना ने गोलकुंडे को घेर लिया। न भीतर का आदमी बाहर जासकता था न बाहर का भीतर आसकता था। औरंगजे़ब ने ऊंचा कोट और गहरी खाई बड़े ध्यान से देखी और समझ गया कि कोट बहुत दृढ़ है और बिना सेंध फोड़े शहर टूट नहीं सकता। उसने अपने आदमियों को हुकुम दिया कि सुरंग खोदते खोदते खाई तक पहुंच जाओ और कोट को बारूद से उड़ा दो।

बादशाह अबुल हसन ने खाने पीने की बहुत सी सामग्री इकट्ठा करली थी। उसके पास कोट पर तोपों के लिये गोला बारूद भी बहुत था। उसको आशा थी कि शहर की रक्षा इतनी दिनों तक हो सकती है कि औरंगजेब उकता कर लौट जाय। उसने शहर से पचास हज़ार सवार बाहर भेजदिये जिन्होंने सुरंग खोदने वालों को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मार काट कर भगा दिया। कोट के ऊपर से भी खाइयों मे

गोले बरसाये गये। पर औरंगजेब के सफ़रमैनावालों

... Sadhak Trust

ने रातके अंधेरे मे बहुत दूर तक खाई खोद डाली और शहर की कोट तक पहुंच गये। इन खाइयो में होकर मुगल सिपाही कोट तक जा सकते थे और ऊपर के गोलों से की बौछार से भी रहते थे। बादशाहने अपने हाथ से पहिला बोरा मिट्टी से भरा और वह खाई पाटने के लिये फेंक दिया गया। मिट्टी के धुसों पर तोपें चढ़ाई गईं। एक ओर शहर पर गोले बरसने लगे और दूसरी ओर खाई पट रही थी। एक रात कोट पर सीढ़ी लगाई गई और मुगल सिपाही कोट पर चढ़ गये। इतने ने एक कुत्ता भूंका। बात की बात मे गोलकुंडे के वीर कोट पर चढ़ गये और मुगलों को हटाकर उनकी सीढ़ियां फेंक दीं।

यहां मुगलों को अन्न के लाले पड़ रहे थे। शिवाजी का बेटा सम्भाजी मरहठी सेना लिये गोलकुंडेकी सहायता को पहुंच गया। उसने गोलकुंडेके आस पास के सारे खेत उजाड़ डाले। अब औरंगजेब की सेना को अनाज मिलना कठिन हो गया। सैनिकों को ज्वर भी आने लगा बरसात लगते ही गोलकुंडे के वीर बादशाह ने एक रात को छापा मार दिया और सैकड़ो मुगल सिपाही पकड़ लाया। इन कैदियों को उसने अनाज और रुपये के ढेर दिखाये और उनसे कहा कि अपने बादशाह से कहला भेजो कि घेरा तोड़ दे तो मै उसके भूखे सिपाहियों को खाना खिलादूं। कट्टर औरंगजेबने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उत्तर दिया कि जब तक अबदुल हसन हाथ जोड़े हुये सामने न आयेगा घेरा न टूटेगा।

सिपाहियों की बीरता, गोला बारूद, सुरंग और युद्धनीति के सब चालें जो न करसकीं वह धोखे से सिद्ध होगया। किसी ने फाटक खोल दिया और मुग़ल शहर में घिल पड़े। एक रक्षक वीर अबदुर्रज्ज़ाक़ ने यह दशा देखी और चट घोड़े पर सवार होकर कुछ सिपाही साथ लिये फाटक पर पहुंचा। वह मुग़लों का रेला न रोक सका, और घाव खाता हुआ निकल गया।

बादशाह अबदुलहसन ने गलियों मे चिल्लाहट सुनी और समझ गया कि शहर में बैरी घुस आये। वह अपने ज़नान ख़ाने मे चलागया और सब से बिदा मांगकर दरबार के कमरे मे बैठकर मुग़लों की राह देखने लगा। जब औरंगज़ेबके सर्दार कमरे मे घुसे तो अबदुलहसन ने उस को वैसेही सलाम किया जैसे एक बादशाह दूसरे बादशाह के सरदारों को किया करते हैं। मानो कोई बात हुई ही न थी। मुग़ल सम्राट ने भी अपने बैरी के साथ राजोचित व्यवहार किया। औरंगज़ेब बीर था और बीर बीर का आदर करता ही है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दखिन के राज्य।

औरंगज़ेब ने गोलकुंडा स्वाधीन करलिया। यह तो तुम पढ़ही चुके। यह शहर धोखे से लियागया। बीरता और बलका सामना होता तो इसका टूटना कठिन था। अब हम इस के पड़ोस के राज्य बीजापूर की कथा तुमको सुनाते हैं।

जब से बहमनी बादशाही के टुकड़े होगये थे यह राज शक्तिमान थे। बीजापूर में आदिल शाही वंश के बादशाह रहते थे जो बीरता मे गोलकुंडा वालों से कम न थे। एक बार एक छोटा लड़का बीजापूर के तखत पर बैठ गया। उसके सयाने समर्थ होने तक राजकाज करने के लिये एक अधिकारी कर लिया गया। यह अधिकारी चाहता था कि मैं आप राजा बन बैठूं। एक दिन वह दुष्ट अधिकारी बादशाह को कैद करने के अभिप्राय से कुछ सिपाही साथ लेकर महल मे घुस गया। बादशाह और उसकी मा थोड़े से पहरेवालों के साथ महल मे थी। उस बीर मलका ने आज्ञा दी कि महलके फाटक बन्द कर लिये जायं और सिपाहियों से बोली कि तुम अपने बादशाह का साथ न छोड़ो। पीछे उसने और एक और स्त्री ने मरदाना भेस बदला और कवच पहिने हाथ मे तीर कमान लिये दोनों बाहर निकल आईं। बालक बादशाह दोनों के पीछे था और एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तुर्को दास बादशाह के ऊपर उसके पिता का छत्र लगाये हुये था। महल के ऊपर से शहर मे रस्से लटकाये गये और इन्हो रस्सों को पकड़कर कुछ और राजभक्त सिपाही महल में चले आये और मलका के वीरोंने नीच अधिकारी के सिपाहियों को मारकर भगा दिया।

बीजापूर बहुत बड़ा शहर था और इसमे बहुत सी सुन्दर इमारतें थीं। इसी बीजापूर मे एक बादशाह के उत्साहदानसे फिरिश्ता ने अपना प्रसिद्ध इतिहास लिखा था।

गोलकुंडा भी एक बड़े राज्य का सदर था और

शहर के भीतर अब भी बहुत सी सुन्दर इमारतें खड़ी हैं जो इसकी पुरानी शोभा स्मरण कराती हैं। गोलकुंडे का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजवंश कुतुब शाही के नाम से प्रसिद्ध था। गोलकुंडा और बीजापूर दोनो में बहुधा लड़ाई रहा करती थी। इनका सब से प्रबल बैरी बिजयनगर का हिन्दू राजा था। विजयनगर के राजा सदा यह चाहते थे कि मुसल्मानों से देश जीत लें और मुसल्मान सदा हिन्दुओं से लड़ने को कमर कसे ही रहते थे। हिन्दुओं और मुसल्मानों में अनेक लड़ाइयां हुई और मुसल्मानों ने कई बार कारनाटिक मे छापे मारे। अन्त को तालिकोट की लड़ाई में बीजापूर के बादशाह ने बिजयनगर के हिन्दुओं को परास्त करदिया और तब से दखिन मे बीजापूर का बादशाह सबसे बड़ा माना जाता था।

विजयनगर का हिन्दूराज कहां था? दक्षिण में हम्पी एक छोटा सा गांव है उसके आस पास अब भी इस प्रसिद्ध राज्य की राजधानी के खंडहर पड़े हैं। जिस विजयनगर की गलियों में व्यापारियों के मारे सांस न मिलती थी, जिसमें कई राजप्रसाद हथसारें और घोड़सारें थीं उनकी जगह अब यह खंडहर पड़े हैं। राजसभा मण्डप अब भी टूटा फूटा खड़ा है। यह नगर तुङ्गभद्रा नदी के तीर हरिहर और बुक्क दो भाइयों ने बसाया था। यह दोनों भाई बहुत से हिन्दू इकट्ठा करके मुहम्मद तुग़लक से लड़े थे और एक छोटी सी रियासत की नेव डाली जो बढ़ते बढ़ते बड़ा भारी राज्य होगया और विजयनगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मुग़लराज की अवनति ।

औरंगजेब के मरने के पीछे सारे भारतवर्ष में हिन्दू लोग बिगड़ खड़े हुये। राजपूतों ने कहा कि हम जज़िया न देंगे और विद्रोही होगये। मरहठे लड़ते ही रहे। इन के सिवाय औरंगजेब के क्रूर व्यवहार से उत्तरीय भारत में एक और बली हिन्दू दल खड़ा होगया। यह दल सिख लोगों का था।

यह तो तुम पढ़ ही चुके कि समय समय पर लोगों को धर्म उपदेश देने वाले होते रहे हैं। यह लोग सन्त ही थे और इन की सदा यह इच्छा थी कि सर्वसाधारण की दशा सुधरे, और उनके जीवन व्यवहार पहिले से अच्छे होजायं। इसी धर्म के उपदेश मे ऐसों ने अपना जन्म बिता दिया। बहुत दिन हुये स्वामी शंकराचार्य ने बौद्ध-मतके वेग मे हिन्दू धर्म को डूबता देखकर उसका उद्धार किया और उन्हीं के उपदेश का प्रभाव था जो बौद्धमत भारतसे निकल गया। उनके पीछे स्वामी रामानुज और चैतन्य हुये। यह लोग भी बड़े विद्वान् और बड़े बुद्धिमान सन्त थे। भारत के उत्तर मे कबीर साहेब ने हिन्दू मुसलमान दोनों को एक करने का बड़ा यत्न किया। यह सब बड़े उत्तम विचार थे। और इन धर्मउपदेश करने वालों मे सब से पहिले बुद्धदेव हुये थे।

जिन दिनों पठान वंश का अंतिम बादशाह दिल्ली

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri MS

का शासन कर रहा था, लाहौर नगर मे गुरु नानक का जन्म हुआ। जैसे स्वामी शंकराचार्य्य ने उनसे कई सौ बरस पहिले धर्म के उद्धार और देश के सुधार के उपदेश दिये थे वैसे ही गुरु नानक ने भी किया। बाबा नानक का यह मत था कि ईश्वर एक है चाहो उसे खुदा कहो चाहो राम कहो। उसी एकको हिन्दू मुसलमान दोनों पूजते है। उन का यह भी मत था कि ईश्वर के सब बन्दे है और ईश्वर सब को बराबर प्यार करता है चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान जैन हो या बौद्ध। वह किसी धर्म को बुरा न कहते थे और उनको पूरा विश्वास था कि सब धर्म के लोग आपस में मिलजुल कर रह सकते हैं। विरोध करना और धर्म के लिये लड़ना भिड़ना महापाप है। पंजाब के वासी उनका बड़ा आदर करते थे और हजारों उनके शिष्य हो गये। यही शब्द बिगड़कर सिक्ख हो गया है।

बाबा नानक सिक्खों के पहिले गुरु थे। उनके पीछे नौ और गुरु हुये। उनकी धर्मपुस्तक का नाम ग्रंथ साहेब है। औरंगजेब सिक्खों को काफ़िर समझता था और उनसे घृणा करता था। सैकड़ों बरस पहिले महमूद ग़जनवी ने समझा था कि हिन्दुओं को मारने से बड़ा पुण्य होता है। औरंगजेब ने भी ऐसाही समझकर सिक्खों के नवें गुरु का सिर कटवा डाला। सैकड़ों बरस भारत में रहने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर भी ऐसे ऐसे मुसलमान निकल आते थे जिनको दूसरे के धर्म से इतना द्वेष रहता था। नवें गुरु के मारे जाने पर उसके बेटे गुरु गोविंदसिंह मुसलमानों से बहुत चिढ़ गये। अब तक सिक्ख अपने धर्म के अनुसार चलते और बड़े शांत रहते थे। जब मुसलमानों ने उनको सताया तो वह भी बिगड़ खड़े हुये, और गुरु गोविंद सिंह के समय मे उन्हों ने "सिंह" की पदवी धारण करली। उन्हो ने अपने बाल बढ़ा लिये और यह प्रण कर लिया कि मुसलमानों से लड़ते लड़ते मर जायंगे। गोविंद सिंह के मारेजाने पर सिक्ख सरदारों ने पंजाब में जगह जगह क़िले बनवा लिये, पंजाब के मुसलमानो पर धावे मारे उनके गावं जला दिये, मुल्ला मार डाले और मसजिदें ढ़था दीं।

दिल्ली नगर मे मरहटे।

हम ऊपर लिख चुके हैं औरङ्गजेब बड़े बड़े यत्न करने पर भी दखिन के मरहठों को परास्त न कर सका। जब उसकी सेना लौट आई तब भी मरहटे हथियार डालकर चुपचाप न बैठरहे, और अपनी खेती वारी छोड़कर महाराज शिवाजी के साथ होकर मुसलमानों से लड़ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को उपस्थित हो गये। औरङ्गजेब की सेनाको हराने से उनके हौसिले बढ़गये थे। उन्हो ने यह बिचारा कि अब हमको और भी कुछ करना चाहिये और भारतवर्षको फिर वैसाही बड़ा हिन्दू राज्य बनाना चाहिये जैसा कि प्राचीन समय मे मुसलमानों के आक्रमण के पहिले था। सम्भाजी के मरने के पीछे महाराज शिवाजी की सन्तान मे वह उत्साह और पराक्रम न रह गया जो महाराज शिवाजी मे कूट कूट कर भरा था। राज का काम पेशवाओं अथवा मंत्रियों के हाथ मे चला गया था। उस लड़ाई भिड़ाई के समय मे वही मनुष्य ऊंचे स्थान पर पहुंच सकता था जिसमे दृढ़ता और पराक्रम दोनों पाये जाते थे। मरहठों के पेशवा बड़े योग्य और बहादुर पुरुष थे। पहिला पेशवा बालाजी विश्वनाथ था। उसने दिल्ली को घेर लिया और निर्बल मुग़ल बादशाह से दखिन से चौथ लेने का अधिकार प्राप्त किया। इसके पीछे बाजीराव पेशवा हुआ और बाजीराव के पीछे बालाजी बाजीराव गद्दी पर बैठा। इन योग्य हाकिमों के राज मे मरहठों ने बड़ी उन्नति की। उन्हों ने गुजरात, मालवा, बरार उड़ीसा और वह जिले जो आजकल मध्य प्रान्त के नाम से प्रसिद्ध हैं जीत लिये; बङ्गाल और पञ्जाब पर भी धावे मारे; यहां तक कि चारों ओर उनके बल की धाक बंध गई। ज्यों ज्यों यह लोग बढ़ते गये त्यों त्यों मुग़ल बादशाह शक्तिहीन होते गये और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वह नाम मात्र के बादशाह रह गये। वास्तव मे उनमे कोई शक्ति न रह गई।

मुग़ल राज को सब से बड़ा धक्का उत्तर की दिशा से पहुंचा। फ़ारस के प्रसिद्ध बादशाह नादिरशाह ने भारतवर्ष पर चढ़ाई की। पहिले पहिले उसने काबुलको जीत लिया जो अभीतक मुग़लों का एक सूबा था और फिर दिल्ली पर चढ़ आया। यह अभागा नगर एकबार फिर लुटा। हज़ारों मनुष्य मारे गये। मुग़ल बादशाह के महल का सारा खज़ाना फ़ारस को पहुंच गया।

इसी रीतिसे अकबर बादशाह का स्थापन किया हुआ राज उसको सन्तान के निकम्मपन से नष्ट हो गया। अब दिल्ली मे बड़े बड़े अमीरों के लड़के अथवा राजपूत राजकुमार भड़कीले वस्त्र धारण किये कहीं दिखाई न पड़ते थे; न सुनहरे रुपहले हौदों से सजे हुये हाथी बाज़ारों मे झूमते फिरते थे। जब बादशाह दीवान खाने मे जड़ाऊ सिंहासन पर बैठता था तो कोई उसके सामने न्याय मांगने न जाता था। बाज़ार सूने होगये थे। महल उजाड़ पड़े थे। मुग़लों की बादशाहत का नाम ही नाम रह गया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

व्यापारी कम्पनियां कैसे लड़ने लगीं।

मरहठों के दिल्ली पर धावा करने और नादिर शाह के उस नगर के लूटने का वृत्तान्त तो तुम पढ़ही चुके। हो इसके चौदह बरस पीछे दिल्ली को एक क्रूर प्रकृतिके अफ़गानी ने जिसका नाम अहमदशाह दुर्रानी था और जो कन्दहार का हाकिम था फिर लूटा। जिन दिनों देश के भीतर यह उपद्रव हो रहा था समुद्र तट पर एक दूसरा ही दृश्य दिखाई देता था। बन्दरगाहों पर अंगरेज़ फ़रासीस और हालैंडवाले व्यापार मे होड़ा होड़ी करते थे। जहांगीर के राज मे जब कि पुर्तगालवालों को कायापलट हुई यह जातियां बड़े सुख चैन से बनिज व्यापार मे लगी हुई थीं। पहिले उन्हो ने अपनी बस्तियां पच्छिमी समुद्र तट पर बनाईं। युरप से आने वालों को यह तट सीधा पड़ता था। इस कारण सूरत मे बहुत सी कोठियां और कारखाने स्थापन किये गये और धीरे धीरे बम्बई पच्छिमीय समुद्र तट का सब से बड़ा बन्दरगाह होगया। अंगरेज़ों, फ़रासीसियों और हालैण्डवालों ने भारतवर्ष से व्यापार करने के निमित्त ईष्ट इण्डिया कम्पनियां बनाईं। यूरप के जहाज़ केवल पश्चिम के बन्दरगाहों पर ही नहीं आते थे, बरन उन्होने पूर्व के बन्दरगाहों पर भी आने जाने का लग्गा लगा दिया। क़िला सेण्टजार्ज को नीव शाहजहां बादशाह के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राज मे डाली गई और उसके आस पास आबादी बढ़ते बढ़ते थोड़े ही दिनो मे मदरास नगर बन गया। औरङ्गजेब के राज मे जौन चारनाक नामी एक प्रसिद्ध अंगरेज़ ने फोर्ट विलियम किले की नीव डाली और उसके निकट कलकत्ता नगर बसाया। इस समय फ़रासीसियों की सब से बड़ी बस्ती पाण्डीचरी थी।

वास्तव मे यह समय भारतवर्ष मे लड़ाई भिड़ाई का समय था। पहिले पहिल मरहठों ने दिल्ली मे प्रवेश किया

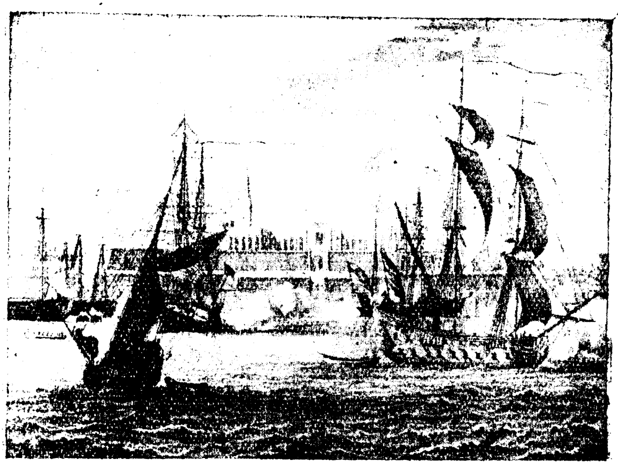

फिर अफ़ग़ानों ने डेरा जमाया जिनको कि पीछे मरहठों ने निकाल दिया। फिर अफ़ग़ानों ने पञ्जाब पर धावा मारा जिस मे मरहठों की हार हुई। अब यूरपवाले भी जो अबतक निरे सौदागर ही थे लड़ाईयों मे शामिल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होने लगी। इस समय भारतवर्ष के मध्यभाग ही मे नहीं वरन समुद्र तट पर भी लड़ाई छिड़ी हुई थी। एक बड़ा फ़रासीसी सर्दार डूप्ले इस समय भारतवर्ष के फ्रांसीसियों का गवर्नर था। इस ने हिन्दुस्थानी राजाओं से मित्रता की और फ़रासीसी सिपाही भेजकर लड़ाइयों मे उनकी सहायता की। यूरप के सिपाही लड़ने भिड़ने का काम भली भांति जानते थे और हिन्दुस्थानी सिपाहियों पर सदा जयपाते थे। इस कारण भारतवर्ष के राजा डूप्ले से मित्रता करने को अग्रसर हो रहे थे। डूप्ले ने वह ज़ोर पकड़ा और फरासीसियों की शक्ति इतनी बढ़ाई कि अंगरेज़ों को इसबात का भय हुआ कि कहीं ऐसा नहो कि यह लोग हमें भारतवर्ष के बाहर निकाल दें जैसे कि हालैन्डवालों ने पुर्तगालवालों को निकाल दिया था। इस समय इङ्गलण्ड और फ्रांसवालों में यूरप मे लड़ाई होती ही रहती थी। जब फिर यूरप मे इन दोनों जातियों मे लड़ाई छिड़ी तो अंगरेज़ोंने पांण्डिचरी पर चढ़ाई कर दी।

इस समय दक्षिण हिन्दूस्थान के राजाओं मे निज़ाम हैदराबाद सब से शक्तिमान था और आरकट का नवाब उसका मित्र था। डूप्ले अपने कर्मचारियों को इन दोनो के यहां ऊंचे ऊंचे पदों पर नियत करवाना चाहता था पर अंगरेज़ चाहते थे कि उन पदों पर उनके पक्षपाती नियत हों। जब कभी इन दोनों जातियों मे लड़ाई छिड़ती थी तो जबतक उनमे से किसी एक की अच्छी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तरह हार न हो जाय लड़ाई बन्द न होती थी। कभी अंगरेज़ों की जीत होती थी और कभी फ़रासीसियों की। एक समय यह जान पड़ा कि फ़रासीसी अंगरेज़ोंको दक्षिणभारत से निकाल ही कर छोड़ेंगे। पर इस अवसर पर राबर्ट क्लाइव ने जो पहिले अंगरेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी में एक किरानी था फ़रासीसियों के छक्के छुड़ा दिये और अपने देशवासियों को हार से बचा दिया।

क्लाइव का अर्काट पर धावा।

एकबार शाहज़ादा मुहम्मदअली को जो अंगरेज़ो का मित्र था चन्दा साहेब और उनके पक्षपाती फ़रासीसियों ने त्रिचनापल्ली नगर में घेर लिया। अंगरेज़ों के आधीन इतनी सेना न थी कि वह फ़रासीसियों को हरा सकते। केवल त्रिचनापल्ली उनके आधीन रह गया था। यदि यह भी उनके हाथ से जाता रहता तो मुहम्मदअली की भी शक्ति का अन्त हो जाता और जीत फ़रासीसियों के हाथ रहती। सेना के बिना यह लोग कर ही क्या सकते थे। वास्तव में इनके बचने का कोई उपाय न था। अंगरेज़ी सेना के संग राबर्ट क्लाइव था। यह लड़ते लड़ते तङ्ग आगया था और यही विचार करता था कि वैरी को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सेना की टुकड़ियों से छोटी छोटी लड़ाइयां लड़ने से हमारा कोई लाभ न होगा। अंगरेजों में इतनी शक्ति न थी कि इन लोगों के साथ एक बड़ी लड़ाई लड़ने का साहस करते। जो एकबार भी वह फ़रासीसियों को हरा देते तो उनको त्रिचनापल्ली से बाहर निकाल देना कोई बड़ी बात न थी। यह बिचारकर क्लाइव सेण्ट डेविड के क़िले को लौट गया और वहां के हाकिम को एक चाल सुझाई।

आर्कट चन्दासाहेब और फरासीसियों का बड़ा मजबूत गढ़ था। चन्दासाहेब ने अंगरेजो और मुहम्मद अली को निर्बल जानकर इस बात की आवश्यकता न समझी कि आर्कट की रक्षाके निमित्त बहुत से सिपाही छोड़े। इस कारण वह अपने सारे सिपाही त्रिचनापल्ली ले गया। उसे आशा थी कि पांडीचेरी बहुत जल्द सर हो जायगा और लड़ाई भी एकदम बन्द हो जायगी क्लाइव ने यह विचारा कि "हमें शीघ्र शत्रुके इलाके में से होते हुये जाकर आर्कट पर अधिकार जमालेना चाहिये; जो चन्दा साहेब और फ़रासीसियों का मुख्य स्थान है। जो हम ऐसा कर सकें तो त्रिचनापल्ली बच जायगा क्योंकि चन्दा साहेब आर्कट को फिर अपने आधीन करने के निमित्त त्रिचनापल्ली छोड़कर चला आयेगा।"

क्लाइव ने दोसौ अंग्रेज, तीन सौ हिन्दुस्थानी सिपाही और तीन छोटी तोपें लेकर आर्कट की ओर कूच

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किया और वहां पहुंचकर उसने वह फुर्ती दिखाई कि चन्दा साहिब को इतना अवकाश न मिला कि अपने सिपाहियों को इकट्ठा करके उसको कुछ रोक टोक कर सके। क्लाइव बेधड़क आर्काट पर चढ़ गया। उसका साहस देखकर बैरी दङ्ग हो गये। किसी को स्वप्न में भी गुमान न था कि अंगरेजी सेना आर्काट पर आक्रमण करने का साहस करेगी। सब यही कहते थे कि अंगरेज और उनके साथी त्रिचनापल्ली ही मे स्वाहा हो जायंगे। इस कारण चन्दासाहिब के सिपाही यह देखकर चकित रह गये कि बिना किसी लड़ाई भिड़ाई के अंगरेजों ने आर्काट पर अधिकार जमा लिया।

ज्योंही आर्काट का गढ़ क्लाइव के आधीन हो गया, उसने क़िले के कोट पर गढ़ की रक्षा के निमित्त अपने सिपाही नियत कर दिये। कारण यह कि वह जानता था कि जैसे चन्दासाहिब यहां का हाल सुनेगा वह आर्काट पर फिर से अधिकार मे लाने के निमित्त त्रिचनापल्ली से कूच कर देगा। क्लाइव यह भी जानता था कि अंगरेजो सेना विलायत मे भेजी जा चुकी है और बहुत जल्द मेरी सहायता को पहुंच जायगी।

यह विचार कर कि इङ्गलैंड की मर्यादा उसीके हाथों है उसने प्राण रहते तक लड़ने की मनमे ठान ली। वह बड़ा वीर था और अपने सिपाहियों से प्रेम रखता था। इस कारण सारी सेना तनमन उसपर न्योछावर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करती थी। घेरेके कठिन समय में जब कि खाने को अन्न कम रह गया था तो वीर हिन्दुस्थानी सिपाहियों ने पके हुये चावल तो अपने अंगरेज़ साथियों को देदिये और चावलों का माड़ अपने पीने के निमित्त रख छोड़ा। हम इस बात से समझ सकते हैं कि किले के भीतर सिपाही कैसी कैसी कठिनाइयां झेल रहे थे; पर इतना कष्ट पड़ने पर भी वह हिम्मत न हारे। उनके जनरल क्लाइव ने जिसको कि अंगरेज और देसी सिपाही दोनों ही बहुत प्यार करते थे, अपनी बहादुरी और जोश भरे हुये शब्दों से उनका साहस और भी बढ़ादिया। कुछ दिन पर सहायता भी पहुंच गई। चन्दासाहेब और फ़रासीसियों की हार हुई। क्लाइव और उसके सिपाही किले से निकलकर इन लोगों पर टूट पड़े और इनको मार कर भगा दिया। अब अंगरेज लड़ाई पर लड़ाई जीतने लगे यहां तक कि फ़रासीसियों ने लड़ाई बन्द करदेने ही में अपनी भलाई देखी और संधि करली। दूसरा बड़ा अंगरेजी जनरल जिसने इस लड़ाई में बहुत काम किया मेजर लारेन्स था। क्लाइव मेजर लारेन्स से बड़ा प्रेम रखता था और उसकी बड़ी प्रतिष्ठा करता था। यह दूरदर्शी बूढ़ा मेजर क्लाइव के साथ बहुत अच्छा बर्ताव करता था और उसका सदा साथ देता था।

इस लड़ाई के अन्त हो जाने पर डूप्ले फ्रान्स को बुला लिया गया। अंगरेज हो या हिन्दुस्थानी सबको इस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वीर देशभक्त सर्दार की प्रशंसा और प्रतिष्ठा करनी चाहिये। जब फ्रान्स के बादशाह का दूत भारतवर्ष में पहुंचा और उसने त्रिचनापल्ली के दीवानखाने मे डूप्ले के सन्मुख उसके फ्रान्स बुलाये जाने का तिरस्कार से पूर्ण सनेसा सुनाया तो डूप्ले के मुंह से निकला कि बादशाह की आयु बढ़े। जब वह फ्रान्स गया तो उसकी किसी तरह की प्रतिष्ठा न की गई क्योंकि वहां किसी को यह वृत्तान्त न मालूम था कि डूप्ले ने भारतवर्ष मे फ्रान्स को सब से बड़ी शक्ति बनाने के निमित्त कोई बात उठा नहीं रक्खी थी। अपने देशवासियो की कृतघ्नता से व्याकुल होकर यह देशभक्त सर्दार दस ही बरस पीछे बड़ी दरिद्रता की दशा में मर गया।

युवक सर्दार राबर्ट क्लाइव का जिसने अंगरेजों के निमित्त यह लड़ाइयां जीती थी उसके देशवासियों ने बड़ा सम्मान किया। कहते हैं कि क्लाइव की बहादुरी का वृत्तान्त सुनकर कोई इतना चकित नहीं हुआ जितना कि उसका बाप, क्योंकि वह क्लाइव को किसी अर्थ का नहीं समझता था और इसी कारण उसने उसे भारतवर्ष मे भेज दिया था। क्लाइव पहिले पहिल ईस्ट इण्डिया कम्पनी मे एक बाबू था; अब कम्पनीकी फौज का कर्नल बन गया। इसके पीछे वह बङ्गाले का गवर्नर नियत हुआ और ब्रटिश इंडिया के इतिहास में किसी और मनुष्यने क्लाइव का सा नाम पैदा नहीं किया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बङ्गाल का शासन अधिकार अंग्रजों ने कैसे पाया।

नादिरशाहके दिल्ली पर आक्रमण करनेके पीछे अलीवर्दी खां नामी एक बहादुर योद्धा बङ्गाले का हाकिम बनबैठा। बङ्गाला पुराने मुगलों के राज का एक सूबा था; और बङ्गाले का हाकिम अबतक सूबेदार कहलाता था। इसी भांति हैदराबाद का निज़ाम भी दखिन का सूबेदार बोला जाता था। अलीवर्दी खां एक योग्य हाकिम था और मुर्शिदाबाद उसकी राजधानी थी। उसने अङ्गरेजी सौदागरों का जो कलकत्ते मे वणिज व्यापार करते थे बड़ा मान किया और उन्हें दूसरे नगरों मे भी जैसे पटना, ढाका, क़ासिमबाज़ार जो उसकी राजधानी के निकट था कारखाने खोलने की आज्ञा दी। जब अलीवर्दी खां का देहान्त होगया तो उसका पोता सिराजउद्दौला जो बड़ा मूर्ख और ज़िद्दी था उसकी गद्दी पर बैठा; सिराजउद्दौला ने सुना कि अंगरेज फ़ोर्ट विलियम क़िले की दीवारें बना रहे है। उसने कहला भेजा कि दीवारों का बनवाना बन्द किया जाय। अंगरेजों के गवर्नर ने कहला भेजा कि हमलोग कोई नई दीवार नहीं उठवा रहे हैं केवल पुरानी दीवारों को अधिक दृढ़ कर रहे हैं। जब सिराजउद्दौला के अंगरेजो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गवर्नर का उत्तर मिला तो वह बहुत बिगड़ा और उसी दम पचास हज़ार सिपाही लेकर कलकत्ते पर चढ़ दौड़ा। वहां अंगरेज उसका सामना करने को प्रस्तुत न थे। न छर्रो बारूद उनके पास था न कुछ खाने पीने की सामग्री ही थी। इस कारण सिराजउद्दौला ने जाते के साथ ही कलकत्ते पर अधिकार जमा लिया।

सिराजउद्दौला ने सारे अंगरेज कैदियों को जो गिनती मे १४६ थे एक तङ्ग और अंधेरी कोठरी मे बन्दकर दिया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गर्मी पड़ रही थी, हवा बन्द होने के कारण बेचारे कैदियों का दम घुटने लगा। एक एक ने सिसक कर गर्मी के मारे अपने प्राण दिये। सवेरे जब उस कोठरी के किवाड़ खोले गये तो २३ ही कैदी जीते निकले।

जब मदरास के अंगरेज़ो ने अपने देशवासियों की मृत्यु का वृत्तान्त सुना तो वह थर्रा गये। उन्हों ने उसी दम बङ्गाले में एक सेना भेजने और सिराजउद्दौला को उचित दंड देने का विचार किया। जो सेना भेजी गई उसका सर्दार क्लाइव था। क्लाइव अपनी सेना लिये हुये समुद्रके रास्ते हुगली होता हुआ बजबज स्थान पर उतरा। उसने पहुंचते ही कलकत्ते पर अधिकार जमा लिया और फिर हुगली नगर पर जो नवाब के आधीन था गोला बरसाना आरम्भ कर दिया। अन्तिम लड़ाई पलासी स्थान पर हुई। यह स्थान हुगली और मुर्शिदाबाद के बीच मे पड़ता है। यहां पर नवाब के लगभग सत्तर हज़ार प्यादे और सवार डेरा डाले पड़े थे। फ़रासीसी सेना भी एक बड़ा तोपख़ाना लिये हुए उनके साथ थी। इनका सामना करने को क्लाइव के पास केवल तीन हज़ार सेना थी। पर मीर जाफ़र जो नवाब की सेना का एक जनरल था क्लाइब को वचन दे चुका था कि लड़ाई आरम्भ होते ही मैं अपनी सेना सहित तुम से आमिलूंगा। सिराजउद्दौला की सेना ने अंगरेजों की थोड़ी सी सेनापर धावा मारा पर बड़े तोपख़ाने के गोला

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बरसाने पर भाग खड़ी हुई। फिर मीर जाफ़र भी अपनी सेना लिये हुए क्लाइव से जा मिला और नवाब को भागते ही बन पड़ी।

अंगरेजों ने अब मीर ज़ाफर को बङ्गाले की गद्दी पर बैठा दिया, पर यह नया नवाब अपने अंगरेज मित्रों के हाथों में कठपुतली की भांति था। इसी समय से अंगरेज बङ्गाले के असली हाकिम बन गये।

वारन हेस्टिङ्गज़।

लार्ड क्लाइव के भारतवर्ष छोड़ने के पांच बरस पीछे एक और प्रसिद्ध अङ्गरेज बंगाले का हाकिम हुआ। यह वारन हेस्टिङ्गज था। क्लाइव की भांति वारन हेस्टिङ्गज भी थोड़ी ही उमर से ईस्ट इंडिया कम्पनीका नौकर था। धीरे धीरे उसका पद बढ़ता गया यहां तक कि वह बंगाले से मदरास भेज दिया गया जहां वह गवर्नर की कौंसिल का मेम्बर हो गया। मदरास से वह फिर बंगाले आया पर इस बार वह यहां का गवर्नर मुक़र्रर हुआ।

वारन हेस्टिङ्गज़ बड़ी अच्छी प्रकृति का सभ्य मनुष्य

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था। कोई यह न जानता था कि वारन हेस्टिङ्गज अपने मनसूबे का पक्का और इरादे का सच्चा होगा। यह एक बार जिस बात को अपने मन में ठान लेता था उसे

करही के छोड़ता था। उसके बहुत से बैरी हो गये थे पर उसका सब से बड़ा बैरी उसी की कौन्सिल का एक मेम्बर फिलिप फ्रान्सिस था। वारन हेस्टिङ्गज जब कभी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कोई बिचार प्रगट करता था फ्रान्सिस उसपर पानी फेर देता था। उसने एकबार हेस्टिङ्ग्ज पर घूस लेने का भी दोष लगाया पर यह सिद्ध न हो सका।

इतना प्रतिवन्धक होते पर भी वारन हेस्टिङ्ग्ज बड़ी दृढ़ता से काम करता गया और बंगाले की शासन प्रणाली को सुधारता गया। पहिले पहिल कलक्टरों को उसीने मालगुज़ारी इकट्ठा करने के निमित्त नियत किया। हर एक कलक्टर अपने अपने ज़िले की धरती की मालगुज़ारी तहसील करता था। उसके मजिस्ट्रेटी के अख़्तियार भी होते थे। कोई यह समझता था कि मुझपर अत्याचार हुआ है तो वह कलक्टर के पास अपना मुक़दमा कर सकता था। कोई अपने पड़ोसी की ज़मीन दबा बैठता था तो इस विषय का कलक्टर की अदालत में बिचार होता था कि कौन सच्चा है और कौन झूठा। मुग़लों और पठानों के समय में भी न्यायाधीश हुआ करते थे पर वारन हेस्टिङ्ग्ज ने पुरानी रीति उठा कर नये नये क़ायदे क़ानून बनाये। उसको इसबात की भी चिंता रहती थी कि कलक्टर ठीक ठीक न्याय करें। कलकत्ते में अपील करने की दो अदालतें थीं। कोई यह समझे कि कलक्टर ने ठीक ठीक न्याय नहीं किया तो वह अपना मुक़दमा अपील की अदालत मे ले जा सकता था। एक बड़ा ही योग्य पुरुष सर इलीजा इम्पे कलकत्ते की अपील की अदालत का प्रधान जज था। गवर्नर ने क़ानून की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किताबें बनवाईं जिनमें हिन्दू मुसलमान दोनों के आचार व्यवहार अलग अलग लिखे थे। सब को उन्ही क़ानूनें के अनुसार चलना पड़ता था। आजकल जिस रीति से शासन होता है वह वारन हेस्टिङ्ग्ज की चलाई है।

उसने पुलीस के सिपाही नियत किये जो गावीं में चौकीदारों की सहायता से चारों ओर अन्यायियों को पकड़ते थे। दो बरस तक बंगाले का गवर्नर रहने के पीछे वारन हेस्टिङ्ग्ज सारे भारतवर्ष का गवर्नर जेनरल कर दिया गया। तेरह बरस शासन करने के पीछे यह प्रसिद्ध गवर्नर जनरल विलायत लौट गया। यहां आकर उसे जान पड़ा कि मेरी कुल कारवाइयां उलटी समझी गई हैं। इसके बैरियों ने उसके बारे में बहुत सी झूठी बातें उड़ा रक्खी थीं। वह संसार का जंजाल छोड़ छाड़ कर अपने असली गांव में जा बसा और वहीं अपना सारा बुढ़ापा बिता दिया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मैसूर का सुल्तान हैदरअली।

तुम ने दक्षिण भारत की मैसूर रियासत के महाराजाओं के विषय मे अवश्य कुछ न कुछ सुना होगा। आज कल वहां के महाराजा अंगरेज सरकार के मित्र और सहायक हैं पर यह रियासत पहिले अंगरेज़ सरकार की मित्र न थी।

मैसूरवासी कनाड़ी जाति के हैं। कई सौ बरस से इसी जाति के राजा महाराज करते आये थे। तालीकोट की लड़ाई के पीछे विजयनगर का राज कई छोटी छोटी रिआसतों मे बंट गया था जिनपर छोटे छोटे सरदार हुकूमत करते थे। यह सरदार नायक या पालीगार कहलाते थे। मैसूर के राजाने बहुत सी छोटी छोटी रियासतों को जीत कर अपना राज बढ़ा लिया और श्रीरंगपत्तन को अपनी राजधानी बना लिया। मैसूर के राजा की सेना मे उत्तरीय भारत का एक मुसलमान सेनापति था। इस का नाम हैदर अली था। यह कुछ पढ़ा लिखा न था पर बड़ा बहादुर और अपने इरादे का पक्का था। बढ़ते बढ़ते यह मैसूर की सेना का प्रधान सेनापति बन गया। अब राजा बनने में थोड़ी ही

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कसर रह गई थी। सो कुछ दिन पीछे वह हिन्दू राजा को हरा कर आप मैसूर का सुलतान भी हो गया।

सुलतान हैदर अली ने अपनी सेना को अंगरेजी क़वायद सिखाई, और फ़रासीसी अफ़सरों को क़वायद सिखाने के निमित्त नौकर रक्खा। उसने और बहुत सा देश जीत लिया और शीघ्र ही बड़ा शक्तिमान हो गया। अब उस की जीत पर जीत होने लगी। कभी वह अपने पड़ोसी मरहटों पर कूच करता और कभी कारनाटक पर जो अंगरेज़ों के आधीन था धावा मारता। शान्तिप्रिय लोग उसके नाम ही से कांपते थे। अंगरेजों के प्रसिद्ध सर्दार सर आयर कूट ने उसे कई बार हराया पर यह कभी अंगरेजों के पंजे मे न आया।

सुलतान हैदर अली में जो एक छोटे सिपाही से बढ़ते बढ़ते नवाब हो गया था बहुत से गुण भी थे। यह डीलका ठिंगना था, इसकी नाक और आंखें छोटी छोटी थीं; उसका चेहरा धूप सहते सहते काला पड़ गया था। यह बहुत स्वच्छता से रहता था। सिर पर गहरे किरमिंजी रङ्ग का बड़ा डुपट्टा बांधता था और कपड़े यूरपी काट के पहिनता था। उस का कोट सफेद साटन का होता था जिस पर सुनहला काम बना रहता था और वह पीले रंग का पायजामा पहिनता था। अपने राज में सुलतान हर विषय पर आप ही हुक्म देता था। बिना उस की आज्ञा के कोई काम न होता था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसकी छोटी छोटी चालाक आंखें प्रत्येक बात को ताड़ जातीं थीं। वह कुछ पढ़ा लिखा नहीं था पर शासन करना उसे भली प्रकार आता था।

टीपू की अंतिम लड़ाई।

हैदर अली का बेटा सुलतान टीपू उस के पीछे गद्दी पर बैठा पर यह वैसा शक्तिमान न था जैसा की उस का बाप था। इस के अतिरिक्त यह निर्दयी था और हैदर अली की भांति बुद्धिमान और चतुर भी न था।

इस समय अंगरेज़ फ़रासीसियों की शक्ति से बहुत डरे हुए थे। नपोलियन बोनापार्ट फ़रासीसी शाहंशाह अपने समय का बड़ा प्रसिद्ध विजयी हो गया है। उस समय नपोलियन की शक्ति बहुत बढ़ी हुई थी। यूरप के प्राय: सभी देशों में उसे जीत ही जीत मिली थी। यह बादशाह इङ्गलैंड पर भी धावा मारना चाहता था। इस कारण अंगरेज़ फरासीसी की प्रत्येक कारवाई को ध्यान से देखते थे। पर अन्त में नपोलियन हार गया।

टीपू नित्य इसी चिन्ता में रहता था कि घात पावे तो अङ्गरेज़ों को पीस ही डाले। इस काम मे टीपू ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फ़रासीसियों से सहायता मांगी। इस कारण मार्क्विस वेल्ज़ली को जो इस समय गवर्नर जनरल था टीपू के विरुद्ध हथियार उठाने ही पड़े। टीपू ने श्रीरंगपत्तन में शरण ली। अंगरेज़ों ने अपनी भारी भारी तोपों से इस नगर को दीवारों को चकना चूर कर दिया और टीपू बड़ी वीरता से लड़ता हुआ लड़ाई में काम आया।

टीपू के मरने के पीछे वेलेज़ली साहब ने मैसूर के हिन्दू राजाओं के वंश के एक राजकुमार को जो गद्दी का वारिस था मैसूर के सिंहासन पर बिठा दिया और उसके आस पास का देश जो हैदर और टीपू ने जीता था अंगरेज़ों के अधिकार में आगया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लार्ड वेलेज़ली—मरहठों की हार।

जब मरहटों की पूरी उन्नति थी और पंजाब में आकर पठानों से भिड़ गये थे उस समय सारे मरहटा सरदार पेशवा को अपना नायक मानते थे। पर पिछले पेशवा बाजीराव की तरह न बुद्धिमान थे न बीर थे। परिणाम यह हुआ कि मरहटे सरदार सब स्वतन्त्र राजा बन बैठे। और नागपूर मे भोंसला, इन्दौर में होलकर ग्वालियार में संधिया और बड़ौदे मे गायकवाड़ का अधिकार हो गया। सब की अलग अलग राजधानी थी और मरहटे सवारों की अलग अलग पल्टनें थीं। संधिया की सेना फ़रासीसी अफ़सरों की सिखाई थी।

मरहटे राजा एक दूसरे से जला करते थे और सदा लड़ते रहे जब तक उनका बल रहा भारत में शांति न रही। मरहटे पिंडारे डाकुओं से डाके डलवाते थे और आप लूट के माल में हिस्सा लेते थे।

उस समय कलकत्ते में लार्ड वेलेज़ली गवर्नर जनरल थे। उन्हों ने देखा भारत का अच्छा शासन तभी हो सकता है जब सारा देश एक बली शासक के अधिकार में आजाय जैसे मुग़लों के समय में था। इस विचार से उन्हो ने मरहटे राजाओं को परास्त करना निश्चय कर लिया और दो बड़ी बड़ी सेनायें दो अंगरेजी अफ़सरों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को कमान में इस काम के लिये नियत की गईं। एक अफ़सर गवर्नर जनरल के भाई सर आर्थर वेलेज़ली थे जो पीछे ड्यूक आफ़ वेलिंगटन के नाम से प्रसिद्ध हुये और दूसरे लार्ड लेक।

सर आर्थर वेलेज़ली ने भोंसला की सेना को असेई के मैदान में परास्त किया और दखिन स्वाधीन कर लिया। लार्ड लेक ने सेंधिया की सेना को दिल्ली से मारकर निकाल दिया और मुग़ल बादशाह जो उनकी कैद से छुड़ाया। मुगलों में कोई शक्ति तो रही नहीं फिर भी दरबार करते थे और बादशाह कहलाते थे।

इसके पीछे मरहठे राजाओं के दरबार में अंगरेज़ी रेज़ीडंट नियत किये गये। इनका काम यह था कि राज के प्रबंध को देखते रहें, डाकू नष्ट कर दिये जायं और राज में अच्छा शासन हो। इस रीति से लार्ड वेलेज़ली भारत मे सब से शक्तिमान शासक हो गये और उनकी इस दृढ़ चाल से सारे देश में शांति स्थापित हो गई।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अहल्या बाई।

पिछले पेशवाओं के समय मे मरहटे सरदार अलग अलग देश दबाकर राजा बन बैठे। इन में एक होलकर था जिसकी राजधानी इन्दौर थी। अहल्या बाई इसी होलकर वंश के राजा मल्हार राव की पतोहू थी। यह उन्नीस ही बरस की थी जब इसका पति खंडेराव एक लड़का और एक लड़की छोड़कर मर गया। अहल्या बाई अपने पति के साथ सती होना चाहती थी पर मल्हारराव के समझाने से उसने अपना विचार छोड़ दिया। अहल्या पढ़ी लिखी राजकुमारी थी और मल्हारराव के जीते जो बहुत कुछ राज काज किया करती थी। मल्हारराव के मरने पर अहल्या का लड़का मालीराव गद्दी पर बैठा पर वह बड़ा दुष्ट था और एक बरस के भीतर उसका देहान्त हो गया। पुत्र की मृत्यु के पीछे अहल्या बाई इन्दौर की रानी हुई।

स्त्री होकर भी अहल्या ने अपने राज्य का शासन जिस बुद्धिमानी से किया उस के कारण हम लोग आज तक उसको आदर्श रानी कहते है। अहल्या की चाल बहुत सादी थी। विधवा होने के पीछे उसने कभी रंगे कपड़े नही पहिने। दरबार में मुह खोल कर बैठती

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सब कागज़ पत्र सुनती और अपने हाथ से हुकम लिखा करती थी। उसके दरबार में जाने के लिये किसी को रोक टोक न थी। अन्याय के नाम से चिढ़ती थी और अन्याय करने वालों को कड़ा दंड देती थी। स्त्री होने पर भी जब उसे क्रोध आता था तो किसी का हियाव न पड़ता था कि उसके सामने जा सके। अहल्या बड़ी धर्मात्मा थी। उसके पुण्य का डंका आजतक भारत के एक एक तीर्थ में बज रहा है, कहीं घाट कहीं मन्दिर कहीं सदाबर्त आजतक जारी हैं।

अहल्या का सेनापति एक वीर तुकोजी था। अहल्या उसे अपने बेटे के बराबर मानती थी और वह भी अहल्या को अपनी माता समझता था। एकबार पेशवाने उसके ऊपर चढ़ाई की। अहल्या बाई ने कहला भेजा कि मै स्त्री हूं मुझको हराने मे आपकी कोई बड़ाई नहीं है पर जो आप हार जायंगे तो आपके मुहं में कारिख लग जायगी। पेशवा ने न माना पर जब पेशवाकी सेना इन्दोर के पास पंहुची तो उसने देखा कि तुकोजी एक बहुत बड़ी सेना लिये सामना करने को खड़ा है। पेशवा के सैनिकों के छक्के छूट गये और उलटे पैर घर लोट गये। उसकी दानशीलता का छोटा सा उदाहरण यह है कि जब वह गद्दी पर बैठी तो उसके ससुर ने कोष में बहुत सा धन छोड़ा था। अहल्या ने सब पर तुलसीदल रख कर संकल्प कर दिया जिसका अभिप्राय यह था अब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यह धन पुण्य कर दिया गया मेरे काम का नहीं रहा। इस धन को लेने के लिये पेशवा ने इसपर फिर चढ़ाई की थी। अहल्या आप कवच पहिनकर पांच सौं स्त्रियों के साथ सब धनुषबान हाथ में लिये मैदान में खड़ी हो गई। पेशवा के सेनानायकों ने पूछा कि सेना कहां है। अहल्या ने उत्तर दिया कि "होलकर वंश का पहिला राजा पेशवा का सेवक था मै पेशवा से लड़ नहीं सकती पर पेशवा मुझ से वह धन लेना चाहते है जिसपर मै ने तुलसीदल रख दिया हैं। यह धन आप तभी ले सकते है जब आप मेरा सिर काट डालिये। जीते जी इस में एक कौड़ी आपको छूने न दूंगी। मरहठे बीर थे यह उत्तर सुनकर दंग हो गये पर स्त्रियों पर अस्त्र चलाना भी अधर्म था इससे लज्जित हो कर लौट गये।

अहल्या बाई ने कई क़िले पुल और सड़कें बनवाईं। इन में सब से प्रसिद्ध बिन्ध्याचल के ऊपर की सड़क है। इन्दौर पहिले एक छोटा सा गांव था। अहल्या के राज में यह एक बड़ा शहर बन गया। अहल्या को अपनी प्रशंसा बहुत बुरी लगती थी। एक बार एक पंडित ने उसके बड़ाई बखान में एक ग्रंथ लिखा। अहल्या सुनकर बोली मै एक अधम स्त्री हूं मै इस बड़ाई के योग्य नहीं। इतना कहकर उस ने पंडित को बिदा कर दिया और पुस्तक नदी में फिकवादी।

यह धर्मात्मा रानी तीस बरस राज करके १७९५ मे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परलोक सिधारी। उसको प्रजा ने उसके लिये बड़ा सोच किया और आजतक उसको देवी मानते हैं।

सर टामस मुनरो।

टीपू सुलतान के साथ अंगरेजों ने दो बार लड़ाईयां लड़ीं। पहली लड़ाई के अंत मे श्रीरंगपत्तन की संधि हुई। इस बार अंगरेज़ों का साथ हैदराबाद के निजाम ने दिया था। इस कारण जो देश इस संधि के अनुसार टीपू से मिला था उसे दोनों ने बांट लिया। इस नये देश का बंदोबस्त करने के लिये मदरास गवरमेंट ने कई अफ़सर भेजे। सलेम ज़िले का बंदोबस्त एक नव युवक अफ़सर ने किया जिसका नाम टामस मुनरो था।

हैदरअली और टीपू के अमलदारी मे किसानो से बड़ी कड़ी मालगुज़ारी ली जाती थी। दोनो सुलतानो ने कई लड़ाइयां लड़ी जिनमें बहुत सा रुपया खर्च हुआ। इस रुपये को कहीं से आना चाहिये। सबसे सीधा यह पड़ा कि किसानो ने जो कुछ कमाया वह उनसे सुलतान के अफ़सर ने ले लिया। अब अंगरेज़ों का राज हुआ और टामस मुनरो के ऊपर उस मालगुज़ारी के नियत करने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का भार पड़ा जो गांववालों से मदरास की गवरमेण्ट को पाना चाहिये था। टामस मुनरो ने रय्यतवारी की रीति निकाली। कुछ दिन पीछे सारे मदरास हाते मे यही रीति जारीकर दी गई। इस रीति के अनुसार किसानलोग सीधे गवरमेण्ट को मालगुज़ारी देते हैं। हाकिम बंदोबस्त हर एक ज़मींदार पर मालगुज़ारी की जमा बांध देता है; यह जमा विना किसी उचित कारण के घटबढ़ नहीं सकती। किसान धरतीपर कुआं बनाकर या और किसी उपाय से अपने खतों की उपज बढ़ा दे तो गवरमेण्ट उसकी जमा नहीं बढ़ाती। किसान अपने परिश्रम से पूरा लाभ उठा सकता है। मालगुज़ारी बांधने का काम बड़े बखेड़े का होता है और उसमे बहुत दिन लग गये। जितना देश इस हाकिम बंदोबस्त के अधिकार मे दिया गया उस सारे देश मे इस हाकिम को घूमना पड़ा। खेतों में नम्बर डाले गये और जो खेत जिसके पास था उसका नाम और उसपर जो सरकारी जमा बंधी थी सरकारी कागज़ मे लिख लिया गया।

टीपू के मरने और श्रीरंगपत्तन के सर होने पर कुछ और देस अंगरेजी अमलदारी मे मिल गया। इस समय मुनरो कनाड़ा जिले का बंदोबस्त करने के लिये भेजा गया। सलेम में कई बरस रह कर मुनरो ने देखा था कि जिस देस के लोग, भूखों मरते थे वह उसके सुप्रबंध मे धन धान से भर गया। वह जहां जाता लोग उसको बड़ी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आवभगत करते थे और यह समझते थे कि इसी के न्याय और इसी की दया से हमारा कल्याण हुआ है और होगा। अब मुनरो कनाड़ा को संतुष्ट करने चला। इस नये देश मे मुनरो को चारों ओर से किसानों ने घेर लिया और बोले "हमारे पास न अन्न है न ढोर, न रुपया, हम सरकारी जमा कहां से दें।" वह समझे थे कि मुनरो भी टीपू के अफसरों की तरह अत्याचारी होगा और उनका सर्वस छीन लेगा। इसी से झूठमूठ कहने लगे कि हमारे पास कुछ नहीं है; पर थोड़ी ही देर मे वह जान गये कि अंगरेजी अफसर उनका सर्वस छीनना नहीं चाहता और वह इतना ही जानना चाहता है कि धरती से कितनी उपज हो सकती है और सरकार की धरती जोतने के लिये उन्हें सरकार को कितनी जमा देना उचित है। पंद्रहही महीने मे किसानों ने समझ लिया कि हमारे खेतों की सारी उपज लूट न ली जायगी और खेतीबारी में लग गये। चारों ओर हरे हरे खेत देख पड़ने लगे। जहां पहिले रोना पीटना पड़ा था वहां रहट की मरमराहट और किसानों का सुख का गाना सुन पड़ने लगा। चोर और डाकुओं का दमन कर दिया गया। निज़ाम ने अंगरेजो के साथ एक सन्धि की और इस के अनुसार जो देश उसको मयसूर बादशाही के मिले थे उन्हें उसने अंगरेजों को सौंप दिया। यह ज़िले अब भी सौंपे ज़िले कहलाते हैं। मेजर मुनरो इन जिलों का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बन्दोबस्त करने भेजे गये। इस समय इन की दशा बहुत बिगड़ी थी। मुनरो के आने के समय तीस हज़ार हथियार बंद सिपाही अस्सी पोलीगरों की कमान में देश को लूटते फिरते थे। डाकुओं के झुंड के झुंड देश मे घूमते फिरते और राहचलने वालों को मार कर उनका धन छीन लेते थे। गांव गांव में गढ़ियां थीं जिनके टूटे फूटे खंडरहर अब तक देख पड़ते हैं। इसी से हम समझ सकते है कि बेचारे गांववालों की क्या दशा रही होगी। मध्यदेश में अब भी गांव के गिर्द कच्चे कोट खड़े हैं। यहां पिंडारी डाकू मरहटे सरदारो के आश्रय में गावों में लूट मार मचाया करते थे।

जब मुनरो ने डाकुओं का दमन कर दिया और सब को संतुष्ट करके सरकारी जमा बांध दी तब अपनी जन्म-भूमि चले गये। वह भारत में सत्ताईस बरस रहे थे पर सदा अपने माता पिता को चिट्ठी पत्री भेजा करते और अपनी जन्मभूमि की सुधि न भूले थे। जब वह स्काट-लैण्ड में अपने घर पंहुचे तो क्या देखा कि उनके पिता जिन्हें वह हृष्ट पुष्ट जवान छोड़ गये थे बुड्ढे और निर्बल होरहे हैं और उनकी माता मरचुकी थी। बरसों पर देश में रह कर घर आने पर यह दशा देखकर उनको कैसा दुख हुआ होगा।

जब मुनरो भारत को लौटे तो धारवार में दक्षिण मरहटा प्रांत के कमिश्नर मुकर्रर हुये। यहां उनको

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मरहटों से लड़ाई लड़नी पड़ी। मुनरो सेना के नौकर थे। लड़ना उनका प्रधान काम था। लड़ाई में उनकी कीर्ति बढ़ी और उनको जनरल का पद मिला। लड़ाई

बंद होने पर वह मदरास के गवर्नर हो गये और इंगलिस्तान के बादशाह ने उनको नाइट कमेंडर आफ़ बाथ की उपाधि दी। गूटी से कुछ दूर पद्दीकुड़ा गांव के पास दौरे में उनका देहांत हो गया।

यह महा सज्जन पुरुष इस रीति से उसी देश में रह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गया जिससे वह इतना स्नेह रखता था। जिन देशों में वह हाकिम रहा वहां के रहने वाले उसको प्रेम से प्रजा का पिता कहते थे।

मौन्सटुअर्ट इलफिन्स्टन।

तुम ने पढ़ा है कि किस भांति सर टामस मुनरो ने बम्बई और मदरास प्रान्तों की नई अमलदारियों का प्रबंध किया जब कि टीपू सुलतान के पराजित होने से वह देश अंगरेजी राज मे मिल गये थे। उसी भांति एक बड़े प्रबंध कर्ता ने उन देशका प्रबंध किया जो कि मरहट के पराजित होने से अंगरेजो को मिला था।

मरहठों और अंगरेजो की लड़ाई की कहानी बहुत बड़ी है। मार्क्विस वेलेज़ली गवर्नर जनरल के समय में मरहठे राजा परास्त कर दिये गये थे और उनको अपनी राजधानी में एक अंगरेज़ रेज़ीडण्ट रखना पड़ा था। पेशवा को यह प्रबंध अच्छा न लगा और स्वतन्त्र बनने को चिन्ता मे रहा, और अंगरेजों के साथ लड़ाई छेड़दी। इस युद्ध को मरहटों की तीसरी लड़ाई कहते हैं। इस लडाई मे पेशवा की हार हुई और उसका राज

बम्बई हाते मे मिला लिया गया। शिवाजी के एक वंशज को सतारे का राज दे दिया गया और नये जिलों का बन्दोबस्त करने का काम मौण्ट स्टुअर्ट इलफिन्स्टौन को सौंपा गया।

यह नया देश तापी से मैसूर तक फैला हुआ था। बरसों तक मरहटे राजाओं की यह रीति थी कि हथियारबन्द सिपाही साथ लिये गावों में होकर फिरा करते थे और गांव वालों को धमकाकर उनके पास जो कुछ रहता था सरकारी मालगुजारी के नाम से ले लेते थे। इल्फिंस्टन के सिर भी वही काम पड़ा जो मदरास हाते मे सर टामस मुनरों ने किया था।

झगड़े बखेड़ों का निपटारा, चोर डाकुओं का दमन किसानों की रक्षा अनेक काम थे। जमा बांधने मे यह देख लिया गया कि किसान को अपने खेतों से कितना नाज मिलेगा। जमा पहिले से कम बांधी गई और यह भी विचार कर लिया गया कि किसान इतनी जमा सुगमता से दे सकैगा या नहीं। जिस गांवमे जिमींदार नहीं थे वहां गांवका पटेल किसानोंसे रुपया लेकर सरकार में जमा कर दिया करता था। पटेल का यह भी काम था कि गांव मे शांति रक्खै। जो काम गांव मे पटेलों से लिया जाता था वह शहरों में कोतवाल किया करते थे।

पटेलों और कोतवालों के ऊपर कलेक्टर रहता था। उसके पास बड़े बड़े मुकद्दमें जाते थे। वह मुकद्दमों का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फ़ैसला आप करता था या मुद्दई मुद्दालेह को आज्ञा देता था कि पंचायत से फ़ैसला करा लो।

शहरों मे मुकद्दमें फ़ैसला करने को अमीन मुकर्रर होते थे। अत्याचार और निठुराई के बदले न्याय और दया के शासन से बंबई का हाता धन धान से भरगया और प्रजा संतुष्ट होगई। बम्बई में इस संतोष का स्थापन करने वाला मौण्ट स्टुअर्ट इल्फिंस्टन था। शांति और दया के साथ उसने अपने आधीन देश की भलाई के लिये परिश्रम किया और उनतालिस बरस की उमर में बम्बई का गवर्नर हो गया।

इल्फिंस्टन बड़ा बुद्धिमान और नेक हाकिम था। उसने अपने हाते के एक एक प्रांत में दो बार दौरा किया। उसने कानून का एक संग्रह बनवाया। इस संग्रह के देखने से कानून की अनुसार जो काम उचित है वह सब कोई जान सकता है और किसी को सन्देह नहीं रहता। उसने विद्याप्रचार में भी बड़ा ध्यान दिया। कई बरस पीछे उनका उद्योग सफल हुआ और बम्बई मे उनके जाने के पीछे एक कालेज (विद्यालय) खुला जिसका नाम इल्फिंस्टन कालेज है। वह बहुत बड़ा विद्वान था और फ़ारसी और भारत की अनेक भाषा बोल सकता था। इंग्लिस्तान लौटने पर उस ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ (History of India) भारत का इतिहास लिखा जो बहुत दिनों तक प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था। बम्बई हाते मे शांति स्थापन करना और प्रजा को समृद्ध बनाना मौण्टस्टुअर्ट इल्फिंस्टन ही का काम था और इसी कारण उनकी कीर्त्ति अचल रहैगी और लोग उनका नाम आदर और क्तज्ञता के साथ सदा स्मरण करैंगे।

लार्ड विलियम बेनटिङ्क।

जब हम राजपूत स्त्रियों का हाल पढ़ते हैं कि वह अपने पति के पराजित करने वालों के हाथों मे पड़ने की अपेक्षा मरना अधिक पसंद करती थी तो हम उनके इस साहस को सराहे बिना नहीं रह सकते। तब भी जब एक स्त्री पुरानी रीति के अनुसार अपने पति के मरने पर अपने प्राण त्याग देती थीं। हम यह बात अस्वीकार नहीं कर सकते कि ऐसा कार्य अत्यन्त प्रेम और सतीत्व का एक प्रमाण न था। यद्यपि हम आज कलके विशेष सभ्य दिनों में ऐसे कार्य को हम शोचनीय और भयकी दृष्टि से देखते है। सती की रीत इतनी पुरानी है कि हम यह नही जानते कि यह कबसे चली। परन्तु एक बिधवा को सती होने के लिए दबाना केवल एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनुचित कार्य ही नहीं है परन्तु निठुराई और पाप है। मोगल सम्राट अकबर ने आज्ञा दे दी थी कि कोई स्त्री सती होने के लिये दबाई न जाय। लार्ड विलियम बेनटिङ्क जोकि भारत म गवर्नर जनरल होकर आए इसलिए प्रसिद्ध हैं कि उन्हों ने भारतमें जहां जहां अंगरेज़ी राज था सती होने ही न दिया। उन्होंने सती होना एक कानूनी अपराध बनादिया और तब से यह रीति बंद हो गई।

यही एक सुधार उस दयामय सुधारक ने नहीं किया। उस समय जब कि वह गवर्नर जनरल हुआ सारे भारत मे ऐसे लोग भरे हुये थे जो दूसरों को मार कर अपनी जीविका निर्वाह करते थे। यह लोग ठग कहलाते थे। यह अपने साथ कोई अस्त्र न रखते थे और इस कारण कोई बटोही इन्हें पहिचान न सकता था परन्तु जब वह यात्री किसी एकान्त स्थान में पहुंच जाता था और यह ठग उसके साथ होते तो फंदे से उसका गला घोंटकर उसका सारा धन छीन लेते थे। लार्ड विलियम बेनटिङ्क ने ख़ास अफ़सर इस काम के लिये नियत किये जो गावों मे फिरें और उन में से ठगों को ढूंढ निकालें। सुप्रसिद्ध करनैल स्लीमैन ने छः बरस मे पन्द्रह सौ ठग पकड़े और तब से यह भयङ्कर रीति उठ गई।

लार्ड विलियम बेनटिङ्कके ही समय मे अंगरेजी भाषा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मैकाले की सम्मति से जोकि कलकत्ते मे जन्मा था और जो एक इतिहास लेखक हो गया है अदालत की भाषा बनाई गई।

जब लार्ड विलियम बेनटिङ्क कलकत्ते में गवर्नर जनरल था इलफिंस्टन बम्बई का गवर्नर था। उसी ने उस बड़े गवर्नरके इंगलिस्तान चले जाने पर कुछ समय के बाद इलफिंस्टन कालिज बम्बई मे बनवाया और उसने कलकत्ते मे मेडिकल कालिज भी खोला। उसने भारत मे विद्या के प्रचार के लिए बहुत कुछ किया और अपने उपकार के कामों मे उसने एक बड़े हिन्दू सुधारक राजा राममोहन राय से सहायता पाई।

पंजाब का सिंह—महाराजा रणजीत सिंह।

तुम्हें याद होगा कि गुरु गोविन्द सिंह के समय में सिक्ख लोग उदासी से योद्धा होगये और मुगलों से लड़ने लगे। उसी समय मे सिक्ख सरदार पंजाब में ठांव ठांव राज करने लगे। १७९९ ई० में एक जवान राजकुमार रणजीत सिंह ने लाहोर लेलिया। यह राज-कुमार साधारण मनुष्य न था यह सिंह की तरह वीर था

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और इस से बढ़कर भारत में योद्धा और शासक बिरले ही कोई होंगे। इस ने पंजाब के सब सरदारों को जीत लिया और सबने उसे अपना राजा मान लिया। अब सिक्खों की अलग अलग रियासतें न रह गईं; सारा पंजाब मिलकर महाराजा रणजीत के आधीन होगया। सिक्ख राज बड़ा शक्तिमान होगया इस की सेना यूरपवालों की सिखाई थी सिपाही सब वरदी पहिने रहते थे और सब के पास अच्छी

अच्छी बन्दूकें थीं। रणजीत सिंह लाहोर में बैठा बड़ी सावधानी से देश की घटनाये देख रहा था।

रणजीत सिंह अपूर्व पुरुष था, मानों ईश्वर ने उसे शासन करने ही के लिये पैदा किया था। लोग विना बिचारे उसकी आज्ञा सिर धरते और सारे सिक्ख, योद्धा, गुरु और सर्दार उसे अपना नायक मानते थे।

रणजीत सिंह न लंबे चौड़े थे और उनके रूप से कोई बड़ाई प्रगट होती थी। बचपन में शीतला के कोप से उसका रूप बिगड़ गया था। एक आंख बैठ गई थी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दूसरी पूरी खुलती थी। चेहरा पतला और शीतला के दागों से भरा था; दाढ़ी गालों पर बहुत थोड़ी और ठुड्ढी के नीचे घनी थी। बांया हाथ और बांई टांग झोला मार गई थी। पर जब वह पीठ पर ढाल डालकर घोड़े पर सवार होता तो यह जान पड़ता था कि विजयी वीर चला आरहा है। उसका सारा शरीर फड़कता था और घोड़े को ऐसा चलाता जैसे उसकी सेना में कोई जवान क्या चलाता होगा।

चालीस बरस राज करके महाराजा रणजीतसिंह मर गये। उनके पीछे उनका बेटा दिलीपसिंह गद्दी पर बैठा। रणजीत सिंह ने अंगरेजों के साथ जो संधि की थी उस पर दृढ़ रहे और कभी सतलज के इसपार न आये। पर दिलीपसिंह और सिक्ख सभा ने यह संधि तोड़ दी और जो देश अंगरेजों की रक्षा में थे उन पर चढ़ाई कर दी। इस पर अंगरेजों से दोबार लड़ाई हुई। दूसरी लड़ाई लार्ड डलहौज़ी के समय मे हुई थी। सिक्ख हार गये और पंजाब अंगरेजी राज में मिला लिया गया।

पंजाब में सुशासन का प्रबंध करने में दो अंगरेजों ने बड़ा नाम पाया। एक हेनरी लारेन्स और दूसरे उनके भाई जान लारेन्स।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लार्ड डलहौज़ी।

पलासी की लड़ाई के सौ बरस पीछे एक बहुत बड़ा अङ्गरेज़ हाकिम हिन्दुस्थान में गवर्नर जनरल होकर आया। यह लार्ड डलहौज़ी थे। क्लाइव के समय से जब अंगरेज पहिले पहिल इस देश मे राज करने लगे थे अब तक कितना अंतर पड़ गया था। पहिले अंगरेज़ निरे व्यापारी थे। उनको चाह भी न थी कि व्यापारी से राजा बनें। वह भारत में अंगरेज़ी माल बेचने और हिन्दुस्थान का माल इंलिस्तान ले जाकर बेचने आये थे। वह सब ईस्ट इंडिया कंपनी के नौकर थे और उसी के लिये धन कमाना चाहते थे। लड़ाई में बहुत रुपया लगता है। कंपनी को लड़ाई करने की कोई अभिलाषा न थी और उनको कोई न छेड़ता तो कभी लड़ाई न करते। सिराजुद्दौला की निठुराई से अंगरेज़ी राज की नेंव पड़ी। सिराजुद्दौला ने अंगरेज़ मरवाडाले इस से अंगरेज़ों ने बंगाले के नवाबों के अधिकार छिन लिये। जब एक बार राज करने लगे तो औरों की चढ़ाई से अपना देश बचाना भी पड़ा। एक बार मरहठों ने अंगरेज़ी राज पर चढ़ाई कर दी उन से लड़ाई हुई और उनका राज भी अंगरेज़ों के आधीन हो गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राज बढ़ा सो बढ़ा रुक कैसे सकता था। धीरे धीरे अंगरेज़ी गवर्मेण्ट भारत सब से प्रबल हो गई अंत को शक्तिमान और न्याययुक्त होने से अंगरेज़ सब के अधीश्वर हो गये।

जब लार्ड डलहौज़ी इस देश में आये तो भारत के अधिकांश पर अंगरेजी अमल्दारी हो चुकी थी। डलहौज़ी को अधूरा काम अच्छा न लगता था। उन्हों ने देखा कि जिन प्रांतों पर अंगरेज़ी अमल्दारी है वहां शांति है और प्रजा प्रसन्न है कोई कोई हिन्दुस्थानी राजा अच्छा शासन नहीं करते। इस विचार से उन्हो ने कई राज अंगरेज़ी अमल्दारी में मिला लिये। इस रीति से अवधकी बादशाही, नागपूर का मरहठा राज और कई और राज अंगरेज़ी शासन में आगये। इस में भी संदेह है कि नये शासन मे पुराने की अपेक्षा लोग अधिक सुख चैन से रहते हैं ?

इस समय में हिन्दूस्थान और दखिन सब मिलकर अंगरेजी सरकार के आधीन थे। लार्ड डलहौज़ी का समय उन्नति का समय था। कुछ दिन पहिले धुये के इंजन बन चुके थे और इंग्लिस्तान मे रेल की सड़कें बनरही थी। योरप में तार का भी प्रचार हो चला था। भारत एक देश हो गया तो वह भी यूरप के देशो की तरह क्यों आगे न बढ़े ? लार्ड डलहौज़ी नें रेलकी सड़कें बनवाईं और तार लगवा दिये ; डाक का प्रबंध सुधार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिया ; शेर शाह के समय में हरकारे चिट्ठियां लेजाते थे; अब चिट्ठियां रेलपर जाने लगी। डाक का महसूल भी इतना घटा दिया गया कि कंगाल भी डाक में चिट्ठी भेज सकता है।

लार्ड डलहौजी से पहिले भारत की वही दशा थी जो हजारों बरस पहिले थीं। भारत के एक कोने के रहने वाले दूसरे कोनेवालों का हाल जानते ही न थे। राजा लोग आपस मे मेल जोल से रहने के बदले लड़ा भिड़ा करते थे। पुराने समय मे यूरप के देशों में भी यही होता था। जब व्यापार बढ़ा तो एक देश दूसरे देश का हाल जानने लगा। ज्यों ज्यों एक देशवासी दूसरे देशवालों से परिचित हुये त्यों त्यों मेल व्यवहार बढ़ता गया और लड़ने की प्रवृत्ति घट गई। जब हम किसी से परिचित हो जाते हैं और उसके मन का भाव समझ जाते है तो हम उससे प्रीति करते हैं। इसी तरह भारत के भिन्न भिन्न भाग के रहनेवाले अब एक दूसरे को समझने लगे हैं। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम चारो ओर व्यापार हो रहा हैं। मदरास के सौदागर अपना माल बंबई भेज रहे हैं। बंबई का माल पंजाब पहुंचता और बंगाले तक जाता है। रेलगाड़ियां सारे भारत मे माल पहुचाती हैं। पहिले यह बात कहां थी। जहां महंगी पड़ती हैं वहां इन्ही रेलगाड़ियों पर अन्न भेजा जाता है। चारों ओर देश जग सा पड़ा है। जो कुछ हो रहा है उसे ध्यानसे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देखने लगा और भारत भी उन्नति का देश हो गया। पुरानी चाल को लड़ाई दंगे का किसी को ध्यान भी न रहा लोग देश की भलाई में ऐसे प्रवृत्त हो गये।

इस उन्नति के लिये हम को उस बड़े बुद्धिमान हाकिम लार्ड डलहौज़ी का गुन मानना चाहिये।

लार्ड डलहौज़ी भारत में आठ बरस रहे। जब तक रहे भारत को उन्नित का उपाय सोचते और उद्योग करते रहे। ठंढे देश से जो लोग यहां आते हैं उन्हें यहां की गरमी बहुत खलती है और क्यों न खले यहां जो पैदा हुये वह भी दुखी रहते हैं। जब लार्ड डलहौज़ी ने अपना काम छोड़ा तो बहुत ही निर्बल हो गये थे। वह इस देश को इतना ही चाहते थे जैसा अपनी जन्मभूमि को। घर लौटते राह में यहां का हाल लिखते गये पर इंगलिस्तान पहुंचते ही उनका काल आगया। इस हकिम ने कैसा आत्मसमर्पण किया। इस ने अपने काम में अपनी जान देदी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिल्ली का अन्तिम घेरा।

लार्ड डलहौज़ी के शासनकाल में बड़े बड़े उलट फेर हुये। इस से भारतवासी बहुत सहम गये। यहां वालों ने तार और रेल का नाम न सुना था; इनको देखते ही घबरा गये और सोचने लगे कि अंगरेज़ इनको क्यों लाये हैं। अंगरेज़ लोग जब से यहां शासन करने लगे थे हिन्दुस्थानी सेना रक्खे हुये थे। इस सेना के सिपाही भी अपने देशी भाइयों की तरह रेल का इंजन देखकर चकराते थे। पहिले किसी की समझ ही में न आया कि भारत में इन चीज़ों का क्या काम है। दैवसंयोग से एक घटना और हो गई। इंगलिस्तान के कारीगर कारतूसों के कागज़ में चरबी लगाते थे। यह कारतूस सिपाहियों को दिये जाते थे। पुरानी चाल की बन्दूकों में कारतूस दांत से काटकर डाले जाते थे। अंगरेज़ी अफ़सर न जानते थे कि इन कारतूसों में गाय की या सुअर की चरबी लगी है। पीछे से यह बात ठीक निकली। अङ्गरेज़ अफ़सरों ने कहा कि तुम को यही कारतूस मिलैंगे। इन्हीं को दांत से काटो। सिपाही समझे कि अङ्गरेज़ हमारा ईमान धर्म बिगाड़ना चाहते हैं। सिपाहियों ने न माना और बिगड़ गये। फिर क्या था। हिन्दुस्थान में कई जगह भयानक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

घटनायें हुईं। लोहू के प्यासे सिपाहियों ने अङ्गरेज़ी अफ़सर मारडाले। कहीं कहीं सिपाहियों को अपने अफ़सरों से इतनी प्रीति थी और उनके साथ इतनी बार अपने जीवन प्राण को जोखम में डाला था कि अपने अङ्गरेज अफ़सरो को मारना उचित न समझा। तो भी बहुत से अङ्गरेज़ स्त्री पुरुष मारे ही गये। एक बाग़ी सरदार नाना साहेब ने ऐसा कठोर काम किया जिस के सुनने से रोयें खड़े हो जाते हैं। यह सब दुर्घटनायें नासमझी से हुईं इनका ब्यौरा लिखने का कुछ काम नहीं। बाग़ियों ने पुराने मुग़ल बादशाहों के वंश में जो बचा था उसे हिन्दुस्थान का बादशाह बना दिया, और हज़ारों बाग़ी दिल्ली को चले गये और शहर का फाटक बन्द कर लिया।

हिन्दुस्थान के कई भागों में अंगरेज़ी सिपाहियों को बलवाइयों ने घेर रक्खा था। और उनका बस चलता तो मार ही डालते। भारत का बड़ा हितैषी सर हेनरी लारेन्स लखनऊ के बेली गारद की रक्षा करता मारा गया। बलवाइयों को परास्त करने के लिये चटपट अंग्रेज़ी सेना ठांवं ठांवं से बुलाई गई और दिल्ली की ओर बढ़ी। यह सब को आशा थी कि दिल्ली टूटने पर बलवा शांत हो जायगा पर उस समय भारत में अंगरेज़ी सेना बहुत थोड़ी थी और बलवाई हज़ारों थे। कुछ दिन पीछे इंग्लिस्तान से और सेना आगई और सर जान

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

निकलसन ने शहर पर धावा मार दिया। कोट में सुरंग लगाकर छेद कर दिया गया और कई दिन

सर हेनरी लारेन्स।

की कड़ी लड़ाई लड़ने पर शहर ले लिया गया। सर जान निकलसन को जो जानता था हिन्दुस्थानी हो या अंगरेज़ उस से प्रीति रखता था। यह वीर शहर में अपनी सेना पहुंचाकर लड़ते लड़ते मारा गया। बलवा भी धीरे धीरे दब गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बलवे के पीछे अंगरेज़ी पार्लीमेण्ट ने भारत का शासन ईस्टइंडिया कंपनी से ले लिया और इंग्लिस्तान की मलका मुअज़्ज़मा महारानी विक्टोरिया भारतेश्वरी हो गईं। उन्हों ने एक घोषणा की जिसमे उन्हों ने प्रतिज्ञा की कि भारतका शासन बहुत अच्छा किया जायगा, भारतवासियों को शासन में अधिकार मिलेगा और किसी के धर्म में छेड़ छाड़ न होगी। महारानी विक्टोरिया के सुवचनों से वह भारतबासियों को बहुत ही प्यारी हो गईं थी। बलवा पट जाने पर मुग़लबादशाह बहादुरशाह बर्म्हा देश भेज दिया गया। इसी के साथ मुग़ल बंश का अंत भी हो गया।

लार्ड रिपन।

(जिसने भारत के नगरों को स्वराज्य दिया)

जिस समय लार्ड रिपन हिन्दुस्थान के वैसराय हुए अफ़ग़ानिस्तान से लड़ाई हो रही थी। इनके शासन के पहिले बरस लड़ाई की चिन्ता रही तौ भी वैसराय भारत की भलाई के लिये अनेक उपाय सोचते रहे। बीर लार्ड राबर्टस क़न्दहार में पहुँच गये, अंगरेज़ी सेना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को अफ़गानों ने बंदकर रक्खा था उसको बचाया और अफ़गानों को शहर से निकाल दिया। इसके कुछही दिन पीछे युद्ध समाप्त हो गया और लार्ड रिपन ने अपना प्रसिद्ध लोकल सेलफ़ गवर्मेण्ट ऐक्ट (स्थानीय स्वराज्य का क़ानून) जारी कर दिया।

लार्ड रिपन के आने से पहिले भारत में कोई जानताभी न था कि स्वराज्य किसे कहते हैं। अगले दिनो में राजा को अपने राज्य में पूरा अधिकार था। मंत्री से लेकर गांव के मुखिया तक उसकी सब आज्ञा मानते थे। कोई उसकी बात टाल न सकता था। वह स्वतंत्र था। भारत के पहिले वाइसराय भी राजाओं की भांति राज करते थे। उनका राज्य स्वतंत्र था।

दो चार सौ बरस पहिले यूरप के भी बादशाह ऐसेही स्वतंत्र रहा करते थे पर इनही दोचार सौ बरस के भीतर बहुत कुछ भेद पड़ गया। देशबासियों को यह इच्छा हुई कि अपने देशके राज काज में हाथ डालें। जब तक उनके राजा अच्छे रहे और लड़ाई झगड़ा न हुआ तब तक प्रजा अपने राजाके शासन से सन्तुष्ट रहती थी। जब राजा बुरे हुए और देश मे झगड़ा बखेड़ा होने लगा और लोगों को अपनी इच्छा से नही बरन अपने राजा की आज्ञा से लड़ाई पर जाना पड़ा तो लोगों मे असनतोष फैलगया कुछ दिन पीछे प्रजा अपने राजा से लड़ बैठी और अंगरेज़ी पार्लामेण्ट महासभा स्थापित की गई। इस महासभा मे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रजा के चुने हुये प्रतिनिधि मेम्बर हुआ करते हैं। और यही सभा कानून बनाती है। जब तक प्रजा अपनी अनुमति न दे लड़ाई नहीं हो सकती। राजा या बादशाह सब के ऊपर रहता है। जब तक बादशाह की मंज़ूरी नहो होती कोई कानून नहीं बन सकता। लार्ड रिपन को यह आशा थी कि भारत में भी किसी दिन एक प्रकारका प्रतिनिधि द्वारा शासन हो जायगा। इसलिये भारतवासियों को पच्छिम देश वालों की शासन की रीति सिखाने के लिये उन्हों ने यह आज्ञा दी कि भारत के शहरों में प्रबंधकारिणी सभायें बनाई जायं और प्रजाको अधिकार रहै कि इनके मेम्बर (सभ्य) चुने। शहरों के शासन में क्या क्या काम हैं? सड़कें नहीं तो गाड़ियां कैसे चलें? पैदल चलने वाले तो ज्यों त्यों चले भी जायं। सड़कों की मरम्मत न हो तो साल ही भर में चौपट हो जायं। सड़कों और गलियों की सफाई भी होनी चाहिये नही तो कूड़ा सड़ेगा और बीमारी फैलेगी। नाले नालियों पर पुल भी बँधने चाहियें, सड़कों और गलियों में रोशनी की भी आवश्यकता है। पानी पीने के कुवों की भी सफाई और मरम्मत होनी चाहिये। प्रजा के बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा का भी प्रबंध करना उचित है और गरीबों को सेंत में दवा भी चाहिये। यह सब काम शहरों और गावों के शासकों का है। और शहरों का शासन ज़िस सभा के द्वारा होता है उसे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

म्युनिसिपल कमेटी कहते हैं। इन सब कामों के लिये रुपये कहाँ से आवें? लार्ड रिपन ने म्युनिसिपल कमेटियों को अधिकार दिया कि नगरवासियों पर टिकस (कर) लगावें। घरों पर टिकस लगाये गये और सड़कों और नावों पर महसूल बांध दिया गया। साधारण की भलाई के लिये रुपया इकट्ठा करने के लिये और भी कई प्रकार के टिकस लगाए गए। पंजाब के शहरों में जो माल बाहर से आता था उस पर चुंगी लगाई गई।

शहरों में म्युनिसिपल कमेटियां शासन करने लगीं। पर जिले के लिये भी शासन की आवश्यकता थी। नही तो बड़ी बड़ी सड़कों की मरम्मत का प्रबंध कौन करता। जिलों मे दवाखाने कैसे बनते। डाक बंगले और सरायें कहां से आतीं। जिले के शासन के लिये जिले में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बने। म्युनिसिपलटियां शहरों का प्रबंध जिस विषय का करतीं हैं उसी विषय का जिले का प्रबंध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड करते हैं। यह भी टिकस लगाते हैं। इनके पास रुपया कम होता है तो इनके सूबे की गवर्मेंट उनको रुपया देती है। इन बोर्डों का चुना हुआ मेम्बर तीन बरस तक रहता है। तीन बरस पीछे लोग चाहें तो उसी को फिर चुन ले या किसी दूसरे को मेम्बर बना दे।

स्वराज की यह उत्तम रीति आजकल प्रचलित है। तीन तीन बरस पीछे मेम्बरों का चुनाव होता है। जो बड़ा सुधार लार्ड रिपन ने स्वराज्य देते समय सोच रक्खा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था वह अब स्पष्टरूप से देख पड़ा। लार्ड मिंटो ने जो १९०४ से १९०९ तक वैसराय रहे नया इंडियन कौंसिल्स ऐक्ट बनाकर भारतवासियों के साथ बहुत बड़ा उपकार किया। और उनको यह अधिकार दिया कि अपने सूबे की कानून बनानेवाली कौंसिलों और वैसराय की कौंसिलों में अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजें।

लार्ड रिपन भारत में चारही बरस रहे पर इस थोड़े ही काल में भारतवासी उनके साथ बड़ी प्रीति करने लगे और उनका बड़ा उपकार मानने लगे थे। अब भी लोग कहते हैं कि भारत का ऐसा सच्चा हितैषी दूसरा वैसराय नहीं आया।

अंग्रेज़ी गवर्मेंगट।

पलासी की लड़ाई को डेढ़ सौ बरस हो गये। उसी दिन भारत में अंग्रेज़ीराज्य की नेंव पड़ी थी। आज सारा भारत राजराजेश्वर जार्ज पंचम के आधीन है। इस डेढ़ सौ बरस में कितने ही हाकिम इंग्लिस्तान से हिन्दुस्थान का शासन करने आये। जितने बड़े हाकिम थे सब ने शासन की रीति सुधारने का उपाय किया। सब को यही चिन्ता रही कि गवर्मेंगट पहिले से अच्छी हो जाय। सब से पहिले

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वारन हेस्टिंगज़ ने कलक्टर मुकर्रर किया। एक कलक्टर एक ज़िले की मालगुज़ारी वसूल करता था। कलक्टरों के ऊपर कमिश्नर होते थे जो कई ज़िलों के हाकिम रहते थे। कमिश्नरों के ऊपर गवर्नर जनरल था जिसकी सहायता के लिये एक कौंसिल (सभा) रहती थी। कलक्टर लोग मालगुज़ारी तहसील करते ही थे पर जजों का भी काम करते थे। कलक्टर के फ़ैसले से किसी को सन्तोष न हो तो उसे अपील करने का अख्तियार था जिसका अभिप्राय यह है कि वह ऊपर की अदालत में अपना मुकदमा ले जाता और वह अदालत कलक्टर के फ़ैसले को रद कर देती या बदल दे सकती थी। इस काम के लिये कलकत्ते में अपील की दो अदालतें स्थापित कर दी गई थीं।

वारन हेस्टिंगज़ के पीछे जो हाकिम आये उनके समय में अंगरेज़ीराज बढ़ता गया। पहिले नए और पुराने दोनो भागों मे अंग्रेज़ हाकिम रक्खे जाते थे। पीछे हिन्दुस्थानियों को भी जगहें मिलने लगीं। लार्ड विलियम वेंटिंक ने बड़ा भारी काम यह किया कि भारत के शासन में भारत के रहने वालों को भी बहुत कुछ अधिकार दिया। उसी समय भारत में "रिप्रिज़ेन्टेटिव गवर्मेण्ट" अर्थात् प्रतिनिधि द्वारा शासन का प्रचार किया गया। कदाचित तुम इसे न समझते हो तो हम तुम्हें बताये देते हैं। किसी किसी स्कूल मे क्रिकेट

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

टीम होती है। इस टीम (मंडली) का शासन कौन करता है ? तुम कहो गे कैप्टन। कैप्टन कैसे बना ? किसने बनाया ? दरजे के सब लड़के इकट्ठा हुए और सब की यह संमति हुई कि जो लड़का सब से अच्छा खिलाड़ी हो और कैप्टन बनने की योग्यता रखता हो वही कैप्टन बनाया जाय। जब दूसरे दर्जे के साथ बाज़ी बदती है तो टीम कौन बनाता है लड़कों की एक कमेटी खेलनेवाले चुन लेते हैं। कमेटी कैसे बनती है। दरजे के लड़कों ने मिलकर कुछ लड़के चुन लिये जिनको उन्हों ने कमेटी का मेम्बर होने के योग्य समझा। एक ने कहा कि वह लड़का मेम्बर हो दूसरा बोला हो हम भी इसी को मेम्बर करना चाहते हैं। दरजे भरने वैसे ही कई मेम्बर चुन लिये इस रीति से एक कमेटी चुनी गई जो उस दर्जे की प्रतिनिधि हुई। कोई काम आपड़ा तो उसका करना सारे दर्जेके करने का काम न था ; थोड़े लड़कों के करनेका काम था। उस काम को दर्जे भर की ओर से थोड़े लड़के करते हैं। यह लड़के दरजे के प्रति- निधि स्वरूप हैं। यह लड़के जो कुछ करें सारे दरजे का किया हुआ माना जायगा। खेल खेलें तो यह कहेंगे कि वह दरजा खेल रहा है। यह क्रिकेट के खेल में प्रतिनिधि द्वारा शासन है। ऐसे ही देश का शासन किया जाता है। इस में खेलाड़ियों के बदले देश की रक्षा करने के लिये सिपाही चुने जाते, मुक़दमा फ़ैसल करने को जज़ रक्खे जाते,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मालगुज़ारी तहसील की जाती, रेल की सड़कें बनतीं, डाक का प्रबंध होता और जिस प्रजा की यह प्रतिनिधि है उसकी भलाई के लिये सैकड़ों काम होते हैं।

लार्ड रिपन के शासन काल में भारत का "स्वराज्य का क़ानून" बनाया गया। इस क़ानून का अभिप्राय यह था कि भारतवासियों को प्रतिनिधि द्वारा शासन सिखादे। उनको यह आशा थी कि जब लोग इसे समझ जायंगे तो सारे भारत के शासन मे यही रीति चलादी जायगी। लार्ड मिंटो के समय इस रीति में और भी वृद्धि हुई। आजकल भारत का एक प्रकार का प्रतिनिधि द्वारा शासन हो रहा है। कानून सभाओं मे बनते हैं और इन सभाओं के बहुत से मेम्बर चुने हुये होते हैं। इससे इन सभाओं को हम प्रतिनिधि सभा कह सकते हैं।

समय समय पर भारत की गवर्मेण्ट में बहुत से अदल बदल हुये और पुरानी रीति सुधारी गई। जंगल के महकमे के अफ़सरों को यह हुक्म है कि जंगल के जो पेड़ काटे जांय उनकी जगह नये पेड़ लगवा दिये जांय। इस से अब हमको डरना न चाहिये कि एकदिन बन कट जांयगे और लकड़ी न मिलैगी। हिन्दूस्थानी पुलिस को उचित काम में लगाने के लिये पुलिस के बड़े अफ़सर रक्खे जाते हैं। पुलिस का काम है कि अपराध न होने पावे और जो अपराध करे उसे दंड दिलावे। भारत में शिक्षा का प्रचार करने के लिये सरिश्ते तालीम (शिक्षा विभाग)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्थापित किया गया है और बड़े बड़े अफ़सर रक्खे गये हैं जिन के ऊपर भारत की शिक्षा का भार है। इन के सुप्रबंध में पाठशालाओं की दशा दिन दिन सुधरती जाती है। सड़क और सरकारी इमारतों के लिये अफ़सर रक्खे गये हैं। इनका काम यह है कि नदियों के ऊपर पुल बंधवायें, आबपाशी (सिंचाई) के लिए नहरों का प्रबंध करें, रेल बनवायें और नये सरकारी मकान बनायें और पुरानी की देखभाल करें। इस महकमे को अंगरेज़ी में पब्लिक वर्कस डिपार्टमेण्ट और फ़ारसी में तामीरात का सीग़ा कहते हैं। जजों और कलक्टरों के नामतो तुमने सुने ही हैं। हिन्दुस्थानी सेना भी है जिसपर अंगरेज़ी अफ़सर कमान करते हैं और जो अवसर पड़ने पर हिन्दुस्थान पर चढ़ाई करने वालों को मारकर भगा देगी। भिन्न भिन्न काम करनेवाले शासन के भिन्न भिन्न विभागों के (महकमों) सेवक है। कुछ विभाग नीचे लिखे जाते हैं "सिविल सरविस जिसमे देश के शासन के अधि कारी जैसे जज और कलक्टर हैं, जंगलात का महकमा, पुलिस, शिक्षा विभाग, तामीरात का महकमा और सेना।

यह ही महकमे हर सूबे का शासन करते हैं और इनके ऊपर गवर्मेण्ट रहती है। एक हाते की गवर्मेण्ट के अफ़सर को गवर्नर और हर सूबे के प्रधान शासक को लवटिनेण्ट गवर्नर कहते हैं। सब हातों और सूबों के ऊपर गवर्नर जनरल होता है जिसे वाइसराय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भी कहते हैं। वाइसराय का अर्थ बादशाह का प्रतिनिधि है।

हर एक गवर्नर और लिवटेनेण्ट गवर्नर की एक लेजिस्लेटिव कौंसिल सभा है जो देशवासियों की भलाई के लिये क़ायदे क़ानून बनाने की सलाह देती है। लार्ड मिंटो के क़ानून के अनुसार भारतवासियों और विशेषकर जिमीदारों को इन कौंसिलों के लिये मेम्बर चुनने का अधिकार मिल गया है। इससे पढ़े लिखे भारतवासी सब अपने देश के शासन को बड़े चाव से देख सकते और उसकी रीति समझ सकते हैं। वह कौंसिलों की कारवांई समाचारपत्रों में देख सकते हैं और एक एक मेम्बर (सभासद) की वक्तृता पढ़ सकते और समझ सकते हैं कि कौन उनके मन की बात कह रहा है। लड़कों को भी चाहिये कि समाचारपत्र पढ़ाकरें जिससे वह यह जान सकें कि भारत के और भागों में क्या हो रहा है। हम लोगों को उचित है कि अपने देश के क़ानून बनाने को बड़े ध्यान से देखा करें और ऐसे यत्न करें कि अच्छे से अच्छे क़ानून बनें। क्योंकि सब यही चाहते हैं कि हम सदा उन्नति करते रहें, जिनको सहायता की आवश्यकता है उनको मदद दें और जो हमारे हानिकारक है उनको रोकें।

भारत में सब से ऊंची कौंसिल गवर्नर जनरल की लेजिस्लेटिव कौंसिल है। इस कौंसिल मे वह क़ानून

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बनते है जो सारे भारतराज्य में प्रचलित किये जाते है।

सूबों की कौंसिलें वह ही क़ानून बनाती हैं जो उनके विशेष सूबे से संबंध रखते हैं।

इतना कहने पर हमारे गवर्मेण्ट की शासन रीति कुछ कुछ तुम्हारी समझ में आगई होगी। यह तो तुम जानते ही हो कि कोई काम बिना रूपये के नही हो सकता। सरकारी नौंकरों को तनख़ाह मिलनी ही चाहिये। रुपया नहो तो सड़कें कैसे बनें। रुपये के बिना कोई काम चल नही सकता। इसी लिये माल-गुज़ारी ली जाती है। हम सब थोड़ा थोड़ा गवर्मेण्ट का ख़रचा देते हैं। जो लोग खेती करते हैं वह अपने खेतों की उपज के कुछ अंश का दाम सरकार को देते हैं जैसा कि बन्दोबस्त के हाकिम ने बांध देता है।

भारत में सरकार की कुछ रेलें भी है। इन रेलों से जो लाभ होता है वह भी देश की आमदनी में जुड़ जाता है। हम जब जब रेल पर सवार होते हैं तब तब सरकारी आमदनी में थोड़ा बहुत धन देते हैं डाकख़ाना और तार के महकमों का लाभ भी इसी आमदनी मे जुड़ जाता है। जब जब चिट्ठी डालते या तार भेजते हैं तब तब उसी आमदनी को बढ़ाते हैं। आजकल की रीति में और पुरानी बादशाही में कितना अन्तर है। पहिले बादशाह सारी मालगुज़ारी आप खर्च कर डालता था। किसी बादशाह ने आबपाशी या देश हित के और किसी काम मे कुछ रुपया लगा दिया तो उसकी बड़ाई होने लगी। सब ने कहा बहुत अच्छे हैं बड़े नेक हैं। अंगरेजी राज्य मे एक एक पैसा देश के कामों मे लग-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाता है। अब हम लोग ऐसे हो हैं जैसे कोई बड़ा परिवार हो जिसमे एक एक आदमी सब की भलाई के लिये कुछ न कुछ करता हो है।

कथा समाप्ति।

पिछली कथा मे तुम को अंगरेज़ी गवर्मेंगट का कुछ ब्यौरा बताया गया और उन बुद्धिमान और तजरुबेकार हाकिमों का हाल सुनाया गया जो इंग्लिस्तान से आये थे और हमारे देश के हर्ता कर्ता विधाता थे और जिन्हों ने सरकारी नौकरों से भी उचित काम कराये। वाइसराय और उनकी सभा को इस शासन का सिर कहना चाहिये और गवर्मेंगट के जो भिन्न भिन्न महकमे हैं वह इस शासन के हाथ हैं। श्री महाराणी विक्टोरिया ने जो प्रतिज्ञा की थी उसी के अनुसार हमारे पिछले वाइसराय लार्ड मिंटो और सम्राट के भारतीय राजमंत्री लार्ड मारले ने शासनप्रणाली मे संशोधन कर दिया और राज्यप्रवंध में हम लोगों को पहिले से अधिक अधिकार दिया।

संशोधन और सुधार हो ही रहे थे कि हमारे परम बुद्धिमान और उदार सम्राट एडवर्ड सप्तम का स्वर्गवास हो गया और महाराणी विक्टोरिया के पोते महाराज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सम्राट जार्ज पञ्चम सिंहासन पर बिराजे। सम्राट जार्ज को भारत से बड़ी प्रीति है इस कारण इंग्लिस्तान में

राज्याभिषेक के पीछे उन्हों ने निश्चय किया कि भारत को

भी सुध लेना और उसका मान रखना चाहिये और भारतवासी भी उनका राज्याभिषेक देखें। यह विचारकर हमारे परम उदार सम्राट अपनी सम्राज्ञी श्रीमती महाराणी मेरी के साथ हज़ारों कोस की यात्रा करके भारत में आये और दिल्ली राजधानी में बड़ी धूमधाम से दर्बार किया।

दिल्ली के दर्बार का हाल तो तुमने सुनाही होगा। इस दर्बार में हमारे सम्राट ने भारत के राजा महाराजा नवाबों और लाखों आदमियो के सामने जो उनको अपनी आधीनता देखाने आये थे अपने राज्याभिषेक की सूचना दी। इस से हम लोगों को अनुभव हो गया कि हमारे सम्राट को हमारी भलाई की कितनी चिन्ता है और हम ने जान लिया कि सम्राट और उनकी अंगरेज़ प्रजा यह समझती है कि भारत भी ब्रटिश साम्राज्य का एक उत्तम अंश है। इसी दर्बार में सम्राट ने यह भी आज्ञा दी कि आज से दिल्ली भारत की राजधानी होगी। हमारे वाइसराय लार्ड हार्डिंग ने यह सूचना दी कि हम भारत में शिक्षा और सफ़ाई की उन्नति करना चाहते हैं। हम सब समझते हैं कि यह कैसा उदार और उत्तम काम है और हम को उचित है कि जहां तक हो सके उनकी सहायता करें। सफ़ाई मे उनकी मदद करना हमारे बस में बहुत कुछ है। ऐसे ऐसे चतुर डाक्टर हैं जो रोग को जड़ से उखाड़ सकते है और उन रोगों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से बचने का उपाय बता सकते हैं। हिन्दुस्थान में सब से बढ़कर दुखदायी रोग जूड़ी बुखार है। यह रोग एक तरह के बिष से फैलता है जिसे अंगरेजी मे मलेरिया कहते हैं। मलेरिया बिष को एक आदमी के बदन से दूसरे के बदन मे मच्छड़ पहुंचाते हैं। मच्छड़ रोगी को काटते हैं और फिर अपना मलेरिया बिष भरा डंक तन्दुरुस्त आदमी के बदन मे चुभादेते हैं। इस से उसकी देह मे भी मलेरिया बिष पहुंच जाता है। मच्छड़ पानी भरे गड्ढों और ओदी धरती में बहुत होते हैं। जो हम अपने डाक्टरों की अनुमति से बेकाम के गड्ढे भर दें और पानी निकाल दें तो मच्छड़ों का पैदा होना ही बन्द हो जाय और इस रोग से हमको छुटकारा मिल जाय। यही एक रीति है जिस से हम वाइसराय और उनकी गवर्मेण्ट की सहायता कर सकते हैं। जब मलेरिया से हमे छुटकारा मिल जायगा और हम तन्दुरुस्त हो कर बली हो जायगें और अपनी उन्नति के काम करने लगेंगे तब हम जानेंगे कि मलेरिया कैसा बुरा रोग है। अब भी हम को अपनी उस उन्नति और उन भले दिनों का आसरा करना चाहिये जिनकी आशा हमको हमारे राजराजेश्वर ने दिलाई थी जब उन्हों ने हमको अपने दर्शनों से कृतार्थ किया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust